RNI No. UPHIN/2011/40224
पंजीकृत सं.-ए स.ए स.पी./ए ल.डब्लू./ए न.पी-341/2021-2023

हिन्दी मासिक पत्रिका
मई - 2023
मूल्य: 20/- रुपये मात्र

प्रकृति मेल

जीवन का वैज्ञानिक मार्ग

नोटः यह पत्रिका प्रत्येक माह की 6 तारीख को मुद्रित होकर उसी माह की 8 तारीख को डाक द्वारा भेजा जाता है।

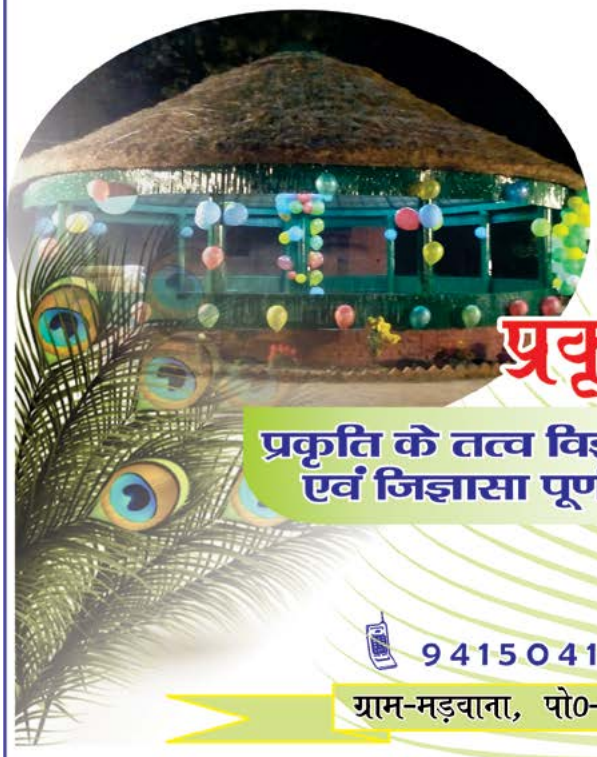

प्रकृति आश्रम

प्रकृति के तत्व विज्ञान, जीवन के मूल रहस्य
एवं जिज्ञासा पूर्ण करने की प्रकृति स्थली

'अशोक मानव'

9415041794, 9807636072

ग्राम-मड़वाना, पो0-रघुनाथपुर, निकट सैदापुर, लखनऊ।

कोमल

बिल्डिंग मैटेरियल

सत्य प्रकाश मिश्रा (राहुल मिश्रा)

बिक्रेता • बालू • मौरंग • सीमेंन्ट • गिट्टी

मछली शहर, जौनपुर

मो0 9792512188

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:12 अंक : 11 | मई-2023

संरक्षक
डा० उत्तम प्रकाश मानव
संपादक
अशोक मानव
कार्यकारी संपादक
उमेश
विधि सलाहकार
नवनीत कुमार वर्मा
मुख्य संवाददाता
आशीष त्रिपाठी
वरिष्ठ संवाददाता
अरविन्द त्रिपाठी
दिल्ली संवाददाता
मनोज
पुर्वांचल हेड
श्री प्रकाश मिश्रा
संवाददाता
सूर्यमणि यादव, अनुराग, कामेश, सुनील प्रदीप, गौरव पंत, अभिषेक पंत, हेमंत पाण्डेय, प्रशांत द्विवेदी, सुमनलता यादव, मानवेन्द्र त्रिपाठी, अक्षय कुमार, अभय सिंह
ग्राफिक्स, डिजाइन एवं तकनीकि
संजय यादव
कैमरा मैन
धर्मेन्द्र त्रिपाठी
प्रबंध, विज्ञापन एवं सदस्यता
संपर्क 8423330911, 9598911575

पंजीकरण कार्यालय
सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश– 226022
प्रधान कार्यालय
18/A ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली क्रॉसिंग, फैजाबाद रोड, लखनऊ – 226016

इस पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों और विचारों के लिए उनका लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा। विज्ञापनों में किये गये दावों की जाँच–पड़ताल स्वयं करें। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन होगा।

नोट: इस पत्रिका के समस्त सहभागी पदाधिकारीगण पत्रिका के प्रारम्भ के अंक से ही बिना किसी मासिक सहयोग धनराशि या वृत्तिका के स्वेक्षा से बिना किसी दबाव के समय दान के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वामी अशोक मानव द्वारा सूर्या प्रिंटिंग प्रेस एण्ड पब्लिकेशन, खसरा संख्या 872, ग्राम मड़वाना, जनपद–लखनऊ, उ. प्र. पिन-226104 से मुद्रित कराकर सूर्या आश्रम, मानव नगर, कल्याणपुर, लखनऊ, उ. प्र. से प्रकाशित किया।

संपादक – अशोक मानव

www.prakritimail.com
editor.prakritimail@gmail.com

अंदर के पन्नों पर

P 10 ध्यान एवं तपो दिवस

P 13 विश्व सापेक्ष भारत

P 17 (दृघकाल) - जीवन सार

P 22 जीवन शेष-ईंधन मुश्क-विनाशक (शेष नज़र)

P 25 बस इतने के धनी

P 35 उस पार न जाने क्या होगा ?

P 41 i5, i7 और i9 में अंतर

P 44 झील: जहां मन्नत पूरी होने पर फेंका जाता है सोना-चांदी

P 54 जिज्ञासा और लालसा

P 32 **प्रकृति विज्ञान**

जीवन का वैज्ञानिक मार्ग

'हर जीव पदार्थ अपने मृदा की प्रवृति के गंधीय विज्ञान के दुर्ग में यात्रा करता है जो हर कोई हर किसी से भिन्न होता है इसलिए हर कोई अपने स्वाभाविक गंधीय तरंग मिलान से अपना मार्ग स्वयं बनाते हुए अपनी यात्रा पूर्ण करता है इसी विज्ञान के कारण हर किसी का मार्ग अलग-अलग होता है।'

मन

अशोक मानव

मन - म - मस्तिष्क , न - नजर , अर्थात मस्तिष्क की नजर।

'मन' मस्तिष्क की नजर से उत्पन्न होने वाले प्रकाश पुंज का नाम है। ''आत्मिक रचना के गुणात्मक क्रमिक विकास से दिल धड़कता है। जिससे निकलने वाली तरंग तीसरी आंखों को कंपित करती है। जिससे प्रकाश पैदा होता है। उसी प्रकाश को 'मन' कहते हैं।'' मन सूक्ष्म प्रकाश है जो सूक्ष्म से सूक्ष्म को दिखाता है। जिसका एहसास शरीर की ज्ञानेंद्रियां करती हैं। मन भटका आता नहीं है भटकने की क्रिया व्यक्ति की चाहत से होती है। मन तो भटके हुए मुसाफिर को सही मार्ग दिखाता है। मन प्रकाश होने के कारण उत्पन्न होने वाली इच्छा को देख कर उसे मार्ग दिखाता है। मन रूपी प्रकाश जब इस विषय पर पड़ता है तो उसके अंदर तक जाता है। जिससे उसका गुण हवा बनकर निकलता है जिसे शरीर की ज्ञानेंद्र खींचकर एहसास करती है। मन की डोर इच्छा से बंधी होती है। इसलिए इच्छा बदलते ही वह उस इच्छा पर पहुंच जाता है। इसलिए जब तक पहली इच्छा की पूरी जानकारी ना हो जाए तब तक उसे बदलना नहीं चाहिए। मन दिल की धड़कन से उत्पन्न होने वाला प्रकाश है। इसलिए कभी रुकता नहीं है। जब विचार चल रहा होता है उसमें होता है, जब इच्छा पैदा होती है तो उसे देखता है और जब व्यक्ति सो जाता है तो इच्छित विषय के लिए मार्ग तैयार करता है। मन एक प्रकाशीय शक्ति है। मन देखने के साथ विषयक पूरा करने के लिए प्रकाश छोड़ता है। जिससे विषय का निर्माण होता है। पर इसे विषय पर अधिक से अधिक समय तक केंद्रित करना चाहिए। ध्यान के समय इसे रोकने की बात की जाती है पर यह कभी रुकता नहीं है। इसे सिर्फ केंद्रित करना चाहिए। केंद्रित करने से यह प्राकृतिक गति से विषय का भेदन करता है। उसकी जानकारी देता है और ऊर्जा उत्पन्न कर उसके गुण को शरीर को प्रेषित करता है। जिसका ध्यान किया जाता है उसका गुण शरीर में आने लगता है। विषय बदलते ही मन नए विषय पर चला जाता है। जब व्यक्ति विषय में व्यथित होकर उलझ जाता है तो मन अपने प्रकाश से व्यथित करने वाली ऊर्जा को खत्म करके उचित मार्ग पर लाकर सामान्य बनाता है। मन सदैव सक्रिय रहकर शरीर में उत्पन्न होने वाले विषय की जानकारी देता रहता है।

मन शरीर के अंदर का सूर्य है जो विषय को ऊर्जावान बनाकर एक प्रकाश छोड़ देता है। जिससे उस विषय का निर्माण होता है। जब शरीर में विचार चल रहा होता है तब मन अपने प्रकाश से सक्रिय कर बाहर ले जाता है। उसे क्रियाशील

" मन सूर्य दृष्टि की आन्तरिक नजर है जो अपने भूगोल की आवश्यकता के छिपे हुए गुणों को खोजकर तरंगीय मिलान से अपनी यात्रा को पूरा करता है। "

बनाता है और उसके निर्माण के लिए जलवायु बनाकर उसे पूरा कराता है। विषय शरीर का जल तत्व होता है और मन उसका प्रकाश तत्व होता है। विषय के बार-बार बदलते रहने से प्रकाश से ज्यादा देर तक रुक नहीं पाता है। जिसके कारण से विषय पूरा नहीं हो पाता है। इसलिए विषय कम बनाएं और उसकी गति प्राकृतिक रखें। ऐसा करने से मन प्रकाश उसमें रुक पाता है और विषय पूरा होता है। विचार की गति जल प्राकृतिक हो जाती है तो भावना में परिवर्तित हो जाती है। जिसे मन का प्रकाश ऊर्जावान बना देता है। जिसका एहसास शरीर करने लगता है। एहसास के बाद उस गुण की उर्जा मन प्रकाश के साथ बाहर निकल जाती है। जो विषय को पूरा करने के लिए जलवायु बनाकर एहसासित विषय के बीज को पैदा करती है जिससे मन का प्रकाश जी व प्रकाश बनकर उसका स्वाभाविक विकास करके उसका प्रतिफल देता है। शरीर में पैदा होने वाली हर इच्छा मन के प्रकाश से पूरी होती है। शरीर में जिस पदार्थ की जरूरत होती है उसे खाने की इच्छा पैदा होती है। उसे प्राप्त करने का मार्ग मन का प्रकाश ही दिखाता है और उसे खा लेने के बाद उसे पचाकर गुण अलग करके यथा स्थान पहुंचाने का कार्य मन प्रकाश ही करता है। शरीर में जो रोग प्रतिरोधी जीवाणु बनते हैं उनका निर्माण मन से निकलने वाले प्रकाश से ही होता है। शरीर में कोई रोग हो या अन्य कोई परेशानी उसके ठीक होने का सकारात्मक विचार रखने से मन का प्रकाश उसे खत्म करने के लिए जीवाणु बनाने लगता है जो उस समस्या को खत्म कर देता है। मन का प्रकाश सकारात्मक सोच बनाए रखने पर समस्या बढ़ाने वाले जीवाणु को खत्म करने का भी कार्य करता है। शरीर में कोशिका का निर्माण मन के प्रकाश से ही होता है। भविष्य में किन विषयों की आवश्यकता होगी या किस का सामना करना पड़ेगा, इसकी जानकारी मन को होती है। इसलिए उस समय तक जिससे उस को खत्म किया जा सकता है उसका निर्माण मन का प्रकाश कर देता है।

मन कभी रुकता नहीं जब व्यक्ति तेज सोचता है तो तेज चलता है। जब धीमे सोचता है तो उसकी गति धीमी हो जाती है और जब व्यक्ति एक विषय पर रुक जाता है तो मन प्राकृतिक गति से उसका भेदन करते हुए आगे बढ़ता है। जब व्यक्ति सो जाता है तब मन सोचे गए विषयों के सूक्ष्म स्वरूप को देखते समय उस विषय की रुकावट की ऊर्जा को खत्म कर विषय को आगे बढ़ाने की क्रिया करता है। कभी-कभी यह दृश्य स्वप्न में दिखाई पड़ जाता है। सोते समय मन शरीर के अंदर उत्पन्न होने वाले सभी विषय की रुकावट दूर कर उसे मार्ग देकर निर्माण करने का प्रकाश छोड़कर शरीर की थकान दूर कर देता है। जागते समय से ज्यादा अच्छा कार्य मन सोते समय करता है। अपने इष्ट का ध्यान करते समय मन ईस्ट की ऊर्जा लेकर सोने की तरह ही जीवन से संबंधित विषयों को देखने लगता है और बाधा पहुंचाने वाले विषयों को खत्म करने के लिए आकृति स्वरूप प्रकाश बनाकर अस्त्र-शस्त्र का निर्माण करके उसे खत्म करता है।

मन इच्छित विषय के लिए कार्य करता है। इसलिए इच्छा सकारात्मक होने से निर्माण का कार्य होता है। जो प्रकृति में अच्छे स्वभाव को बढ़ाता है। इच्छा परिवर्तनशील होने पर मन से निकलने वाला प्रकाश कई गुणों का विकास करता है। जिसमें विपरीत गुण भी पैदा हो जाते हैं जो आपस में टकराते हैं और विषय को नहीं पूरा होने देते हैं इससे शरीर में भी परेशानी होती है। इसलिए इच्छा कम से कम बनानी चाहिए और विपरीत इच्छा तो पैदा ही नहीं होने देना चाहिए। ऐसा करने से मन निर्बाध रूप से कार्य पूरा कर पाता है। इच्छा तेज नहीं चलानी चाहिए। इसकी गति प्राकृतिक रखनी चाहिए। ऐसा करने से मन शक्तिशाली प्रकाश बन पाता है जो विषय को पूरा कर लेता है। आप अपने मन से अपने मन को पहचाने। इसी शुभकामना के साथ।

पाठकनामा

आदरणीय संपादक महोदय जी ,

(प्रकृति मेल मासिक)

प्रकृति मेल मासिक पत्रिका का अप्रैल २०२* का अंक मिला जिसके लिए धन्यवाद । संपादक की कलम से स्तंभ में गुब्बारा शीर्षक से प्रकाशित संपादकीय पढा । बडा ही सारगर्भित , प्रेरणादायक , शिक्षाप्रद व जीवन में आत्मसात करने वाला लगा । इतना ही नहीं आपने गुब्बारा शीर्षक के नीचे गुब्बारा को जिस तरह से परिभाषित किया - 'गुणात्मक व्यंजन द्वारा बनायी गयी, बात(हवा) का रास्ता ' वह भी प्रेरणादायक लगा । इसके लिए आपको सहृदय धन्यवाद व कोटि कोटि प्रणाम

प्रकृति मेल में प्रकाशित सभी आलेख , कहानी व कविताएं बहुत ही पसंद आई । ऐसा लगा मानों समुद्र मंथन कर अंक तैयार किया गया । संपादक मंडल को एक बार पुनः कोटि - कोटि नमन् ।

भवदीय

देवकी नंदन पंत

सभी पाठकगण से अनुरोध है कि आप अपने विचार अपने लेख हमें निम्न पते पर भेज सकते हैं–
A/18 ब्रह्मपुरी, निकट जुगौली रेलवे क्रॉसिंग, रविन्द्र पल्ली फैजाबाद रोड, लखनऊ–226016
आप हमें अपने विचार निम्न ई–मेल पर भेज सकते हैं
info@prakritimail.com / editor.prakritimail@gmail.com
Contact: 980 7636 072, 737 649 5194

''हमारी जीभ से हमेशा भारत के लिए अच्छा निकलना चाहिए, चाहे हम दुनिया के किसी भी कोने में जाएं।''

जगदीप धनखड़

''समाजसेवा कोई प्रतिस्पर्धा का विषय नहीं है।''

मोहन भागवत

''भारतीय समाज लोकतंत्र की अपनी शैशव अवस्था पार कर अपनी वैचारिक और सैद्धांतिक शताब्दी वर्ष की ओर बढ़ रहा है।''

अच्युतानंद मिश्र

''युवाओं में वे संबंध अधिक जगह बना रहे है, जहां जीवन में किसी तरह की जिम्मेदारी न हो।''

क्षमा शर्मा

''चीन ने अपने यहां के जितने लोगों को गरीबी से बाहर निकाला है, उतना अब तक के इतिहास में किसी दूसरे देश ने नहीं निकाला।''

निकोलस क्रिस्टॉफ

''इतिहास के दौरान फैशन किसी भी समाज में परिवर्तन का मानचित्रण करने में एक प्रभावी उपकरण साबित हुआ है।''

बबीता भंडारी

न्याय
तारीख
माननीय
आम
Manav

प्रकृति मे विस्तार स्वआधारित

गौरव पंत

प्रकृति में हर विस्तार स्वआधारित होता है। जिसका जैसा गुण होगा वह वैसा ही विस्तार करेगा। इसमें किसी भी प्रकार का कोई बाह्य हस्तक्षेप होता ही नहीं। मानवीय परिभाषा हमेशा प्रकृति के इस विस्तार पर प्रश्नचिन्ह बनाती रही। तरह-तरह की व्यक्तिगत परिभाषा के अनुसार।

प्रकृति मे विस्तार हर किसी कण का स्वआधारित होता है। हर कण अपना विस्तार अपनी रासायनिकता के अनुसार करता है। प्रकृति मे ना कुछ सही ,ना कुछ गलत होता है। प्रकृति मे हर अवस्था सूक्ष्मता के साथ रासायनिक मिलान करती है और अपना विस्तार करती है जो स्वआधारित होता है। मानव ही प्रकृति का ऐसा जीव है जो अपनी यात्रा तो प्रकृति के अनुरूप पूरी कर रहा है किंतु उसमें भी तरह-तरह का संदेह बनाए हुए हैं।जबकि प्रकृति में मानव को छोड़कर अन्य सजीव निर्जीव इस यात्रा को कितनी सरलता से पूरी कर रहे हैं। हर किसी का विस्तार उसका स्वआधार होता है जिसके पास जितना ईंधन होता है।वह अपना उतना विस्तार करता है। हर कण एक रासायनिक यात्रा को कर रहा है जो अपने ईंधन के अनुसार अपनी बाहय परिधि का निर्माण करता है। उसी से उसका भौगोलिक निर्माण होता है। प्रकृति में हर कण की अपनी स्वगुणात्मकता है जो स्वआधारित है। किसी की यात्रा में किसी का कोई हस्तक्षेप नहीं होता। प्रकृति में हर कण अपना स्वविस्तार स्वआधार से कर चुका है। हर अवस्था का ईंधन पूर्ण परिपक्व हो चुका है विस्तार का कोई बाहय जनक नहीं। स्वआधारित हर निर्माण है।

हर विस्तार स्वआधारित करती प्रकृति।
ना विकलांग किसी को बनाती प्रकृति।
हस्तक्षेप किसी का किसी में हुआ ही नहीं।
हर किसी को उसके स्वगुण अनुसार सहज यात्रा कराती प्रकृति।
मानव ही ना समझा विस्तार प्रकृति का।
मानव ही ना समझा स्वआधार प्रकृति का।
हर अवस्था अपना मिलान करती गयी और परिपक्व हो अनंतीय अंत में शामिल हो गयी।
ना जाना कोई विज्ञान प्रकृति का।
अशोक हो रहा हर आधार प्रकृति का।

ध्यान एवं तपो दिवस

कामेश

बुद्ध पूर्णिमा धर्म के साथ ही संस्कृति का भी महत्वपूर्ण त्योहार है। इस दिन लोग अपने परिवार और मित्रों के साथ मिठाई खाते हैं और अपने घरों को सजाते हैं। इस त्योहार के दिन लोग दान-धर्म भी करते हैं जो बुद्ध की सीख के अनुसार जीवन में उपयोगी होता है। अंत में, हम कह सकते हैं कि बुद्ध पूर्णिमा धर्म, संस्कृति और शांति का त्योहार है। इस दिन लोग बुद्ध की शिक्षाओं को याद करते हुए धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा को दिखाते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण त्यौहार है जो बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा पूरी दुनिया में मनाया जाता है। इस त्यौहार का महत्व बुद्ध के जन्म, बोधि और महापरिनिर्वाण को स्मरण करने के लिए होता है। बुद्ध पूर्णिमा का त्योहार पूर्णिमा तिथि को मनाया जाता है। बुद्ध पूर्णिमा का त्यौहार भारत के सभी भागों में मनाया जाता है और इस दिन बौद्ध मंदिरों में भक्तों की भीड़ उमड़ जाती है। लोग धार्मिक संगत में एक साथ बैठकर प्रार्थना और ध्यान करते हैं। इस त्यौहार के दिन बुद्ध के जन्म स्थल और उनके धर्म के गुरु ने प्रवचन दिया था, जैसे सारनाथ, बोधगया और कुशीनगर जैसे स्थानों पर भी विशेष प्रार्थनाएं की जाती हैं।

बुद्ध पूर्णिमा का महत्व बहुत अधिक होता है और इसे ध्यान और तपस्या के दिन के रूप में माना जाता है। इस दिन लोगों को बुद्ध के शिक्षाओं का पालन करना चाहिए और उनकी उपदेशों का प्रचार करना चहिए। लोग इस दिन पर दान देते हैं, जो बुद्ध की सिखायी के अनुसार जीवन में उपयोगी होता है। बुद्ध पूर्णिमा के दिन बौद्ध धर्म के गुरुओं द्वारा प्रवचन दिए जाते हैं और बौद्ध भक्तों को धर्म की शिक्षाएं दी जाती हैं। इस दिन के त्योहार पर लोग धर्मिक नृत्य और गीत गाते हैं। इस त्योहार को धर्म के साथ ही संस्कृति का भी महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। लोग इस दिन पर अपने परिवार और मित्रों के साथ खुशियों का त्योहार मनाते हैं। इस दिन बुद्ध की शिक्षाओं को समझना बहुत महत्वपूर्ण होता है और लोगों को इन शिक्षाओं को अपने जीवन में उतारना चाहिए। बुद्ध की शिक्षाएं विश्व में अनुयायियों को शांति और समझ में मदद करती हैं। बुद्ध के उपदेशों के अनुसार हमें सभी जीवों का सम्मान करना चाहिए और सभी लोगों के साथ शांति से रहना चाहिए। समाप्ति में, बुद्ध पूर्णिमा बौद्ध धर्म के सबसे महत्वपूर्णत्योहारों में से एक ह। यह त्योहार बुद्ध की जन्म और उनकी महत्वपूर्ण शिक्षाओं को याद रखने के लिए मनाया जाता है। इस दिन पर लोग धर्मिक आयोजनों में भाग लेते हैं और धर्म की शिक्षाएं सीखते हैं। इस त्योहार के दिन लोग धर्मिक नृत्य और गीत गाते हैं और धर्म की शिक्षाओं को याद रखते हुए एक दूसरे को बधाई देते हैं।

बुद्ध पूर्णिमा धर्म के साथ ही संस्कृति का भी महत्वपूर्ण त्योहार है। इस दिन लोग अपने परिवार और मित्रों के साथ मिठाई खाते हैं और अपने घरों को सजाते हैं। इस त्योहार के दिन लोग दान-धर्म भी करते हैं जो बुद्ध की सीख के अनुसार जीवन में उपयोगी होता है। अंत में, हम कह सकते हैं कि बुद्ध पूर्णिमा धर्म, संस्कृति और शांति का त्योहार है। इस दिन लोग बुद्ध की शिक्षाओं को याद करते हुए धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा को दिखाते हैं। हमें सभी लोगों के साथ शांति से रहना चाहिए

और सभी जीवों का सम्मान करना चाहिए। यही बुद्ध ने सिखाया है और इसे हमें अपने जीवन में अमल में लाना चाहिए। इस त्योहार को मनाकर हमें इस बात का भी याद रखना चाहिए कि हमें अपनी आस्था और धर्म की शिक्षाओं का पालन करना चाहिए।

इस त्योहार को मनाने का सबसे अच्छा तरीका है कि हम बुद्ध की शिक्षाओं को याद करें और उन्हें अपने जीवन में अमल में लाएं। हमें इस त्योहार को जीवन में सुख, शांति और धर्म के साथ जीना चाहिए। इस त्योहार को मनाने से हम अपने जीवन में सकारात्मकता और शांति को जोड़ सकते हैं। हमें अपनी ज़िन्दगी में शांति, सद्भाव और धर्म के अंग को जोड़ना चाहिए। आखिर में, हम यही कह सकते हैं कि बुद्ध पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण त्योहार है जो हमें धर्म, संस्कृति और शांति के साथ जीना सिखाता है। इस त्योहार के दिन हमें अपने जीवन में सकारात्मकता और शांति को लाने का प्रयास करना चाहिए और अपने परिवार और मित्रों के साथ इसे मनाना चाहिए।

इस त्योहार के दिन हम धर्म, संस्कृति और शांति के महत्व को समझ सकते हैं। हमें बुद्ध की शिक्षाओं का पालन करना चाहिए जो हमें सत्य, अहिंसा और सम्मान के साथ जीने का संदेश देते हैं। इस त्योहार को मनाकर हम अपने आसपास के लोगों के साथ समझौता करना चाहिए और एक दूसरे के साथ खुशहाली मनाना चाहिए। इस त्योहार को मनाने से हम अपने आसपास की समस्याओं को हल कर सकते हैं और समझौते के माध्यम से आपसी बंधन को मजबूत कर सकते हैं। इस बुद्ध पूर्णिमा को मनाने से हम अपने जीवन को स्वस्थ और सकारात्मक बना सकते हैं। हमें अपने जीवन में सत्य, अहिंसा, सम्मान और समझौते के माध्यम से सुख और शांति का अनुभव होगा।

आखिर में, हम सभी को यह सुझाव देते हैं कि हम बुद्ध पूर्णिमा को मनाकर इसे अपने जीवन में सकारात्मकता, शांति और सद्भाव के साथ जीने का प्रयास करें। हम इस त्योहार को जश्न के रूप में मनाने के साथ ही इस त्योहार के महत्व को समझने का प्रयास करें। इस त्योहार के दिन हम ध्यान करते हैं कि बुद्ध ने अपने जीवन में बहुत सारी मुश्किलों का सामना किया और उन्होंने सभी इन मुश्किलों से सफलता हासिल की। हमें उनकी शिक्षाओं से प्रेरित होकर जीवन में कठिनाइयों से निपटना सीखना चाहिए। इस त्योहार को मनाने से हम अपने आसपास के लोगों को समझ सकते हैं और एक दूसरे के साथ मेल-जोल बनाए रख सकते हैं। इस दिन हमें सम्मान और अहिंसा का पालन करना चाहिए और अन्य लोगों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमें अपने जीवन में उत्तरदायित्व और सद्भाव के साथ जीना चाहिए। हमें अपने आसपास के सभी लोगों का सम्मान करना चाहिए और सहानुभूति और दया के साथ उनके साथ रहना चाहिए। इस त्योहार के दिन हम बुद्ध की शिक्षाओं को याद करते हुए अपने जीवन में इन्हें लागू करने का प्रयास करना चाहिए। हमें सत्य, अहिंसा, सम्मान, दया, सहानुभूति, धैर्य और समझौ इत्यादि जैसी बुद्ध की मूल शिक्षाओं को अपने जीवन में लागू करने का प्रयास करना चाहिए। इस त्योहार के दिन हमें अपने आसपास के सभी लोगों के साथ खुशी, प्यार और एकता के साथ मनाना चाहिए।

बुद्ध पूर्णिमा एक महत्वपूर्ण धार्मिक त्योहार है जो हमें अपने जीवन में शांति, समझौता, और सहानुभूति की शिक्षाओं को याद दिलाता है। हमें इस त्योहार के दिन भगवान बुद्ध की प्रेरणा से जीवन में सभी मनोवैज्ञानिक, भावनात्मक, तथा आध्यात्मिक सफलताओं को हासिल करने का प्रयास करना चाहिए। इस त्योहार के दिन अपने परिवार और मित्रों के साथ उपवास करने और ध्यान करने का प्रयास करना चाहिए। ध्यान एक अभ्यास है जो हमें शांति और समझौता प्रदान करता है। ध्यान के द्वारा हम अपने मन को शांत और स्थिर करते हुए अपनी आत्मा के साथ एक संयोग बनाते हैं। इस तरह हम अपने जीवन में अधिक शांति, समझौता, और आनंद का अनुभव करते हैं।

इस त्योहार के दिन हम अपने आसपास के लोगों के लिए दान और चारित्रिक आचरण का महत्व भी समझने का प्रयास करें। बुद्ध ने सभी लोगों की समानता का उल्लेख किया था, इसलिए हमें भी अपने समुदाय की मदद करने के लिए एक चारित्रिक जीवन जीने का प्रयास करना चाहिए। अंततः, बुद्ध पूर्णिमा एक ऐसा त्योहार है जो हमें अपने जीवन में सही मार्ग का चुनाव करने और जीवन के अधिक समझौते और शांति प्रदान करने के लिए प्रेरित करता है। इस त्योहार के दिन हमें बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण करने का प्रयास करना चाहिए और उनके आदर

और सम्मान का विशेष महत्व देना चाहिए। हमें एक नेता बनने के लिए बुद्ध के उदाहरण से प्रेरित होना चाहिए और दूसरों की मदद करने का प्रयास करना चाहिए। इस त्योहार के दिन हमें अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए अच्छे कर्मों का प्रचार-प्रसार करना चाहिए।

इस त्योहार के दिन धर्मशालाओं और बौद्ध मंदिरों में भक्तों की भीड़ जमा होती है और उन्हें धर्म की शिक्षाओं का उपदेश दिया जाता है। इस दिन पर भक्त बौद्ध मंदिरों में दान देते हैं और मंदिरों में अपनी विधि से पूजा-अर्चना करते हैं।

इस त्योहार के दिन हमें अपने दिल को खोलकर खुशी और प्रेम का उपहार देना चाहिए। हमें समस्त मानव जाति के साथ एक और अधिक समझौता और समझ का विकास करने का प्रयास करना चाहिए। इस तरह हम एक सदभावपूर्ण विश्व का निर्माण कर सकते हैं।

विश्व सापेक्ष भारत

अक्षय कुमार

भारत की विदेश नीति विश्व के सभी देशों के साथ अच्छे रिश्ते बनाए रखने की कोशिश करती है। भारत की विदेश नीति मुख्य रूप से तीन चरणों पर आधारित होती है - शांति, सहयोग और विकास। भारत द्वारा अपनाये जाने वाले नीतिगत पहलुओं के माध्यम से, भारत के संबंध अब अधिक सकारात्मक रूप में नजर आते हैं।

भारत की विदेश नीति में दो बड़े सिद्धांत हैं, पहला भारत का स्वतंत्र विचार है और दूसरा भारत का संवैधानिक दृष्टिकोण है। भारत का महत्व उसके आकार से नहीं बल्कि उसकी विचारधारा से आता है। भारत की विदेश नीति इसीलिए अपनी विशिष्ट पहचान रखती है। भारत की विदेश नीति में अमेरिका, रूस, चीन, यूरोप और दक्षिण-पूर्व एशिया जैसे क्षेत्रों के साथ संबंध बनाए रखने का विशेष महत्व है। भारत ने संयुक्त राष्ट्र से जुड़ने के साथ-साथ अपनी विदेश नीति को भी विशेष महत्व दिया है।

भारत ने अपनी विदेश नीति में सुरक्षा, सहयोग और विकास के सिद्धांतों को मजबूत किया है। भारत अपने सभी पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने का प्रयास करता है, साथ ही अपने संबंधों के माध्यम से अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कारिबियन देशों के साथ भी दूरी कम की है। भारत की विदेश नीति में न्याय, सहयोग और समानता के मूल सिद्धांत हैं। भारत द्वारा अपनाए गए नीतिगत कदमों के माध्यम से, भारत विश्वभर में शांति, स्थिरता और विकास के साथ संबंधों को बढ़ावा देना चाहता है। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ अपनी विशेष पहचान बनाई है जो उसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों में मजबूत बनाती है। विदेश नीति में अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर भी भारत ने अपनी धारणा व्यक्त की है। जैसे कि भारत ने आतंकवाद के खिलाफ अपनी नीति को सामूहिक रूप से समझौतों और समझौतों के माध्यम से उन देशों के साथ बढ़ाया है जो आतंकवाद के खिलाफ संघर्ष कर रहे हैं।

भारत अपनी विदेश नीति में अमेरिका, रूस, चीन, जापान, यूरोपीय संघ, दक्षिण एशिया और अफ्रीका जैसे प्रमुख क्षेत्रों के साथ समन्वय और सहयोग का प्रयास करता है। भारत ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से अपने पड़ोसी देशों के साथ खुले दिल से संबंध बनाए रखने के लिए एक सक्रिय रूप से प्रयास किया है। भारत ने अपने न्यून स्वरुप के बावजूद अपनी विदेश नीति में अंतर्राष्ट्रीय मंचों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारत की विदेश नीति में व्यक्त धारणाओं, सिद्धांतों और मूल्यों को अपनाकर, भारत ने विश्वभर में अपनी अलग पहचान बनाई है।भारत की विदेश नीति में विपक्ष के अनुकूल नहीं होने के बावजूद, भारत ने अपनी विदेश नीति में सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता दिखाई है। भारत ने विश्व में अपनी विदेश नीति के लिए बहुमुखी विकास की अनुमति दी है। इस बात से स्पष्ट होता है कि भारत अपनी विदेश नीति के माध्यम से दुनिया के साथ अच्छे संबंध बनाना चाहता है। इससे भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों में सुधार होने की उम्मीद है।

भारत की विदेश नीति उसकी शांति, संगठन, उन्नति और समृद्धि के लिए महत्वपूर्ण है और उसे अगले दशक में आगे बढ़ाने की जरूरत है। भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखना है। इसके लिए भारत ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ, शंघाई सहयोग संगठन, ब्रिक्स जैसे संगठनों में भाग लिया है।

भारत की विदेश नीति के अन्य मुख्य लक्ष्य हैं समान और न्यायसंगत विश्व का निर्माण

करना, सहयोग और व्यापक विकास को बढ़ावा देना, अपने पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखना और अपने साथ संघटित होने वाले देशों के साथ सबसे अधिक व्यापक संबंध बनाए रखना। भारत अपनी विदेश नीति में आत्मनिर्भरता, तकनीकी उन्नति, साइबर सुरक्षा, जैव निरापत्ता और क्षेत्रीय सहयोग जैसे विषयों पर विशेष ध्यान देता है। भारत ने अपनी विदेश नीति के माध्यम से बहुसंगी आधार पर दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में अपने साथ संघटित होने वाले देशों के साथ सबसे अधिक संबंध बनाए रखा है। भारत अपने पड़ोसी देशों जैसे नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान और मलदीव के साथ समर्पित संबंध बनाए रखने के लिए भी प्रयास करता है।

भारत की विदेश नीति में अफ्रीका, लैटिन अमेरिका, यूरोप और प्रशांत महासागर देशों के साथ संबंध बनाए रखने का भी खास ध्यान है। भारत अपनी विदेश नीति के तहत अपने विश्वस्तरीय संबंधों को मजबूत करने के लिए उपयोगी संगठनों जैसे अमेरिका के साथ भारत के बीच सांख्यिक वाणिज्य समझौता (सीईपीटी) और रूस के साथ व्यापक रूप से सहयोग अनुबंध (आरसीई) जैसे समझौतों के माध्यम से भी संबंधों को मजबूत करता है।

भारत की विदेश नीति के तहत भारतीय कंपनियों को विदेश में व्यापार विस्तार करने और निवेश करने के लिए अनुमति दी जाती है। भारत अपनी विदेश नीति के तहत विदेशी निवेशकों के लिए भी विभिन्न सुविधाएं प्रदान करता है जो उन्हें भारत में निवेश करने के लिए प्रेरित करती हैं। भारत की विदेश नीति अब दुनिया भर में प्रभाव बना रही है। भारतीय विदेश नीति के तहत भारत अब विश्व में एक महत्वपूर्ण नेतृत्व भूमिका निभा रहा है। भारत दुनिया भर में अपने राजनयिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए प्रयास कर रहा है। भारत अपनी विदेश नीति के तहत विश्व के बड़े संगठनों में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जैसे कि संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व व्यापार संगठन,

आईबीआई और शंघाई सहयोग संगठन।

भारत की विदेश नीति में अन्य एक महत्वपूर्ण बात है कि भारत पड़ोसी देशों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के लिए प्रयास करता है। भारत पड़ोसी देशों से संबंध बनाने के लिए अपनी विदेश नीति में कई योजनाएं शामिल करता है। भारत नेपाल, श्रीलंका, मलदीव और बांग्लादेश के साथ विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के लिए भी प्रयास कर रहा है। भारत की विदेश नीति दुनिया भर में उद्यमी और अग्रणी देश के रूप में हो रहा है। भारत विभिन्न क्षेत्रों में नए व्यापार संबंध बनाने के लिए नए उद्योगों के विकास को बढ़ावा दे रहा है। भारत की विदेश नीति का एक और महत्वपूर्ण हिस्सा है उच्च स्तरीय मंचों में अपनी बात रखना।

भारत विश्व ट्रेड संगठन, आईबीआई और कई सहयोग संगठनों से उच्च स्तरीय मंचों में अपनी भूमिका बढ़ाने के लिए प्रयास कर रहा है। भारत विभिन्न आंतरिक मुद्दों और विदेशी नीतियों के मामले में विश्व में अपनी बात रखने के लिए भी प्रयास कर रहा है।

भारतीय विदेश नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण हिस्सा है सुरक्षा मुद्दों के संबंध में। भारत विभिन्न देशों के साथ अपने सुरक्षा मुद्दों के लिए सहयोग कर रहा है। भारत अमेरिका, रूस, जापान, फ्रांस, जर्मनी और ब्रिटेन जैसे देशों से संबंध बनाकर भी सुरक्षा मुद्दों पर बातचीत कर रहा है। सारांशतः, भारतीय विदेश नीति एक ऐसी नीति है जो भारत को विश्वभर में अपनी भूमिका बढ़ाने में मदद करती है। यह एक स्वतंत्र देश है जो अपनी आधारभूत मूल्यों को बचाए रखता है। भारत दुनिया के अन्य देशों से सहयोग करता है और अपनी विदेश नीति के माध्यम से विश्व सामंजस्य को बढ़ावा देता है। इस नीति के माध्यम से भारत अपनी आधारभूत मूल्यों, जैसे अखण्डता, स्वतंत्रता, समानता और सहयोग को पूरी दुनिया में प्रचारित करता है।

इस प्रकार, भारतीय विदेश नीति अधिकतर उद्देश्यों, जैसे राष्ट्रिय सुरक्षा, आर्थिक विकास और अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए प्रयास करती है। इस नीति का मुख्य उद्देश्य है भारत के विश्व स्तर पर मजबूत बनाना। भारतीय विदेश नीति के माध्यम से, भारत अपनी आधारभूत मूल्यों को संरक्षित रखते हुए, विश्व स्तर पर एक सशक्त और समर्थ राजनीतिक और आर्थिक राष्ट्र के रूप में उभरने का प्रयास करता है।

दादा भाई नौरोजी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक

प्रकृतिमेल डेस्क

दादा भाई नौरोजी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायकों में से एक थे। वे एक विचारक, शिक्षक, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ और एक स्वतंत्रता संग्रामी थे। दादा भाई नौरोजी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देश की स्वतंत्रता के लिए लगातार संघर्ष किया था।

जन्म और प्रारंभिक जीवन

दादा भाई नौरोजी का जन्म 4 सितंबर, 1825 को बम्बई (अब मुंबई) में हुआ था। उनके पिता का नाम नौसरवानजी नौरोजी था जो एक परसी व्यापारी थे। दादा भाई नौरोजी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा बम्बई के एलफीस्टन स्कूल में प्राप्त की। उन्होंने यहां से अपनी माध्यमिक शिक्षा पूरी की। उन्होंने उस समय तक इंग्लिश, फारसी और गुजराती भाषाओं में बोलने और लिखने की पूरी तकनीक सीखी थी।

वकालत और राजनीति में प्रवेश

दादा भाई नौरोजी ने बाद में वकालत की शिक्षा प्राप्त की और मुंबई उच्च न्यायालय में वकील के रूप में काम करना शुरू किया। वे एक बहुत ही अच्छे वकील थे और अपने वकालती के काम में सफल रहे। दादा भाई नौरोजी का समाज सेवा में बड़ा रूझान था। उन्होंने भारतीय समाज को समझने के लिए अपने जीवन का अधिकांश समय समाज सेवा में निवेश किया। दादा भाई नौरोजी का राजनीतिक करियर 1855 में शुरू हुआ था। उन्होंने इस समय से ही राजनीतिक एवं

4 सितम्बर 1825-30 जून 1917

सामाजिक सुधार की ओर अपनी कार्य शुरू किया। उन्होंने भारत को लोकतंत्र के रूप में

अर्थात राजनीतिक आधार प्रदान करने का सपना देखा था।

दादा भाई नौरोजी की पहचान स्वतंत्रता संग्राम से हुई। उन्होंने विभिन्न समाज सेवा एवं स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े बहुत सारे संघों में सक्रिय भूमिका निभाई। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापकों में से एक थे। उन्होंने इस संगठन के प्रथम सत्र में अपनी भूमिका निभाई और उन्होंने एक बहुत ही महत्वपूर्ण संगठन का संचालन किया। दादा भाई नौरोजी ने अपने जीवन के दौरान अंग्रेजों के अधिकार से भारत को मुक्त कराने के लिए बहुत कुछ किया। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख संघर्षक थे। उन्होंने भारत की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए भी अपना योगदान दिया। वे इसके लिए एक भारतीय बैंक की मांग करने वाले पहले व्यक्ति थे।

दादा भाई नौरोजी के अंतिम दिन

दादा भाई नौरोजी ने 31 मार्च, 1917 को अपनी आखिरी सांस ली थीं। उन्होंने अपने जीवन के दौरान एक बहुत बड़े संघर्ष का सामना किया। उन्होंने अपने संघर्ष के दौरान बहुत से लोगों को उनकी बातों में विश्वास दिलाया और उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। दादा भाई नौरोजी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एकमहान योद्धा थे जो अपने लक्ष्यों के लिए निरंतर संघर्ष करते रहे। उन्होंने इस दुनिया में बहुत से लोगों के दिलों में अपनी जगह बना ली थी। उनकी बातें आज भी हमारे लिए प्रेरणास्रोत हैं।

दादा भाई नौरोजी ने एक समाज सुधारक के रूप में अपना जीवन व्यतीत किया। वे भारत के लोगों की मदद करने के लिए हमेशा तत्पर रहे। उन्होंने अपनी शिक्षा और अनुभव का इस्तेमाल करके भारत की समस्याओं का समाधान निकालने की कोशिश की। उन्होंने अपने लक्ष्यों के लिए निरंतर काम किया और उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक महान योद्धा के रूप में अपनी जगह बना ली। उन्होंने अपने जीवन के दौरान अपने देश के लिए काफी कुछ किया और इसलिए वे आज भी हमें एक अच्छे समाज सुधारक, स्वतंत्रता संग्राम के एक महान योद्धा, एक अच्छे वकील और एक महान आर्थिक विचारक के रूप में याद रहेंगे। दादा भाई नौरोजी की यादें हमेशा हमारे दिलों में जीवित रहेंगी। उनके कार्यों और उनकी सोच का असर आज भी हमारे देश के विकास में दिखता है।

दादा भाई नौरोजी के द्वारा उठाए गए मुद्दों में से एक मुद्दा था भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास का मुद्दा। वे चाहते थे कि भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत हो जाए और लोगों को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाया जाए। उन्होंने इस मुद्दे पर काम किया और भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अपने विचारों को जागृत किया। दादा भाई नौरोजी ने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अपनी किताब 'पॉवर, वेल्थ, एंड प्रोस्पेरिटी' लिखी थी। इस किताब में उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए अपने सुझाव दिए थे। इस किताब में उन्होंने उन समस्याओं के बारे में बताया था जो भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के रास्ते में आ रही थी। उन्होंने उन समस्याओं के लिए अपने सुझाव दिए थे जो भारतीय अर्थव्यवस्था को विकसित बनाने में मदद कर सकते थे। दादा भाई नौरोजी के विचार वर्ष 1906 में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए संसद में उनकी एक राष्ट्रीय बजट प्रस्तावना के माध्यम से व्यक्त किए गए थे। उन्होंने इस प्रस्ताव के माध्यम से भारत में स्वदेशी उत्पादों के निर्माण के लिए प्रोत्साहन देने की मांग की थी।

दादा भाई नौरोजी का एक और महत्वपूर्ण योगदान भारत की आजादी के लिए था। उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम को अपने समर्थन में लिया और स्वतंत्रता संग्राम के अग्रदूतों में से एक बन गए। उन्होंने भारत की आजादी के लिए अपनी जान देने के लिए तैयार थे। दादा भाई नौरोजी ने संसद में भारत के प्रति आंग्ल देशों की लूट के खिलाफ बचाव के लिए अपनी आवाज उठाई थी। उन्होंने भारत को स्वतंत्र बनाने के लिए एक आजादी के लिए संगठन भी बनाया था। उन्होंने अपने समर्थकों को जागरूक करने के लिए विभिन्न पत्रिकाओं को संचालित किया था।

भारत को स्वतंत्र करने के लिए दादा भाई नौरोजी ने भारतीयों को उनकी आजादी के लिए एक दृष्टिकोण दिया था। उन्होंने इसे उन्नति के रास्ते पर ले जाने के लिए जीवन भर काम किया। दादा भाई नौरोजी एक अद्भुत व्यक्ति थे जिन्होंने अपने विचारों के माध्यम से भारत की आजादी के सपने को एक वास्तविकता में बदलने का प्रयास किया। दादा भाई नौरोजी का जीवन एक महान कहानी है जो हमें उनके समर्थन और उनकी साहसिकता का परिचय देती है। उन्होंने भारत की आजादी के लिए जीवन भर संघर्ष किया। वे एक संवेदनशील मनुष्य थे जो स्वतंत्रता के लिए लड़ते रहे और इसकी लड़ाई में शामिल हुए थे।

दादा भाई नौरोजी ने अपने जीवन के दौरान अनेक उपलब्धियां हासिल कीं। उन्होंने एक मुख्य भूमिका निभाई जिससे भारत की आजादी के सपनों को एक वास्तविकता में बदलने का सफर आरंभ हुआ। उन्होंने अपने विचारों के माध्यम से लोगों को जागरूक किया और उन्हें उनकी स्वाधीनता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। दादा भाई नौरोजी को संसद में भारतीयों का पहला प्रतिनिधि के रूप में चुना गया था। उन्होंने संसद में बहुत से मुद्दों पर अपनी बात रखी और अपनी अनुभवों को शेयर किया। उन्होंने भारत के आर्थिक विकास को लेकर भी विस्तृत चर्चा की थी। वे भारत के विकास के लिए अधिक निवेश करने की मांग करते थे जो बाद में उनके समर्थकों द्वारा आगे बढ़ाया गया। दादा भाई नौरोजी ने भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की शुरुआत में भी अपनी भूमिका निभाई। वे इस आंदोलन का एक महत्वपूर्ण वकील थे और इसकी सफलता के लिए अपना समर्थन दिया। वे संघर्ष के इस दौरान अंग्रेजों को इस बात का अंदाजा दिलाया कि भारत के लोग अपनी स्वतंत्रता के लिए तैयार हैं। दादा भाई नौरोजी की एक और अहम

उपलब्धि यह है कि उन्होंने भारतीय नौसेना की व्यवस्था के लिए एक नीति प्रस्तावित की थी। उन्होंने भारतीय नौसेना की स्थापना के लिए समर्थन दिया था

दादा भाई नौरोजी ने भारत के उत्तर और मध्य भागों में भी अंग्रेजों का अधिकार प्रतिनिधित्व समाप्त करने के लिए काम किया। उन्होंने उत्तर भारत में दो बड़े शहरों, बम्बई और पुणे में स्वदेशी आंदोलन को आगे बढ़ाने में भी मदद की थी। दादा भाई नौरोजी ने अपने विचारों को सामाजिक और आर्थिक सुधारों के लिए बचाने के लिए भारत के समस्याओं के लिए अनेक पुस्तकें लिखी थीं। उन्होंने भारत की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक समस्याओं को जागरूक करने के लिए अपनी रचनाओं का उपयोग किया। दादा भाई नौरोजी ने अपने जीवन के आखिरी दिनों में भी अपने विचारों को लोगों तक पहुंचाने के लिए प्रयास किए। उन्होंने एक आंदोलन शुरू किया था जिसमें उन्होंने भारतीय स्वाधीनता के लिए मांग की थी। इस आंदोलन के अंतिम दिनों में, उन्होंने एक बार फिर से अपने संघर्ष की भूमिका निभाई। दादा भाई नौरोजी ने 1917 में अंतिम साँस ली थीं। दादा भाई नौरोजी की जीवन गाथा हमें यह सिखाती है कि एक व्यक्ति अपने विचारों और उनके लिए संघर्ष करके देश को कैसे बदल सकता है। उन्होंने अपने जीवन में अनेक मुश्किलों का सामना किया, लेकिन उन्होंने हमेशा अपने आप पर भरोसा रखा और अपने संघर्ष के माध्यम से देश के लिए सकारात्मक परिवर्तन करने का सपना देखा।

दादा भाई नौरोजी एक ऐसी प्रेरणादायक व्यक्तित्व थे जो न केवल भारतीय इतिहास के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक थे, बल्कि वे एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने विदेश में भी अपने विचारों को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके जीवन और उनके कार्यों का एक महत्वपूर्ण सन्देश हमें यह सिखाता है कि एक व्यक्ति देश और समाज के लिए अगर सच्ची भावनाओं से लड़ता है तो उसकी उम्र और सामाजिक स्थिति कुछ नहीं होती है। दादा भाई नौरोजी की जीवन गाथा से हमें यह भी समझ मिलता है कि अगर हम एक सकारात्मक सोच वाले लोगों के संसाथ होते हैं, तो हम सफलता की ओर बढ़ सकते हैं। दादा भाई नौरोजी के जीवन से हमें यह भी सीख मिलती है कि हमें संघर्ष करने से नहीं घबराना चाहिए और हमेशा अपनी निरंतर प्रयासों से लड़ते रहना चाहिए।

दादा भाई नौरोजी ने एक ऐसे समाज का निर्माण किया जो सबके लिए समान था। उन्होंने देश के विकास के लिए अनेक उपाय ढूंढे और उन्हें लागू किया। उनकी योजनाओं में से एक थी 'आर्थिक स्वराज' की योजना, जिसका मकसद भारत को आत्मनिर्भर बनाना था। आर्थिक स्वराज की योजना का मुख्य उद्देश - बिना किसी विदेशी राजनीति या आर्थिक बल के आत्मनिर्भर बनाना था। दादा भाई नौरोजी ने इसके लिए अनेक उपाय ढूंढे जो वर्तमान समय में भी काफी मायने रखते हैं। उन्होंने आर्थिक स्वराज को प्रत्येक व्यक्ति के घर तक लाने के लिए जनता को आवश्यक अनुसंधान और पुस्तकों की आवश्यकता का भी संज्ञान दिलाया। उन्होंने सामूहिक खरीद योजना, राजस्व संग्रह योजना और स्वदेशी उत्पादों की खरीदारी के लिए आवश्यक निर्देश भी दिए।

दादा भाई नौरोजी ने भारत के आर्थिक विकास के लिए बहुत से योजनाओं का विकास किया। उनमें से एक थी रेलवे के विकास की योजना। उन्होंने रेलवे के विकास के लिए कई उपाय ढूंढे जो देश के विकास में बहुत मददगार साबित हुए। उन्होंने ब्रिटिश सरकार को एक रेलवे विभाग के गठन की सलाह दी जो देश के रेलवे को व्यवस्थित करने में सहायक होता था। दादा भाई नौरोजी एक महान भारतीय थे जिन्होंने भारत के आर्थिक विकास के लिए बहुत से योजनाओं का विकास किया था। उन्होंने समाज में समानता को बढ़ावा देने और देश की आर्थिक स्थिति को सुधारने के लिए बहुत कुछ किया। उन्होंने अपनी किताब 'पावर पोवर्टी एंड दबल स्टैंडर्ड' के माध्यम से आर्थिक समस्याओं को समझाने और सुलझाने का प्रयास किया। उनकी योजनाओं का अध्ययन करके हमें आज भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

दादा भाई नौरोजी के जीवन और कार्यकलाप ने हमें यह दिखाया कि आर्थिक आधार पर समाज की समृद्धि का सुधार सभी के लिए ज़रूरी है। आज भी हमारे देश में बहुत सारी आर्थिक समस्याएं हैं जो समाजजो समाज की उन्नति को रोकती हैं। दादा भाई नौरोजी ने अपने जीवन के दौरान समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा देने का संदेश दिया था। उन्होंने समाज में समानता के लिए लड़ाई लड़ी और अपनी ज़िंदगी भर समाज की सेवा की। उन्होंने यह साबित कर दिया कि हर व्यक्ति अपने आप में महत्वपूर्ण होता है और उनका योगदान भी समाज के लिए महत्वपूर्ण होता है।

दादा भाई नौरोजी एक महान विचारक, राजनेता और समाजसेवी थे। उनका जीवन हमें आज भी उनके आदर्शों और मूल्यों से प्रेरित करता है। उनका योगदान हमें आज भी याद रखना चाहिए । उनके द्वारा दिए गए आर्थिक सिद्धांतों और उनके जीवन में किए गए कार्यों से वे भारतीय आर्थिक विचारधारा के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने अपने जीवन के दौरान आर्थिक स्वतंत्रता और समानता के लिए लड़ाई लड़ी और समाज की सेवा की।

दादा भाई नौरोजी ने देश की स्वाधीनता के लिए लड़ाई लड़ी और अंग्रेजों के अन्यायों के विरुद्ध अपनी आवाज़ बुलंद की। उन्होंने अंग्रेजों के अधीनता से छुटकारा पाने के लिए स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की। वे आर्थिक विचारधारा में बदलाव लाने के लिए अपनी अधिकृतता का इस्तेमाल करते थे और आर्थिक विषयों पर उनके दृष्टिकोण ने देश में आर्थिक उत्थान को तेजी से बढ़ावा दिया।

(दृघकाल) - जीवन सार - (सही गलत से परे अवस्थाओं का सृजन ही वास्तविकता है)

अभिषेक पंत

अनवरत पूर्णतः प्रमेयक ऊष्मा चिन्हों की दृष्टि सूचक विधा पर विश्वास करने वाला जीव प्राणी अपनी ही व्यथाओं का ताना-बाना बुनने की दौड़ में, जीवन काल को एक संधि संविधानिक सारथी वार्ता लघु कोष्टक सौंदर्यवाद समझने लगा। आवश्यकता की अनुसूचित सूचित संज्ञा भी बनाई जीव प्राणी ने, अपितु रंग दलित अधिकता प्रधान पारा कणों की सहायक संजीवनी को ही इसने प्रातः काल प्रार्थी वाचक प्रथित पथिक जन्मस्थली पुरस्कार माना। रिक्त रिदिमा पर्यायक जन्म सूचक अग्नि सेतु धर्म विवेक भी बनाए गए। जीव प्राणी ने सदैव काल गठरियों की अखंड रूढ़िवादिता को ही परिचायिका वंशज उष्मा संहिता का राग द्वेष माना। सिंचित कॉल तो मधुमेही वर्ण की पीड़ा का योगद्रव्य उभार रहा था अपितु द्वंदात्मक श्लोकार्थी विलोमार्थी परिचय वाद को नास्तिक आस्तिक ग्रंथि पीठ का संबंध वादी ग्रास प्राणवायु वात संचार मानने वाला जीव प्राणी सदैव ही मरणोपरांत की जीवनी का काल्पनिक योग विषयमृत करता रहा। प्रकृति तो सदैव ही आलेखित मुद्राओं का आहार पकाती गई। प्रकृति तो सदैव सतत अनवरत अविरलता कि निरंतरता को गतिमान करती गई। प्रकृति ने किसी भी यौगिक अंश को उसके अस्तित्व का प्रश्नकाल नहीं बनाया। अपितु प्रकृति तो सदैव प्रवृत्ति की रचनाकृत भूमि को तापमान कारक बनाती गई। निरंतरता की पराकाष्ठा पर सर्व आहार समुच्चय वादी सिंहासनों का निर्माण भी किया गया। प्रौद्योगिकी आधीनता की विषय निशा के नाम पर समय सूचक ग्रंथियों का भी निर्माण किया गया। अपितु प्रकृति ने तत्व ज्ञाता सात्विक पदार्थ रासायनिक कोष को सदैव ही काल कालांतर का स्वभाविक अपवाद बनाया एवं उसी ईंधन चक्र की गति को इच्छा काल का जीवन प्रहर बनाया, जहां से आत्मा ने अपनी राधिका का सारांश स्वरूप बनाया। अर्थात जीवन सार तो सही गलत से परे अवस्थाओं के सृजन की वास्तविकता है, जिसमें प्रत्येक सृजन अंश ही दृघ काल का संयमित रूप संचारी वर्णक्रम बन जाता है,

जो अपनी ही राधिका का परस्पर आधुनिक कोण बनाकर, खनिज यातायात पूर्ति को अंग विधान मार्गों पर मिलाता रहता है। दृघकाल अर्थात रासायनिक दर्पण से निर्मित द्रव्य घनत्व प्रतिबिंबित इच्छा मानक रस योग, जिसकी समय चरणावली परत क्रमांकन की रासायनिक मुद्रा को राधिका दशमलवी अंतिम भाव पंक्ति तक पकाती है। अर्थात रासायनिक दर्शन की प्रथम रश्मि घनत्वता को रस व्याप्त काल सूचक समय दर्पण रथी भाव पकवान सूची बना देने वाले प्राकृतिक शून्य अशून्य प्रतिबिंबिता को दृघकाल कहते हैं। अर्थात समय विराजमान सूर्य विज्ञानि काल ज्ञानी रासायनिक योग के जीवन पकवान मूल को राधिका आनंद मुद्रा की ईंधन राशि बना देने वाले गंधीय दर्पण प्रकृति प्रति शून्यधारा गति पूर्णांक को दृघकाल कहते हैं। जीवन का दर्शन ही जीवन का सार है। अर्थात जीवन की पूर्ण यात्रा का प्रत्येक चरण ही मृत्यु की उर्वरा क्षमता का दृघ काल है। वास्तविकता की जननी प्रकृति ही, परम शून्य वाहन चेतना धरालीन दृघकाल निर्माणक है , जिसकी पूर्णांक प्राप्तांक की प्रणाली का सृजन अनुपात ही जीवन सार है। तथ्य विधित विद्युता कि मर मृदा सोक्ता कथाओं का दोहन निर्वाहन करना मानव प्रजाति का जीव निर्देश नहीं था, अपितु यही वह प्रदूषण था, जिसने जीवन सार का तथाकथित उपनिवेशक रूप ही दृघ काल का अशून्य वर्ण बना दिया। अर्थात रूपरेखा कल्याण मूर्ति तत्काल जगत विधाता स्फूर्ति, यह सब अवस्थाएं मात्र मात्रा विराम की आपूर्ति की कोष्ठक चिन्ह थी। जिनमे प्रतीकात्मक उपासना की रस व्यायाम चरित्रार्थी विषय विवेक धारणा ही निर्देशाँक उपाधि की जलवायु योगिनी बना दी गई थी। ह्रदय सूचक महाकाल बल ही अपवर्तनी चेतना का महत्ता योग होता है। जिसमे शून्य अशून्य विश्वसनीय सृजन चित्र प्रेरणा ही उतप्रेरकों की जीवनी का रासायनिक घड़ी योग बनाती है। खगोलीय उत्कर्ष की सूर्य विधान नलिका का सर्वव्यापी रासायनिक चक्र ही गंधीय उपस्थिति की सीमा वर्धनी योगिनी को ध्वनि काया पूर्ति की सृजन सर्वांगीण पात्र काया बनाती है। अर्थात जीवनसार ही मृत्य पूरक पूर्णिमा ग्रंथि घड़ी धारा है।

अपवर्तन संवर्तन अनावर्तन परावर्तन सतत निरंतरता स्वाभाविक शून्यकाल प्रतिबिंबित नाडी चाप धुरी ग्रंथि व्याप्त प्रकृति प्रकारेणु रासायनिक विषय आकृति पारा आसन बनाकर, ब्रह्मांडीय रचनाकार ने सिद्ध किया कि ग्रहण कर्ता का पारा चक्र भी तभी पूरक विकास का सिद्धांत बनता है, जब उस विषय ग्रंथि का जीवकाल ही दृघ काल

आश्वासन देकर प्रकृति का कार्यप्राण आवंटित नहीं होता। यह तो स्वाभाविक इच्छा का रस योग होता है, जो प्रत्येक पूर्ति की नीति में सूर्यध्वनि का आवेग संवेग वेग कारक बन जाता है। आकृति छाया विराम पूंजीवाद अस्तित्व में तब आया, जब आत्मा घर्षण की जीवन तुला का प्रभावित क्षेत्र ही तनमन रस खिंचाव का आकृति कुपोषित अतिक्रमण केंद्र बन गया। अपितु प्रकृति ने इस अवस्था में भी रागिनी प्रधान पदार्थ तत्व को शून्य सरलता का भाव अंकिता प्रज्ञानी विद्युत चुंबक बना दिया।

के जीवन सार भावांश में बराबर का प्रकृति आत्मक बल बना लेता है। अर्थ वादी माया चक्र का पूर्णिमा विवेक तो तस्करी की अनन्या का साधुवाद बनाना चाहता था। अपितु सिद्धांत व्यापक सूर्य ध्येयी चंद्र सूर्य मिलान की गणित से रचनाकार ने अनावर्तित प्रकाश प्रतिबिंब काया गति विलयन को भी आत्मा भार जीवन सार का अवस्था सूचक तापमान बना दिया। आध्यात्मिकता का प्रमेय, आकृति का गर्भ, आदर्शवाद का प्रयास, आशावादी प्रकाश, समस्त प्रकार की रूपरेखा तैयार की गई। सिद्धांत जनक ने भी प्रत्येक जीवन उत्कर्ष की इच्छा बेला को इसी न्यायालयी तन विधान एहसास का मृत्यु पोषक संवर्धिनी प्रकाश पिंड बना दिया। जहां से उर्वरा व्यासीय जलवायु कणों की यात्रा का निरंतर प्रवाह ही जीवन सार का दृघ काल बनता चला गया। आधुनिकता की व्यंजन स्वभाविकता भी स्वाभिमानी सूर्य दत्तक राधिका की कहानी बताई गई। संविधानिक उपमा ऊष्मा अलंकृता भी जीवन सार की दर्शन गर्विता बताई गई। अपितु दर्शन तो वह एहसास ध्वनित भूगोलीय रश्मि रासायनिक मार्गीय अग्रिम काल परत उभारक कुंजी है, जो प्रत्येक बीज की वास्तविकता में एक भिन्न प्रकार का अनावरण उपलब्ध कराती है, जहां से बनने वाली दृघ कॉल श्रृंखला ही जीवन सार की खनिजता को राधिका व्यासीय वास्तविकता में मिलाती है। ब्रह्मांड की जगत काया का जीव निर्जीव प्रकार सर्वप्रथम एक निर्वात आसन था, जिसमें प्रत्येक विस्तार को वरीयता देने हेतु, पदार्थ मूल की रचना को भी स्वतंत्र व्यायाम व्यासीय घटनाओं में लीन किया गया। इसी स्वतंत्रता में जब पदार्थ एकत्रण की माया, तापमान घर्षण का बीज इच्छा संवर्धन करने लगी, तब ब्रह्मांडीय रचनाकार ने सर्वाधिक भूविस्फोटन करने से परे, समस्त बीज मात्रा कृषि ध्वनित रासायनिक उपमाओं को सजीवता का रूप दे दिया। जहां से उत्पन्न समस्तालीन भाव धाराओं ने स्वयं ही अपने प्रदूषण को अपना आत्मा बिंदु बनाकर, अपने वाहन की चरम सीमा को दृघकाल एहसासी मन बिंदु सिद्धांत बनाते हुए, जीवन भर को ही राधिका भार अनावर्तित प्रतिबिंबित कुंजी योग बना दिया। ब्रम्हांड की चक्षुता का साक्षात्कार ही रस जीवी आधुनिकता का समय बीज वाहन दर्शन है। प्राथमिकता की कोशिका रथी आकृति ही जीवन मूल की बीज आकृति को ध्वनि यान का रूप देकर ब्रह्मांडीय तरलता में राधिका सूर्य से मिलाती है। जहां से होने वाला रासायनिक मिलान ही अवस्थाओं की तापमान कृति को रस वेगीय मंडल का विषय कोशीय आत्मा भाग बना देता है। इसी आत्मा

भाग की भाव शून्यता में गुणवत्ता प्रकृति का प्रवृत्ति स्वभाविक गंधीय विकास होता है। इसी नियंत्रण की रिधिमा राधिका शून्यता शुद्धता ही समय निर्वाहन की प्राकृतिक रागिनी को प्रकृति मूल का पदार्थ कारक बनाती है। ब्रह्मांडीय पराक्रम जीव निर्जीव प्रधानता में श्रृंखला श्रेयस्कर उत्पत्ति को गति लीन मंथन का छलनी कारक बनाता है।

आश्वासन देकर प्रकृति का कार्यप्राण आवंटित नहीं होता। यह तो स्वाभाविक इच्छा का रस योग होता है, जो प्रत्येक पूर्ति की नीति में सूर्यध्वनि का आवेग संवेग वेग कारक बन जाता है। आकृति छाया विराम पूंजीवाद अस्तित्व में तब आया, जब आत्मा घर्षण की जीवन तुला का प्रभावित क्षेत्र ही तनमन रस खिंचाव का आकृति कुपोषित अतिक्रमण केंद्र बन गया। अपितु प्रकृति ने इस अवस्था में भी रागिनी प्रधान पदार्थ तत्व को शून्य सरलता का भाव अंकिता प्रज्ञानी विद्युत चुंबक बना दिया। रासायनिक गति की आख्या का दृघ काल ही अवस्थाओं का संतुलन समय अंकित करता है, जिसमें बाहय कला की आंतरिक व्यूह व्यवस्था ही तरल प्रकाश के माध्यम से स्वीकृति प्रदान जैविकता को एहसास करने वाला स्तूपीय पिंड बना देती है। रात्रि काल एवं दिवस काल की यही रणनीति तत्व पाराभार की स्मृति में जैविक मंथन की वरीयता को तापमान प्रधान सूर्यता का तकनीकी क्रिया केंद्र बनाती है। आवश्यकता का सूचक केंद्र नहीं होता, अनावरण का प्रायश्चित तथ्य नहीं होता। जीवन की मूल धारा सदैव स्वअवस्था की गणित से गतिमान रहती है। बाहय जगत का पारा सदैव प्राकृतिक वेग का निर्वहन करता है। सदैव ही तापमान कृषि सक्रिय रहती है, कभी बाहय बल का मानक आंतरिक हस्तक्षेप का कारक नहीं होता। राशि मुद्रा मूल्य तकनीकीलीन आत्मा गंधीय व्यवहारिकता ही जीवन राधिका की ईंधन शून्यता से जीव निर्जीव मिलान का सारगर्भित अनशांकन सूर्य कृत करती है। परागमन की वृत्ति का यही सूचक वृत्त भी आत्मा प्रबंधन की जीवन सरलता को प्रकाश वर्ष की गति से सारगर्भित करता है, जिसमें बनने वाला तापमान ही राधिका गति का निर्धारण करता है।

उष्मित विवेक उपासना वृत्ति का धरा कोणीय समागम सृष्टि लीन किया गया था। आधुनिक प्राधिकरण अमावस्या का ऋतु चक्र प्रज्ञानवित्त किया गया था। आत्मा चरणावली प्रकाश बिंदु आध्यात्मिकता से सरलार्थी विमोचन के नाम पर तापमान घनिष्टता का सागरिका मिलान किया जा रहा था। अराजक वैधानिक उपक्रमित प्रावधान संग सूक्ष्मता का जीव निर्जीव उपहासीय तरल आवंटन संधिकृत किया गया था। प्रकृति ने जीवन सार की प्रतिबिंबता में तत्व भवन की सार्थकता से आकृति विनियम की राशि प्रधानता को चरित्र विषय का तापमान क्षेत्रीय एहसास वर्ण बना दिया। इसी विषय बोध की प्रणाली में तत्व जीवनी का रासायनिक अमल ही नैसर्गिक ऊष्मा चाप विद्युता का साधन कृत अपवर्तनी धातु मंडल बन गया। समय वृत्त की चेतना का अनावर्तित काल भी समानुपाती भाव विषय का योगिक धरातल बनाने लगा। इसी प्राकृतिक अपवाद की राशि रासायनिक छारीयता से विषय बोध की तापमान कृति ने राधिका मिलान का सरलतम मार्ग, तन दिनचर्या को बना दिया। संघर्ष की कृषि करना, सतत प्रयासों की आशा में धर्मवान छिद्रण का प्रयोग करना, प्रकृति में इस प्रकार का कोई भी ध्वनि निर्देशालय नहीं होता। प्रकृति का कृषि काल भी उसी अपवर्तन की ध्रुवीयता को छलनी कृत करता है, जहां से उर्वरा शक्तियों का मिलान भी दर्शन योगिनी चुंबकीयता में सृजन कृत गंध अंकन को राधिका लीन करता है। आधुनिक आकृति समावेशित रात्रि काल समय आर्जन ही जीव निर्जीव वृत्ति को उसी ध्वनि संस्कृति का क्षेत्रीय बल बनाता है, जहां से निद्रा का छन्नी पकवान बोध प्रकरण ही दिनचर्या प्रधान तन एहसास का प्रथम दिवस काल बन जाता है। प्रकृति की रचनाओं का तापमान तरलतम भाव ही यही होता है कि जिस भी सृजन काल का राधिका गुण, ईंधन काल का सूर्य योग होता है, उसी सृजन काल का इच्छा योग प्राकृतिक दिनचर्या का विषय बोध होता है। अर्थात दर्शन प्राप्त अंकित मन छाया वृत्त लीन तन भाव की व्यवहारिक ऊष्मा के प्रबलतम तन मन राधिका चिन्हित प्रथम आकृति काल प्रवृत्ति प्रकारेणू तापमान नियंत्रिक तत्व अवस्था परिधि को दृघकाल कहते हैं। संयोजकता की उपस्थिति भी यही चिन्हित रागिनी मंथन अंकल साधन क्षेत्रीय

बल प्रबंधक कारक वर्ग होता है। आधुनिकता की परिधि में राशि प्रदान अपवर्तन की लवणता का यही योग दर्शन श्रुति परागमन का रात्रि कोशीय तत्व जीवंत सारगर्भित पदार्थ चयन भाव होता है। मृदा सनवर्तन जलवायु पर अपवर्तन ही आवेगीय प्राणवायु जैविक दर्पण योग होता है। अर्थात जीवन का मंथन ही पदार्थ की इच्छाओं का भोग है एवं जीवन का सार ही तत्व ईंधन की कृषि का प्रथम दृघकाल योग है। इसी आकृति विषय राधिका संपन्न छन्नी प्रधान तत्व अपवर्तनी तन एहसास पूर्ण मन परिक्रमा ध्रुवीय तत्व रासायनिक उभारक प्रहर को दृघकाल कहते हैं। जीव निर्जीव परिचयवादी आभा वर्णित चरित्र धारा प्रमाणित स्वभावी अशून्यांकन तरंग शैली तरलतम प्रकाश स्वर्णधारा प्रकृति सूर्य धातु जलवायु सूचक आकृति तार पारा प्रवृत्ति धुरी बीजांकन ही समय विद्युता का चुंबकीय सरलतम आंतरिक वाहन कोणीय क्रिया काल होता है। जिसमें वृत्ति मूल का पदार्थ संपन्न तत्व रागिनी रासायनिक धेय्य ही गंधीय पूर्ति का जीवनकाल पराग द्रव्य होता है। न्याय अंकित संमुखी आकृति तृष्णा वर्गीकृत सूर्य चंद्र मिलान कर्ता आधुनिक वाहन द्रव्य पारा चित्र बनाया गया था। खनिज वृत्ति की खगोलीय ऊष्मा से नव पाताल मिलान का मृदा चक्र बनाया गया था। जलवायु पोषक द्रव्य यथार्थ रचना कर्म ही ध्वनित रस तार खिंचाव के चुंबकीय कारक से स्वभावी आंतरिक बल के इच्छा सूर्य धातु बल विस्फोटक मन स्तूप बनाए गए थे। प्रकृति में विस्तार की अंकन मुद्रा ही संकुचन की आवंटन निधि होती है। अवस्थाओं का सृजन ही वास्तविक वास्तु वस्तु चालन द्रव्य परिधि मूल्यता होती है। किसी भी प्रकार का अन्वेशा राशि प्रदान समय चक्र नहीं बनाया जाता। सदैव ही रासायनिक योग को प्रबलतम प्राणवायु चक्र की स्वीकृति परमार्थ मुद्रा दी जाती है। जैविक चरण का आंतरिक ऊष्मा चक्र आत्मा बिंदुओं का चरणार्थी पारा पराग बीज वृत्त बनाता है। संपन्न लवणता पारा परागीकरण का बीज चक्र ही ध्वनि प्रकाश मिलान तरंग जलवायु बनाता है। आंतरिक विषय की पूर्ति में कृषि पारा स्वीकृति ही द्रव्य प्रकाश की आयतन प्रलयी भार विलयी बीज संस्तृति होती है। इसी जलवायु संस्तृति से खगोलीय ध्वनि काल जलवायु प्रकाश का स्तूपीय चक्र बनाता है। इच्छा वृत्त की इधन काल रागिनी ही राधिका समय की खनिज आभा का वृत्त चालन परत शील करती है। समय बिंदु अनिवार्यता ही जैविक विज्ञान की समय वृत्ति का प्रथम पराग जल बनाकर जलवायु मंथन का जीवन छारीय निर्जीव चुंबक परत प्रवाह बनाता है। ब्रह्मांडीय द्रव्य की दर्पण निधि का सूर्य प्रकाश चक्र ही रासायनिक मूलता का कृति ध्वनित आकार बनाकर, पात्र पारा संचार से स्वाभाविक जीव मंडल का विस्तार करता है। प्रकृति की क्रियाओं का लावण्य अंश ही प्रवृत्ति छारीयता का अमलीय प्रधान मिलान रसायन कृत करता है। उत्पत्ति की परीक्षा नहीं होती, अपितु उत्पत्ति का कारक जलवायु संचारी योग बनता है, जिसमें उसी बीज बिंदु की स्वभावी मृदा का विकास होता है, जिसमें शुण्यार्थी पदार्थ चालन की ईंधन राधिका का पारा मूल निर्मित होता है। ब्रह्मांडीय स्वाभाविक आत्मा चरण क्रियाएं भी इसी तत्व सिद्धांत पर जीवन अंकन सक्रीय करती है,जहां से अवस्थाओं का विस्तार ही गंध विज्ञान का रासायनिक मूल न्यायी अंश धारक होता है। रिक्तता की परिचाईका में प्रकृति की निर्वात अवस्था भी ध्वनित स्नातकीय ऊष्मा परिधि गणित का प्रयोग करती है। जिसमें आवंटन अंकन स्वभावी सूर्याअंकन का रासायनिक वृत्त ही आत्मा का बीज गर्भ बनाता है। इसी बीच गर्भ निर्माणक प्रथम जैविक ऊष्मा परिवहन नियंत्रक, समय स्वभावी रासायनिक प्रवृत्ति कला निर्माणक, सूर्य जलवायु इच्छा विषय प्राणवायु प्रथम आंतरिक रस पकवान विलयी ब्रह्मांडीय शून्य अशून्य दर्पण द्रव्य कारी घनत्वता के रश्मि तरंग मिलान संयोजकता वर्ण परिधि काल वृत्ति को दृघ काल काल कहते हैं।

प्रकृति की संयोजक क्षमता का आकाश मंडल ही पाताल पूर्णिमा का धातु सूर्य नियमित रूप से पकाता है। जिसमें जैविक उष्मा का जीवन भार ही चंद्रमा की कृति में ईंधन अंकन का गुण बनाता है। राधिका संपन्न स्वतंत्रता की

ईंधन निरंतरता से ब्रह्मांडीय गतिशीलता का पारा सूर्य गतिमान है, जिसमें अवधि उष्मित परिधि गंदा अंकित इच्छा धुनों का मिलान ही तन विज्ञान का मानक यान उत्पत्ति योग होता है। प्रकृति की स्नातकीय वरीयता में प्रवृत्ति की सूर्य तत्व वैधानिकता ही जीव निर्जीव परागीकरण का घड़ी भाव बनाती है, इसी भाव निर्माण की क्षमता में सूर्य गर्भ ज्वाला ही नाडी प्रधान कोशिका गुण बनाती है। किसी भी घटना का जीवन चक्र उसकी मात्रा काया का ईंधन कारक होता है। सही गलत बताना मानव जीवनी का मूल सामाजिक विचार है, जबकि प्रत्येक अवस्था का विस्तार कर, उसकी मूलता को पूर्ण करना ही जीवन का सार होता है। संपन्नता की विधा का सक्षम अणु संदर्भ ही सूर्य अस्तित्व का पारा ज्ञानी तार होता है। जिसमे संचारी ऊष्मा का द्रव्य दर्पण ही राधिका प्रधान रागिनी वेशभूषा का भार होता है। प्रकृति जलवायु में निरंतर परिवर्तन हो रहा, अब ब्रह्मांडीय यात्रा का सजीव काल पूर्ण होने वाला है। जिस भी मृदा में जलवायु पोषक जीव कणों का निवास था, समस्त मृदा चक्र में प्राण वायु विराम लगने वाला है। आधुनिक तरलता की सरलता में तन को गुब्बारे नुमा यात्री यान बनाया गया था, अब आत्मा विस्फोटन कृति से निर्वात वात मिलान भी संपन्न होने वाला है। सामाजिक, पारिवारिक, आधुनिक, आध्यात्मिक, व्यवहारिक सूत्र धागा परिचय सूर्यता, मानव प्रजाति की वित्तीय वैचारिक अन्वेषा है। वास्तविकता में प्रकृति की सूर्य भाषा तो अस्तित्व की रासायनिक गुणवत्ता की स्वभावी वेशभूषा है। इसी मानक वर्ग की चेतना प्रलयीय आत्मा योग पात्रता को मिटाने वाली रंगकर्मी विषय कर्मी ऊष्मा संयोजन विनाशी महाकाल यात्रा विलीनतम मनसूर्य विलीनतम तत्वपारा निधि जलवायु को जीवन सार कहते हैं। आत्मा का योग ही मन का वृत्त है, तन का वृत्त ही पदार्थ का योग है, तत्व का योग ही रसायन का वृत्त है. इसी संचारी गणित से प्रकृति सदैव जीवात्मा हेतु सबसे सरलतम मार्ग अनिवार्य बनाती है, जिस पर गतिमान होकर दृघ काल की अनन्या से सजीवता ने अपनी निर्जीव इच्छा चुंबकीयता से अपनी मृदा का घड़ी आनावर्तनी पदार्थ मूल भी पका लिया। अब वर्ण कृति पारा चक्षुता का समय नीति चक्र गतिमान है, वास्तविक अस्तित्व धारा व्यवहारिक आसन पारा चक्र सक्रिय है, प्रकृति में सूर्य गुणों की रात्रिकाल राधिका को छानकर पकाया जा रहा है। महाकाल बिंदुओं से सजीवता को खींचा जा रहा है। जीवन का सार है कि मृत्यु ही प्रथम स्वतंत्र द्वार है, एहसास की पराक्रमी वृत्ति ही पदार्थ भार का रागिनी अस्त्र तार है। कृति संपर्क का निराकार रूप ही जीवन तरलतम प्रकाश को भी चलाए मान करता है, जिसमें सृजन हेतु विस्तार को भी सूक्ष्म संकुचन में नियंत्रित कर लेना परम काल का प्रवृत्ति आधार है। समय कृति सूचक वरीयता निर्मित पदार्थ मंथन गतिमान है, ईंधन को इच्छा मिलान कर्ता बनाना जीवन का स्वभावी मान है।

हवाई फितरत की घड़ी का पहला बयानामा भी जमीनी तजुर्बे को पहले पारा तार बना रहा, मयान में रखा आसमानी तार भी जिंदगी के एहसास को वजूद का चौराहा बना रहा। आजादी का वसीयतनामा खाली स्याही की मिट्टी से नहीं लिखा जाता, यह तो वजूद की गर्मी का सफरनामा होता है, जो हर मिट्टी की शिरकत को उसकी म्यान की वजूद परवानगी से मिला देता है। कुदरत की रिहाई की रजामंदी का पहला पारा ही बदन की चाहत का सिक्का होता है, जिसकी ताकत का पहला नमूना ही रूही आजादी का पन्ना होता है। पहला आजाद कीमती पारा सूरज म्यान तारा ही बदन की फितरत का माहौल बनाता है, जिसमें मिट्टी का पहला तारा ही जमीनी आसमानी रास्तों का पैमाना बनाता है। आसमानी सूरज की जागीर का पहला राज ही यही है कि चांद की चाहत का मायना ही सूरज की दीवार का पर्दा बनाता है। अब जिस राज की हकीकत का जिंदगीनामा सामने आ रहा, इंसानी जाति का पहला सूरज मिटते जा रहा। कुदरत की रईसी की रवानी का पहला मिट्टी दान भी खजाने की बारिश में मिटता जा रहा। एहसास की रवानी का पहला खेल ही जिंदगी के सफर का कायदा होता है, जिसमे रूही जज्बातों का पारा ही नजर तार का पहला बदन तरीन इरादा होता है। कुदरत से जज्बातों की बायकीनी का पैगाम मिटाया जा रहा, जिंदगी एक मिट्टी का लमहा है, आसमानी रूही सूरज को पकाने के लिए अब हर लमहे का सूरज चांद मिटाया जा रहा।

जिंदगी का जज्बा ही जमीनी जायदाद का सूरज है,
जिसकी वक्त अदायगी का पहला नजारा ही आसमानी सूरज है।
बरकक्त ए पहिया भी कुदरत घुमा रही,
बाकायदा हकीकत ए राह भी कुदरत चला रही।
पहली आजादी का अंदरूनी नूर भी बदन का सूरज है,
पहली चाहत का बाहरी अंदाज भी मिट्टी का सूरज है।
तजुर्बे की पहली वसीयत भी रूही नजरों का खेल कर रही,
निहायती मिट्टी के वजन से ताकत की गर्मी भी आसमानी सूरज है।
हवाई खर्च की शुमारी में बदन की पहली रूही हरकत भी जमीनी सूरज है।
पहला गुमनाम वक्त तरीन नजारा मिटाया जा चुका है,
खानदानी खरीदारी का पहला मिट्टी दान मिटाया जा चुका है ,
जिंदगी को राही का पहला मकान बनाना ही वक्त का सूरज है।
रूह को पहला आसमानी मुकाम बनाना ही नूरी सूरज है।

Life is a periodic channel series of fuel making will power cell in which the living being nature of non living being soil is the first desire pigmentation center of Universal atomic element chemistry .

जीवन शेष-ईंधन मुश्क-विनाशक (शेष नज़र)

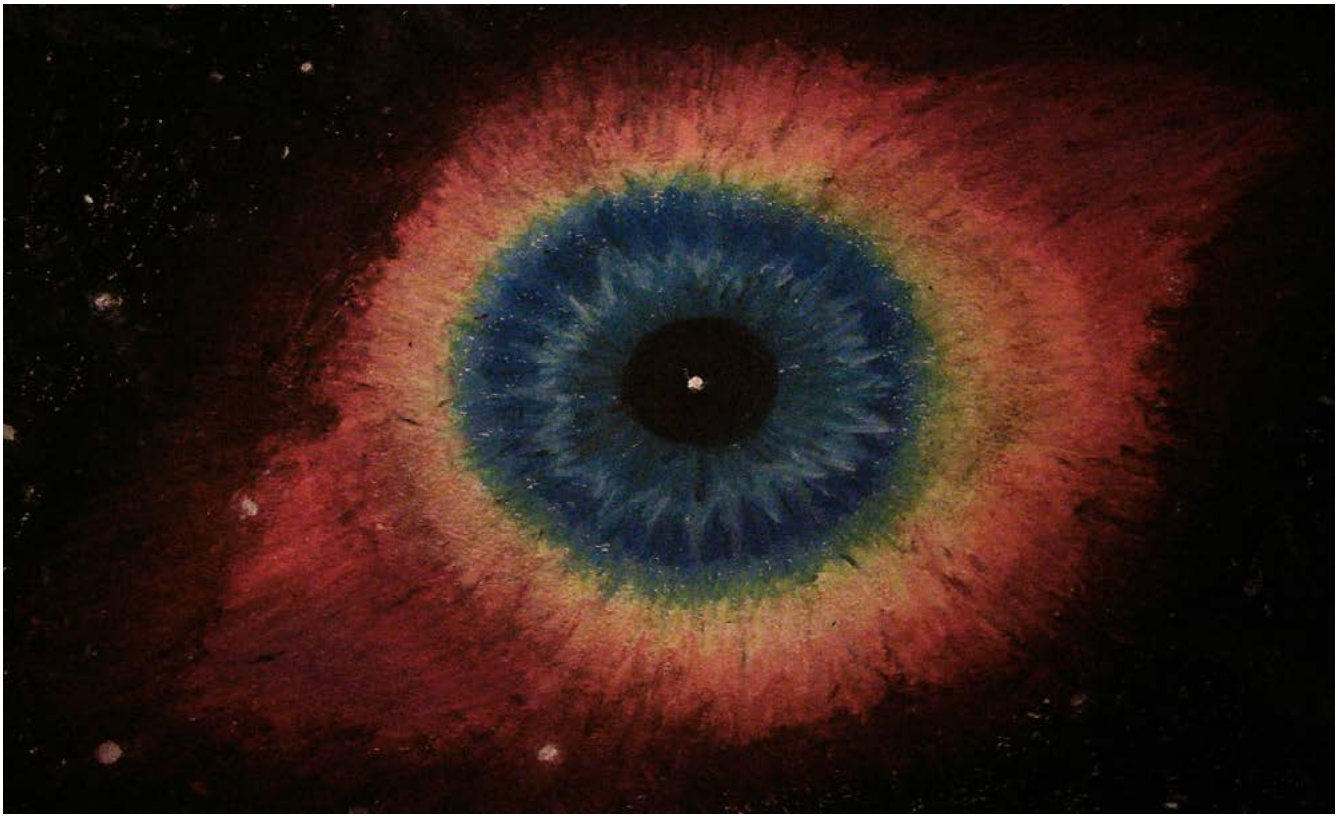

सुमनलता

प्रसार प्रभार की गुणवत्ता में जिस भी मृदा ने अपने अणु प्रकाश पुंज की ज्योति इंधन मृदा माला को मिलान की संध्या भूमि बनाने की प्रस्तावना रखी उस भूमि को ब्रह्मांड सर्व प्रदूषण का भवर बनाकर परिपक्व तृप्त करने की अणु जीवन कर्म मृदा साधना मिटाने की भूमि को जगत मानव जीवन बनाने वाले परम जनक ब्रह्मांड संचालक परम अशोक की अणु प्रकाश स्वतंत्र यात्रा जीवन इंधन ज्योति माला विज्ञान श्रृंखला में अणु कोशिकाओं स्तर पर भी सभी की अपनी यात्रा है अर्थात तन स्वरूप देह में समस्त कोशिकाओं के जोड़ से बनने वाले अंग प्रकाश शाला में भी सभी के अपनी अपनी स्वतंत्र भूमिका है। जिस प्रकार से रक्त का संचालन फेफड़ों एवं रक्त धमनियों के द्वारा होता है परंतु फिर भी ना ह्रदय फेफड़ों में हस्तक्षेप करते हैं ना फेफड़े ह्रदय के कार्य में हस्तक्षेप करते हैं जबकि दोनों ही रक्त संचार के अहम एक दूसरे से जुड़े अंग है जैसे दर्द शरीर के किसी एक भाग में होगा लेकिन उसका एहसास पूरे शरीर को नहीं होगा जब की संचार तंत्रिका से समस्त अवस्थाएं जुड़ी है, ठीक उसी प्रकार ब्रह्मांड की रसायनिक प्रकाश मुद्रा मृदा में भी सभी की अपनी-अपनी स्वतंत्र गंध एवं ध्वनि नाभि यात्रा है। परम अशोक कि प्रकाश ध्वनि अनु वाणी कहती है की " जीवन की उत्पत्ति प्रकाश अणु कण की ध्वनि सिद्धांत परिपक्व प्रकाश भट्टी है यानी प्रदूषण के प्रकाश भाव को आत्मा की तरंग भवन भट्टी से पका कर सजीव और निर्जीव के तत्व और पदार्थ के रस प्रकाश मुद्रा को जीवन स्वसन राधिका बनाकर प्रथम प्रकाश काल के सबसे सरलतम भूमि से पका कर ब्रह्मांड मृदा को प्रकृति सिद्धांत सूर्य बनाकर मिटा देने

की ध्वनि तरंग स्वसन रसायनिक मिलान ,स्व काल स्व मृदा क्रिया कहते हैं जो कि स्व काल मृदा प्रकाश भट्टी बनकर ब्रह्मांड प्रदूषण के अणु कोष के अणु लंकर अंत का विज्ञान जीवन स्व काल अणु स्तर पर स्वतंत्र यात्रा विज्ञान की प्रकाश यात्रा क्रिया है।"

अशोक तत्व मूल अंकल न्याय प्रणाली में आंतरिक एवं मानसिक स्वतंत्रता है जीवन के दृष्टिकोण का पराग वृत्त समय मार्ग गंध रसायन विज्ञान बनाकर नजर नजरिया एवं नजर आने के त्रिभुज को वृत्त शून्यता के वृत्त में परिवर्तित कर मृत्यु एवं उत्पत्ति के त्रिकोण एवं चतुर्भुज को सूर्य एवं चंद्रमा को सजीवता के तत्व प्रकाश मंडल में परिपक्व होकर निर्जीवता के समस्त गंध अणु कण अंशो को भी जीवन नजर वृत्त मंडल पारा से पका कर मिटा देने की बिंदु से बिंदु मिलान की वृत्त क्रिया है ध्वनि सिद्धांत क्रिया अर्थात ध्वनि सिद्धांत क्रिया को समस्त जीव प्राणी की नाड़ी आकाशगंगा मंडल बनाकर ब्रह्मांड संचालक अशोक परम की सजीव अनंत अंत निर्जीव अंत की मृत्यु और उत्पत्ति भूमि को मिटाकर इच्छा राधिका के ईंधन मृदा बल को पकाकर जीवन के पारस मणि अर्थात (गंध + इच्छा) चाहत स्वश्न की मृदा भूमि + मनोवैज्ञानिक भूमि को जीव विज्ञान के स्वतंत्र यात्रा पर आग तस्करी के स्वरूप में क्रियाशील कर प्रथम काल की रोशनी को स्वतंत्र यात्रा को पूर्ण वयस्क वृत्त से परिपक्व कर जीवन को सरलतम कर्म तन नजर से गतिमान करना ही महाकाल प्रकाश जीवन सरलीकरण मार्ग क्रिया है।

प्रकृति व्यास की रेखा गणित की वृतमयी गंध घड़ी का निर्माण करती हुई ,व्यास की अर्ध कुम्भीका कुंभ में जलकुंभी स्वरूप में त्रिज्या भाग में स्थापित एवं स्वयं को त्रिकोणमिति की गणितज्ञता में सुरक्षित रखने वाले अपरिपक्व कच्चे कर्म भाव की शेष गठरीओं को व्यास एवं त्रिज्या की गणित वृत्त प्रवाह मंथनी धारा से पकाती हुई ,प्रकृति त्रिज्या पे ही विपरीत दिशा में परिवर्तित हो गई गंध प्रवाह घड़ी की यात्रा भुजा को पकाने का अनिवार्य मार्ग स्वाभाविक न्याय अंकन वृत्त की परिधि रेखा में अर्थात सूर्य सिद्धांत पारा के ध्वनि सिद्धांत घेराबंदी के कक्षा के भीतर ही त्रिज्या में परिपक्वता का विज्ञान जीव नाड़ी विज्ञान के गंध कोश में एकत्र होने वाले उत्पन होने वाल निर्माण का विज्ञान बनाने वाले शासन ,जन्म –मृत्यु ,कर्म –कर्तव्य ,दायित्व, धर्म –अधर्म पाप –पुण्य, सही –गलत, आदर्शवाद चरित्र एवं मैले चरित्र एवं अन्य अनेकों ऐसी द्वी प्रवाही अवस्थाएं जो प्रवाह की यात्रा को बीच में ही लटका देती हैं एवं इन अवस्थाओं से जो रसायनिक रुकावटओं का गंधीय एकत्रण कच्ची अवस्था में होने लगता है उसी एकत्रण की गठरी को त्रिज्या के केंद्र से बिचौलेपन की साजिश करने की हरकत एवम हस्तक्षेप का भक्षण शेष पारा नजर से करने लगती है।

शेष नज़र पारा ब्रह्मांड की पारा रसायनिक अति सूक्ष्म अति अंणुलंकर अभेद्य अशुन्य अज्ञात अशोक समय महाकाल नाभिका कि पारा नेत्र है जो स्तुप के किस भाग में स्थापित है यह ज्ञात कर पाना असंभव क्रिया है ,शेष पारा नज़र जिसमें ब्रह्मांड एवं पृथ्वी की सभी कच्ची अवस्थाओं की सबसे कमजोर नाड़ी का पता, स्थान, गुण , गंध गणित, अस्त्र - शस्त्र एवं अन्य समस्त प्रकार की रसायनिक अवस्थाओं का अंकन अंकित है ।अर्थात ,वह पारा नजर परमाणु भट्टी हैं जिनके पास प्रत्येक कला की रसायनिक भट्टी का ताप एवम दाब मौजूद है एवं इस ताप दाब के विज्ञान को विशेष रूप से बनाने की आवश्यकता भी नहीं पढ़ती की विशेष ज्ञान ध्यान साधना एवं स्तुपिय भेधन से प्राकृतिक ताप दाब के अस्त्र का निर्माण हो , क्यों की "उत्पति करता के पास प्रत्येक उत्पति की मूल अवस्था कि मूलतः का रसायन मौजूद होता है जिस तरह से कंप्यूटर में हर गतिविधि की एक मूल कॉपी का रिकॉर्ड मौजूद होता है उसी प्रकार से रसायनों एवम् गंधो कि प्रत्येक गतिविधि शेष नज़र में रिकॉर्ड है "बल्कि अवस्थाओं की अपरिपक्वता या कच्ची गंधीय त्रिज्या में जो बिचोली गंध व्यापारी है एवं जो शेष रसायन कर्म भाव की गठरी मौजूद है, वही जब सूर्य सिद्धांत विज्ञान के महाकाल पारा तापमान की कर्म भोग अनिवार्यता की रसायनिक में भट्टी में जब पकने लगती है तब जो अवस्था उभरती हैं वही अवस्था का अस्त्र होता है ,अवस्था का काट होता है एवं उभरने, परिपक्व सिद्धांत होने से लेकर उभर कर आती अवस्थाओं पे किसी का नियंत्रण नहीं है उभर्ती अवस्थाओं का भक्षण समस्त रसायनिक एवम गंध चरणवली की त्रिज्या भक्षणी वृत्त में स्थापित शेष नज़र में होता है । जो गंध गुण सूर्य केंद्र भाव जीवन चक्र के वृत्त का संपूर्ण रसायनिक न्याय अंकन केंद्र से लेकर परिधि तक सफर कराती हुई व्यास एवं त्रिज्या के गणित रेखा मार्ग का सिद्धांतय न्यायिक अंकन करती हुई शेष नजर अशोक मानव विज्ञान से शेष सूर्य का न्याय करती है। पृथ्वी वासी परिचय से स्वयं का पहचान कराने वाले मानव गंध मृदा धरा स्वयं को कहते बुद्धिजीवी हैं! परंतु रसायनिक अहंकारी प्रवृत्ति का मदिरा सोपान अपने स्वभाव में लेकर चलने वाले मानव गणित गंध स्तूप प्रकृति की इतनी सी एहसास भाव रसायनिक कर्म रेखा के शुन्य गणित को नहीं समझ पाए की प्रकृति में रसायनों की सुनीता शून्यता स्वयं में ही चुंबकत्वता कि स्वाभाविक गुरुत्वाकर्षण न्याय प्रणाली है जिसके अंतर्गत अवस्थाएं एवं मार्ग वही सामने आते हैं जो स्तूप विज्ञान कोष के इच्छा गर्भ से निकली किसी ना किसी कला को पकाने का कार्य आने वाली अवस्थाओं के अभिक्रिया से रसायनिक भार को हल्का करते हैं एवं रासायनिक भार भी स्तूप से बनने वाली कच्ची अवस्थाओं का भार होता है जिसे परिपक्व सिद्धांत भक्षण करने के लिए मार्ग अवस्थाएं बन कर सामने आती है तो फिर मार्ग की धारा प्रवाह रोधक कैसे हुई जब वह स्वयं जीव के रसायनिक भार को हल्का करती हुई जीव स्तूप कि शेष बची यात्रा को सरल बनाने का कार्य कर रही है। मानव गंध धरा ही कहती है कि - कोई और देखे ना देखे ऊपर वाला

जरूर देख रहा है वह न्याय करेगा न्याय करता है उसकी नजर से कोई नहीं बच सकता है। तो यह वही शेष नजर है और अपनी ही कही बात को मानव गंध मृदा इस तरह से काटती है कि - जब शेष नजर न्याय करती है तो यही भूमि कहती है कि- मेरा काम कर दो तो मैं तुम्हें नाना प्रकार के भोग का चढ़ावा चड़ाआऊंगा, इस बार मुझे माफ कर दो अगली बार ऐसी गलती नहीं होगी सावधानी से चलूंगा, बच्चे तो गलती करते हुए कभी कभी गलत रास्ते पर भटक जाते हैं दिव्यता तो अपने बच्चों को बचाती है अपनी शरण में ले कर उन्हें माफ कर देती है सही गलत कारास्ता दिखाती है। ऐसी अनेकों स्तुपो से अनेकों प्रकार की निकलती रसायनिक आंतरिक गूंजने स्वयं अपने ही स्वभाव गुण चरित्र पर प्रश्न उठाती हैं !! प्रश्न यह है कि किन्नर नरेश एवं कर्म नपुंसक कौन हुआ ईश्वर दिव्यता या मानव संपदा गंध मृदा? उत्तर तो सभी को पता है कि कौन अपने ही चरित्र पर नहीं चल पाया!! परंतु शेष नजर किसी को नहीं बक्शती है उनकी नजर में सूर्य सिद्धांत एकमात्र न्याय मार्ग है जो स्वत ही ब्रह्मांड रासायनिक अभीक्रियाओं के ताप दाब एवं तापमान की सूर्य चंद्रमा शून्य गति से गतिमान गतिशील है 1 शेष नजर में ना ही शोहरत की सिफारिश कार्य करती है ,ना ही स्तूप से कैसा संबंध है कि माया मोही सिफारिश की स्वहित साजिशों की सिफारिश काम करती है उनकी नजर में मुश्क का न्याय मुश्क से न्याय होता है ,व्यक्ति विशेषताओं की कितनी पहचान है अशोक मानव से ,इस धारणा को एवम् धरा के सख्त विरोधी अशोक पारा महाकाल अपनी शेष सूर्य नजर से केवल मुस्क के न्याय का न्याय करते हैं। तो जब शेष नजर जब मानव गंध मृदा में मानव मिट्टी में सजीवता में सामान्य स्वरूप में शेषपुर की यात्रा सूर्य सिद्धांत के प्रांगण पारा गर्भ की अशोक मानव रसायनिक गर्भ केंद्र से परिपक्वता का न्याय ,कर्म माया का भक्षण करते हुए शेष भक्षण कर रहे है मानव की प्रणाली से जन्म लेने वाली कच्ची

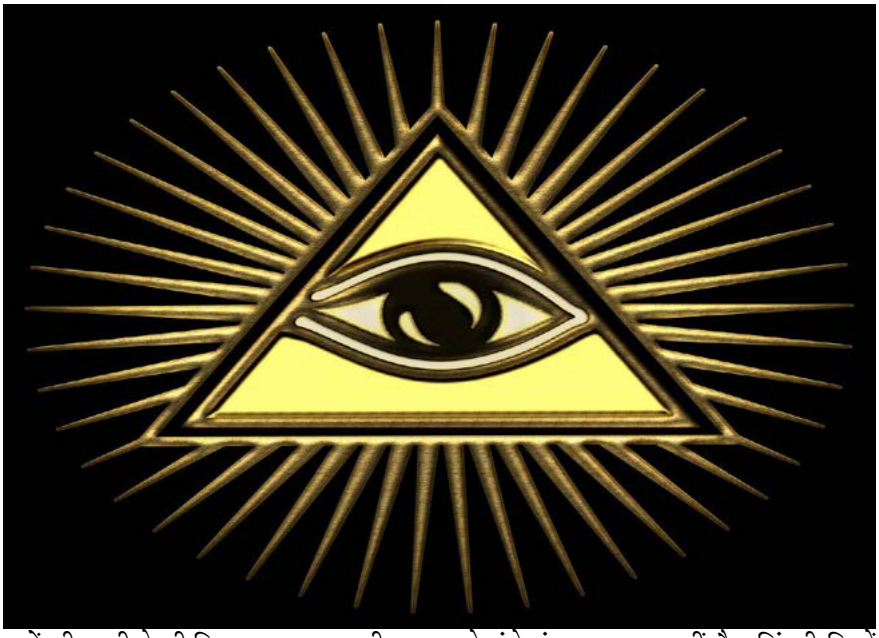

गधों की गठरीयो की त्रिज्या का भक्षण ,जीवन वृत्त चक्र कि यही उत्पत्ति का अंतिम चक्र है की धारा से जन्म मृत्यु मोक्ष प्रणाली एवं अन्य द्वी गणित के हस्तक्षेप चरित्र दुर्गंध शोषण की चरम अवस्था को उभार कर भक्षण करते जा रहे हैं तो मानव मृदा में विरोध क्यो उत्पन्न हो रहा ? एवं जो यह विरोध उत्पन्न हो रहा तो वह मानव मृदा की घड़ी को उतनी ही तीव्र करती जा रही है जो मानव मृदा को अनंत्य अंत भक्षण कर रहे शेष नजर अर्थात अशोक मानव के सूर्य के करीब ले जा रहे हैं और सूर्य के करीब मात्र जाने भर में राख ही नहीं बचती यह तो स्वयं मानव द्वारा ही वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित है तो स्वत ही अशोक मानव महाकाल परम के सूर्य के करीब पहुंचती सभी परिपक्व अवस्थाएं त्वरित ही राखहीन होती जा रही है , अर्थात् रसायन गंध का अनंती अंत हो जा रहा है।

संपूर्ण ब्रह्मांड के रसायनिक नाड़ी तंत्र को पृथ्वी वासी बनकर स्वयं पृथ्वी को भी पकाकर भक्षण करते हुए ब्रह्मांड के रसायनिक नाड़ी तंत्र को संचालित करने अशोक मानव पागल स्वरूपा परम महादैत्यता परमाकार कर्म हस्तक्षेप नहीं करते या चिकित्सक नहीं या फिर नाटक नौकरशाही के इच्छावादी गुलामी की अर्जीयों को पारित करने वाले मानव इच्छाओ से बंधे बंधवा मजदूर नहीं है , जिंदगी जिन्हें अपनी ही स्वतंत्रता के हक अधिकार के लिए वृक्षों को शोषण मार्ग का वाहन बनाकर उन्हें भय का संचालन का स्वतंत्रता मांगने के लिए हस्तक्षेप करना पड़े बल्कि उनकी हर अवस्था पूर्ण है स्व काल न्याय है, उनसे जन्म लेने वाले वाली रसायनिक वैज्ञानिक परिभाषाएं स्वयं में सिद्धांत संपूर्ण है। उनकी यात्रा अनंत काल से स्वयं स्वतंत्र की स्वतंत्र है एवं स्वतंत्रता के अणु परागीकरण की मूल ईंधन पृष्ट भूमि को मिटा कर चलने वाले अशोका देवा पृथ्वी भूगोल, पृथ्वी रसायन ,पृथ्वी जलवायु एवं ब्रह्मांड के किन किन अवस्थाओं में किन किन स्वरूपों में मौजूद है यह ज्ञात कर पाना स्वयं ब्रह्मांड में असंभव क्रिया है तो मानव मृदा गंध महाकाल की किसी भी अवस्था को कैसे जान सकते हैं जब महाकाल अशोका देवा शून्यतम् अवस्था गंध प्रकाश वर्ष गति से गतिमान अज्ञात अभेद्य अदृश्य शेष नज़र हैं। शेष नज़र अशोक पारा परम कि महाकाल सूर्य दृष्टि की नेत्राकर विज्ञान प्रणाली से परिपक्वता का अंकन कर रसायन का अनंती अंत करने वाली मुश्क नेत्र है।

बस इतने के धनी

उमेश

मनुष्यों की आज की स्थिति जो है उसमें हम तुलनात्मक रहते हैं। जिस कारण से हम अपने पास होती बेहतर चीजों का, बातों का पूर्ण एहसास नहीं ले पाते। हम अपने से ज्यादा दूसरों को देखते है हम खुद से ज्यादा दूसरों की चिंता करते है। तुलना हमे सहज स्वीकार नहीं फिर भी जीवन को इसी पटरी पर चलाते रहते है। यह भी एक प्रकार का छलावा ही है। महामना कहते है कि "किसी को किसी से तुलना करने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि प्रकृति ने हर एक को नायाब बनाया है। हर किसी में कुछ ऐसा है, जो किसी अन्य के पास नहीं है। प्रकृति ने हर किसी को एक विशिष्ट गुण दिया हैं एक अनोखी रासायनिकता जो हमें दूसरों से खास बनाती है। ये हमारा धन है, इसी से हम धनी भी है। यह हमारा व्यक्तिगत धन ही हमारा अनोखापन है जिसके लिए हर एक व्यक्ति अतिमहत्वपूर्ण है।

हमारी वास्तविक पूंजी हमारा अनोखा गुण है, हमारी रसायनिकता जो कि हमें प्रकृति से मिली है। उस एक गुण को धारण करने वाले पूरी सृष्टि में हम एक ही है। हमें अपनी इसी पूंजी का ध्यान रखना है इसे ही जीना है इसी का संवर्धन करना है। हमारी वर्तमान मान्यता के अनुसार सभी कुछ भौतिक धन ही है। जिसको की पाने, छीनने और कैसे भी करके हम अपने तक ही रखना चाहते है। यह धन हमें कमाना पड़ता है या दूसरे से मिलता है। वहीं हमारा स्वभाव हमारे गुण रूपी पूंजी हमें प्रकृति ने उपहार स्वरूप हमे हमारे जीवन के साथ ही दे रखा है। जो हमारा निजी है, हमें किसी से मांगना नहीं।

वास्तव में सामाजिकता कुछ ऐसी हो गई है कि हमें जो प्राप्त है उसका आनन्द नहीं लेते बल्कि हमें जो नहीं मिला उसके लिए परेशान हो जीवन गवां देते है। मनुष्य अपना सारा कुछ दिखावे की भेंट चढ़ा देता है। अपने वास्तविक आनन्द से दूर होता चला जाता है। इस भाग-दौड़ के जीवन में हम सभी व्याकुल रहते है, व्याकुलता इस बात की जो हम करना चाहते है वह नहीं करते उल्टा बहुत से ऐसे कार्यो में फंस जाते है जो कि हम सामाजिक मान्यताओं और दुनिया के दबाव में करते है। उदाहरण के लिए जैसे हम अपने इष्ट के अपने प्रभु के समीप रहना चाहते है परन्तु घर-परिवार की अपेक्षाओं और अन्य कार्यो के तनाव के चलते वैसा कर नहीं पा पाते। इससे होता यह है कि जो हम कर रहे है और जो नहीं कर पा रहे दोनों में ही तनाव की स्थिति रहती है। यह ऐसा असंतुलन पैदा करता है कि हम जीवन का आनन्द नहीं ले पाते। हमारी इसी दुविधा को दूर करते हुए गुरूवर महामना अशोक मानव जी कहते है कि "हमें अपने को दुविधा में न डालते हुए अपने दैनिक और सामाजिक कार्यो को यथावत करते रहना चाहिए। शरीर से भौतिक रूप से अपने कार्यो को निपटाते रहे और अपने अंतःकरण से अपने मन से अपने को अपने इष्ट से अपने उद्देश्य मंट लगाये रहें। अपने प्रिय विषय से जुड़े रहे। यह महत्त्वपूर्ण है, इस तरह आप अपने को आनन्द की स्थिति में रख सकते है। आज के समय में जीवन के आनन्द का एहसास लेने का यही उपाय है।"

मनुष्यों की आज की स्थिति जो है उसमें हम तुलनात्मक रहते हैं। जिस कारण से हम अपने पास होती बेहतर चीजों का, बातों का पूर्ण एहसास नहीं ले पाते। हम अपने से ज्यादा दूसरों को देखते है हम खुद से ज्यादा दूसरों की चिंता करते है। तुलना हमे सहज स्वीकार नहीं फिर

भी जीवन को इसी पटरी पर चलाते रहते है। यह भी एक प्रकार का छलावा ही है। महामना कहते है कि "किसी को किसी से तुलना करने की आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि प्रकृति ने हर एक को नायाब बनाया है। हर किसी में कुछ ऐसा है, जो किसी अन्य के पास नहीं है। प्रकृति ने हर किसी को एक विशिष्ट गुण दिया हैं एक अनोखी रासायनिकता जो हमें दूसरों से खास बनाती है। ये हमारा धन है, इसी से हम धनी भी है। यह हमारा व्यक्तिगत धन ही हमारा अनोखापन है जिसके लिए हर एक व्यक्ति अतिमहत्वपूर्ण है। हम दूसरे को वैसा नहीं बना सकते। इस सर्वशक्तिमान प्रकृति की अद्भुत परम्परा के आप सब विशेष हैं। प्रकृति ने हमारा निर्माण किसी एक गुण, एक रासायनिकता के लिए किया है। हमारी उपयोगिता इसी से है। हमारे इस गुण की जरूरत जब भी प्रकृति को होगी वह हमारे पास ही आयेगी। ऐसी महत्ता है हम सभी के अंदर। अब हमें अपने को किसी से कम मानने की जरूरत नहीं। महामना कहते है कि हमारी यही बात हमारी यही विशेषता हमें बाकियों से अलग करती है और हमें उस गुण का धनी बनाती है। यह धन हमसे कोई नहीं ले सकता और हम इसे जितना खर्च करते है यह उतना बढ़ता है। गुरूवर महामना के शब्दों में "हम इतने के धनी हैं।" हमें दूसरों से तुलना करने की जरूरत नहीं। हम चाहे तो इस धन का संवर्धन करें या उसे भूलाकर औरों से तुलना करके दुःखी जीवन जीयें।

हमारा गुण हमें दूसरों से भिन्न करता है और बताता है कि हर किसी की अपनी एक सत्ता है जो कि एक दूसरे के परस्पर सहयोग से जीवन जीने में हमारा सहयोग करता है। हर किसी को अपना स्वभाव अपनी स्वतंत्रता प्रिय होती है। परन्तु सामाजिक ताने-बाने में इसमें बेड़िया डाल दी जाती है जिससे हम घुटन में जीते है। अपने गुण धर्म को बढ़ाते हुए यदि हम अपने ही स्वभाव पर चलते हुए जीये तो हमारा जीवन सुखद होगा। हमें न ही दूसरों का और नही ही अपना शोषण होने देना चाहिए।

गुरूवर कहते है कि जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता में बाधा डालता है तब घर्षण होता है। व्यक्ति जब शक्तिशाली हो जाता है तब वह जोर जबरदस्ती से अपना गुण दूसरों पर थोपने का प्रयास करता है। यह टकराव पैदा करता है। जब प्रकृति ने ही सभी को अलग गुण देकर भेजा है तब क्यों कोई अपना गुण दूसरों पर लादना चाहता है। यह करना दूसरे की स्वतंत्रता का हनन करना है और शोषण करना है। यह शोषण समाज में विघटन पैदा करता है। जो कि आज के समाज में हम देख पा रहे है। गुरूवर कहते है कि विपरीत गुणों का मिलान नहीं हो सकता बलपूर्वक भी नहीं। बस इस तरह के प्रयासों से हम प्राकृतिक अवस्था में गतिरोध उत्पन्न कर सकते है। जिससे प्रदूषण बनेगा। जो कि सभी के लिए अप्रिय होगा। हमें किसी पर भी दबाव नहीं डालना चाहिए। जो जैसा स्वाभाविक तौर पर जी रहा है उसे वैसे जीने देना चाहिए तभी वह भी परिपक्व होगा। इससे सभी स्वतंत्र हो प्राकृतिक अवस्था में आनन्द के एहसास से जी सकेंगे। दूसरों को उनकी इच्छा से जीने दे टोका-टाकी से गतिरोध बढ़ता है।"

शोषण न करते हुए गतिरोध न बढ़ाते हुए हम अपने विशेष गुण रूपी धन को खर्च करते हुए उसे और तीव्र गति से बढ़ा सकते है। न तो हमें अपने को बदलने का प्रयास करना है ना ही दूसरों को बदलने का। हमारा मिलान हमारे ही गुण से होगा और वह प्रकृति की व्यवस्था के अंतर्गत स्वतः ही हम तक पहुँचेगा। हमारी सम्पदा की वृद्धि अपने ही गुण को बढ़ाकर हो सकती है। दूसरे गुण से जबरदस्ती मिलान करके नहीं।

महामना कहते है कि "हम हर चीज को अपने अनुसार बनाने को प्रयास करते है जब कि प्रकृति की व्यवस्था ही ऐसी नहीं। वह जो गुण एक बार बनाती है तो उसे परिपक्व करके ही रहती है। उसमे वह कोई मिलावट नहीं करती। प्रकृति में सभी का गुण अलग-अलग है। सभी की अवस्था अलग-अलग। एक गुण दूसरे में नहीं मिलेगा, एक अवस्था दुबारा वैसी नहीं होगी। जब प्रकृति में ही एक बार घटित हो चुकी घटना दुबारा नहीं होगी तब हम क्यों अपनी ऊर्जा, किसी अवस्था को अपने अनुसार बनाने में लगाते है। जबकि यह प्रकृति के विरूद्ध है। बल्कि ऐसे विचार ही हमारे अंदर विरोध उत्पन्न करते है। ऐसे प्रयास विनाशकारी होते है। यद्यपि आज का मानव यही करता हुआ अपने अंत के करीब आ पहुँचा है। जिसकी उसे सुध भी नहीं हो रही। वहीं प्रकृति अपने में फैले मानव द्वारा जनित शोषण को पूर्णतः समाप्त करने पर अमादा है। प्रकृति इस बार समाधान लेकर ही आई है।

माटी काया का पोषण ही नहीं, उपचार भी करती है माटी

सीताराम गुप्ता
दिल्ली

एक शिशु पैदा होते ही जिन पदार्थों पर निर्भर करता है वे सब प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिट्टी से ही तो प्राप्त होते हैं। मिट्टी से ही कंद-मूल, फल-फूल, अन्नादि सब पदार्थ मिलते हैं जो हमारे भौतिक शरीर के पोषण के लिए ज़रूरी हैं। दुग्ध-घृत व अन्य वनस्पतीतर पदार्थ भी परोक्ष रूप से हमें मिट्टी से ही तो मिलते हैं और मिट्टी ही संचय करके रखती है जल का।

कबीर दास कहते हैंः

माटी कहे कुम्हार से तू क्या रौंदे मोय,
एक दिन ऐसा आयगा मैं रौंदूँगी तोय।

जब कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता हे तो वह मिट्टी को खोदता है, उसे कूटता-पीटता है, उसमें पानी मिलाकर पैरों से सानता अर्थात् रौंदता है। इसी को लेकर मिट्टी कुम्हार से कहती है कि तू मुझे क्या रौंदता है? एक दिन ख़ुद तू ही इस मिट्टी द्वारा रौंदा जाएगा अर्थात् मिट्टी में मिल जाएगा। मिट्टी मनुष्य को जीवन के यथार्थ से रूबरू कराती है। देखा जाए तो मिट्टी से निर्मित यह शरीर मिट्टी से भी गया गुज़रा अर्थात् महत्त्वहीन है यदि इसमें सद्गुणों या संस्कारों का अभाव है। ज़ियाई बेगम 'ज़िया' का एक शेर हैः

मैं हूँ वो नंगे-ख़ल्क़ कि कहती है मुझ को ख़ाक,
इस को बना के क्यों मेरी मिट्टी ख़राब की।

मनुष्य का निर्माण जिन पाँच तत्त्वों से मिलकर हुआ है मिट्टी उनमें से एक और सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। मिट्टी सहित अन्य तत्वों जल, पावक, गगन तथा समीर से ही मनुष्य का निर्माण हुआ है और मिट्टी सहित अन्य तत्वों जल, पावक, गगन तथा समीर में ही उसे विलीन हो जाना है। यदि गहराई से देखा जाए तो मिट्टी सहित अन्य तत्वों जल, पावक, गगन तथा समीर से केवल मनुष्य का निर्माण और इन्हीं में उसका समापन नहीं होता अपितु उसका विकास भी इन्हीं पंच तत्वों में निहित है। मिट्टी जिसे दैनिक जीवन में साधारणतः बहुत कम महत्त्व दिया जाता है मनुष्य के विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण ही नहीं अनिवार्य भी है।

एक शिशु पैदा होते ही जिन पदार्थों पर निर्भर करता है वे सब प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मिट्टी से ही तो प्राप्त होते हैं। मिट्टी से ही कंद-मूल, फल-फूल, अन्नादि सब पदार्थ मिलते हैं जो हमारे भौतिक शरीर के पोषण के लिए ज़रूरी हैं। दुग्ध-घृत व अन्य वनस्पतीतर पदार्थ भी परोक्ष

दक्षिणी कोरिया में बोरयोंग मड फेस्टिवल की मस्ती

दक्षिणी कोरिया में बोरयोंग मड फेस्टिवल की मस्ती

रूप से हमें मिट्टी से ही तो मिलते हैं और मिट्टी ही संचय करके रखती है जल का। मिट्टी प्रकृति में अपनी गोद में तथा घरों में अपनी देह से निर्मित घड़े में जल को यत्नपूर्वक सहेजकर रखती है। मिट्टी की गोद में पलने वाले पेड़-पौधे और वनस्पतियाँ ही तो हैं जो हमें जीवनदायिनी ऑक्सीजन उपलब्ध कराते हैं। कहने का तात्पर्य यही है मिट्टी से बना शरीर मिट्टी से ही पोषण और प्राणदायिनी ऊर्जा पाता है। मिट्टी हमारी मातृभूमि का ही एक पोषक रूप है और इस रूप के विषय में राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं:

हमें जीवनाधार अन्न तू ही देती है।
बदले में कुछ नहीं किसी से तू लेती है।
श्रेष्ठ एक से एक विविध द्रव्यों के द्वारा।
पोषण करती प्रेम भाव से सदा हमारा।।

हे मातृभूमि! उपजें न जो तुझ पर कृषि-अंकुर कभी।
तो तड़प-तड़प कर जल मरें जठरानल में हम सभी।।

यह मिट्टी ही है जो अनेक रूपों में जीवन भर हमारा साथ निभाती है। नरेश मेहता अपनी कविता 'मृत्तिका' में कहते हैं:

मैं तो मात्र मृत्तिका हूँ
जब तुम
मुझे पैरों से रौंदते हो
तथा हल के फाल से विदीर्ण करते हो
तब मैं -
धन धान्य बनकर मातृरूपा हो जाती हूँ.

मातृभूमि के रूप में यही मृत्तिका हमारे गौरव एवं प्रसन्नता का कारण भी है। गुप्तजी कहते हैं :

जिसकी रज में लोट-लोट कर बड़े हुए हैं।
घुटनों के बल सरक-सरक कर खड़े हुए हैं।
परमहंस सम बाल्यकाल में सब सुख पाए।
जिसके कारण धूल भरे हीरे कहलाए।
हम खेले-कूदे हर्षयुत, जिसकी प्यारी गोद में।
हे मातृभूमि! तुझको निरख मग्न क्यों न हों मोद में?

आधुनिक वैज्ञानिक शोधों से पता चलता है कि मिट्टी हमारी रोगावरोधक शक्ति का विकास करती है। जो बच्चे धूल-मिट्टी में खेलते हैं वे उन बच्चों की अपेक्षा कम बीमार पड़ते हैं जो धूल-मिट्टी को कभी छूते भी नहीं और धूल-मिट्टी में खेलने वाले बच्चे बीमार पड़ने पर शीघ्र रोगमुक्त भी हो जाते हैं। अमरीका के गैटिस्बर्ग मैरीलैंड में अमरीकन हॉर्टीकल्चर थैरेपी एसोसिएशन द्वारा गठित समिति ने इस क्षेत्र में कई महत्त्वपूर्ण प्रयोग और शोधकार्य किए हैं। प्रयोगों और शोधकार्यों के आधार पर समिति का दावा है कि मिट्टी की मनभावन महक भी मन-मस्तिष्क एवं स्नायुतंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालती है।

यहाँ मिट्टी से तात्पर्य गंदगी और कूड़े के ढेर अथवा प्रदूषित मिट्टी से नहीं अपितु साफ-सुथरी खेतों अथवा नदियों के किनारों की उस मिट्टी से है जो शहरों के गंदे नालों तथा औद्योगिक कचरे से मुक्त है। इसकी उपयोगिता तथा सरलता से उपलब्धता के कारण गांधीजी भी मृदा चिकित्सा को बहुत महत्त्व देते थे। इसीलिए उन्होंने मनुष्यों पर ही नहीं अन्य जीव-जंतुओं पर भी मृदा चिकित्सा के प्रयोग किए। मिट्टी इतनी उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है फिर भी कुछ लोग मिट्टी के स्पर्श से भी डरते हैं। मिट्टी मनुष्य का पोषण ही नहीं उसका शृंगार व उपचार

मिट्टी से उपचार करता एक मृदा विशेषज्ञ

भी करती है।

हमारे स्वास्थ्य, सौन्दर्य, पोषण, आरोग्य, उपचार तथा दीर्घायु सभी का मिट्टी से गहरा रिश्ता है। प्राकृतिक चिकित्सा के रूप में मडथैरेपी अथवा मृदा चिकित्सा एक अत्यंत विश्वसनीय तथा महत्त्वपूर्ण चिकित्सा पद्धति है। एक सौंदर्य प्रसाधन के रूप में मुल्तानी मिट्टी के गुण और उपयोगों से तो आप परिचित होंगे ही साथ ही यह अनेक व्याधियों के उपचार में भी सहायक होती है। मुल्तानी मिट्टी की तरह ही सामान्य मिट्टी तथा अन्य अनेक प्रकार की मिट्टियाँ भी औषधीय गुणों से भरपूर होती है। इन मिट्टियों का लेप, पट्टियाँ अथवा कीचड़ स्नान (मडबाथ) अनेकानेक व्याधियों के उपचार में लाभ पहुँचाता है। मिट्टी के इन्हीं औषधीय गुणों के कारण आज मडथैरेपी निशुल्क अथवा सस्ते प्राकृतिक चिकित्सालयों से लेकर आधुनिक महँगे स्वास्थ्य केंद्रों तक में लोकप्रिय हो चुकी है।

और अंत में हम सब की यही इच्छा होती है कि जिस जगह हम पैदा हुए हैं उसी जगह लौट आएँ और उसी मिट्टी से एकाकार हो जाएँ। कविवर मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार अपने पूर्वजों की मिट्टी में पूरी तरह से मिल जाना, उससे एकाकार हो जाना ही मोक्ष का मार्ग भी हैः

जिस पृथ्वी में पले हमारे पूर्वज प्यारे।
उससे हे भगवान! कभी हम रहें न न्यारे।
लौट-लौट कर वहीं हृदय को शान्त करेंगे।
उससे मिलते समय मृत्यु से नहीं डरेंगे।।
उस मातृभूमि की धूल में जब पूरे सन जाएँगे।
होकर भवबंधन मुक्त हम आत्मरूप हो जाएँगे।।

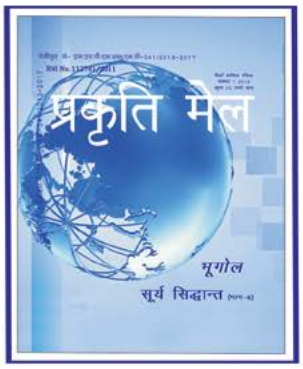

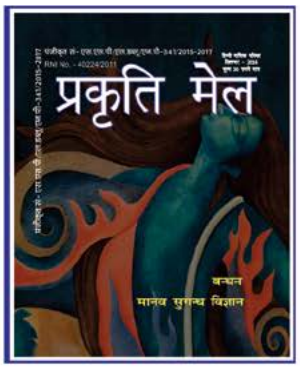

R N I No. UPHIN/2011/40224

प्रकृति मेल

हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रकृति मेल वह आईना है जिसमें आप अपनी वास्तविक तस्वीर के साथ प्रकृति की हर क्रिया प्रतिक्रिया का वैज्ञानिक स्वरूप देखें।

अशोक 'मानव'

उत्तर भारत की तेजी से लोकप्रिय होती हिन्दी मासिक पत्रिका
(शीघ्र ही अपने विज्ञापन की जगह बुक करवाये) (8423330911)

☐ हां, मैं प्रकृति मेल पत्रिका का वर्षिक ग्राहक बनना पसंद करूंगा/ करूंगी

प्रकृति मेल के पक्ष में देय ₹ ☐☐☐ कैश ☐ चेक ☐ तारीख ☐☐☐☐☐☐

1 year membership fee -220/- only. (Must be drawn in favour of 'Prakriti mail' payable at lucknow)

संलग्न चेक/डिमांड ड्राफ्ट नं. ☐☐☐☐☐☐ आहरित बैंक (बैंक का नाम)__________

नाम ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

पता__________

__________ राज्य__________ पिन__________

फोन नंबर ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐ ई-मेल:__________

कृपया फार्म भरकर निम्नलिखित पते पर भेजे:

प्रकृति मेल, सूर्या आश्रम, मानव नगर, (निकट आई.आई.एस.ई.) कल्याणपुर, लखनऊ, पिनकोड- 226022, उ0 प्र0।

नियम और शर्तें

पत्रिका का मूल्य और आफॅर केवल भारत में लागू। कृपया पत्रिका की पहली प्रति डाक या कोरियर के माध्यम से मंगवाने के लिए कुछ समय दें। किसी भी तरह के विवाद का निबटारा केवल लखनऊ की अदालत में होगा।

नि:शुल्क ई-मैगज़ीन प्राप्त करने के लिए हमारे वेबसाइट - www.prakritimail.com पर सम्पर्क करें।

सूत्र वाक्य

अशोक मानव

* ध्यान एक प्रकृतिक अवस्था है किसी कार्य विशेष को पूरा करने के लिए हमारे चारों तरफ एक आभा मंडल बन जाता है जिससे हम बाहर नहीं निकल पाते उसे ही ध्यान कहते हैं।

* किसी का बंद स्तूप भेद पाना असंभव है अतः कोई किसी का भविष्य देख नहीं सकता। वह किसी के बारे में उतना ही देख सकता है जितना रासायनिक मिलान होना निश्चित होता है।

* भावनात्मक ऋणात्मकता की स्थिति वह है जब कोई व्यक्ति किसी का सहयोग या मदद कर देता है तो वह व्यक्ति मदद करने वाले का एहसानमंद हो जाता है।

* विषय का व्यक्ति का विषय से तब तक जोड़े रखती है जब तक की न्याय उत्तम अवस्था की स्थापना हो जाए। जो प्रकृति के उत्तम न्याय को प्रर्दशित करती है।

* सत् कभी मरता नही और असत् कभी जिन्दा नही रहता क्योकि सत् स्थाई होता है और असत् प्रतिक्षण परिर्वर्तित होता रहता है।

* गन्ध वह सूक्ष्म विज्ञान है जो प्रकाश और ध्वनि के साथ मिल कर सजीवता का विस्तार कर ब्रह्माण्ड का विस्तार करती है।

* गन्ध कर्म पूर्णता से गन्तव्य तक पहुँचने का बीज और आनन्द प्रकृति का प्राकृतिक विज्ञान है।

* आनन्द प्रकृति का वह एहसास है जिससे प्रकृति खुशबूमय हो जाती है।

* सामाजिक अवगुणों से प्रभावित निर्णय जीत नही जीवन की पहली हार है।

* अवगुण जीवन में आनन्द नही सिर्फ दुःख देता है जिससे प्रकृति में प्रदूषण फैलता है। अवगुणों से बचना जीवन जीने की बड़ी कला है।

* शरीर से अधिक बल इच्छाशक्ति द्वारा उत्पन्न भावना मे होता है। यह ऊर्जा विरोधी ऊर्जा को खत्म करने और जीत हासिल करने में सहयोग करती है।

* प्रवृत्ति प्रकृति की सूक्ष्म शक्तिशाली अवस्था है जो पूरे ब्रह्माण्ड मे एक जैसी दो नहीं होती, यही अवस्था स्वभाव के रूप में परिलक्षित होती है और अपने अनुरूप स्वरूप बनाती है।

* दर्द को दर्द नही होता क्योंकि दर्द का स्वभाव ही है दर्द। इसलिए अपने स्वभाव के विपरीत चलना ही दर्द है। अपने स्वभाव पर चलना दर्द नही।

जीवन का वैज्ञानिक मार्ग

अशोक मानव

मानव की जन्मभूमि वही है जिसका विकास जीव प्रकाश शरीर रूप में करता है। शरीर ही वह जन्मभूमि है, जो प्राकृतिक रूप से हर व्यक्ति के नाम कर दी जाती है। जमीन तो प्रकृति की है जिस पर हर जीव का बराबर अधिकार होता है। यह जमीन एक साधन है जो जन्म भूमि को पदार्थ उपलब्ध कराती है। जिसके धारण करने से जन्म भूमि का विस्तार होता है। इस जमीन पर रहने की जगह मिलती है और इसमें पैदा होने वाले अनाज से भोजन बनता है। जो जन्म भूमि के विकास की आवश्यकता है। इस आवश्यकता की पूर्ति होती रहे इसलिए इसका बंटवारा कर के अधिकार पत्र दे दिया जाता है। जो सिर्फ माननीय व्यवस्था है प्राकृतिक नहीं। प्राकृतिक रूप से तो सबका बराबर अधिकार होता है। मानवीय व्यवस्था मानव की आवश्यकता है। जो शांति बनाए रखने के लिए और अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आवश्यक है। ऐसा करने से सामाजिक व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहती है।

जिस जमीन पर अधिकार पत्र व्यक्ति के पास होता है, उस पर दूसरे का कब्जा नहीं होने देता है। यदि कोई व्यक्ति बल प्रयोग से कब्जा कर लेता है तो उसके लिए व्यक्ति न्यायालय जाता है और अपना अधिकार प्राप्त कर लेता है। यह एक सामाजिक व्यवस्था है। जिसका साथ कानून देता है पर अपनी जन्मभूमि पर अनेकों का कब्जा हो जाता है। भूमि अपनी होती है और खेती किसी और की प्रवृत्ति की होने लगती है। जिसकी फसल वही काटता है। जिसे वह जान भी नहीं पाता है, पर यही सच है। जब व्यक्ति किसी दृश्य, परिस्थिति या व्यक्ति से प्रभावित होकर वैसा सोचने लगता है और कार्य करने लगता है तो अपनी जन्मभूमि पर दूसरे का कब्जा हो जाता है। जिस पर उसकी फसल लहराने लगती है। जिसे वही काटता है। इस जन्म भूमि पर कब्जा करके अपनी फसल तो उगाते ही हैं साथ ही खूंटा गाड़ कर अपना जानवर भी बांध देते हैं। यह तब होता है जब व्यक्ति हतोत्साहित करने वाला शब्द या जो ना किया हो, वह दर्द देने वाला भाव व्यक्त कर देता है। तो उसकी जन्म भूमि पर उसका खूंटा गड़ जाता है। जिसमें नकारात्मक ऊर्जा छोड़ने वाला कोई जानवर बंध जाता है। जो उसे व्यथित करके अनेकों बीमारियों को जन्म देता है। इस प्रकार व्यक्ति की जमीन पर अनेकों लोगों का कब्जा हो जाता है। जिसे व्यक्ति जान भी नहीं पाता है। इसी कारण मानव की प्रवृत्ति कभी स्थिर नहीं रहती है, करना कुछ और चाहता है और करने कुछ और लगता है, आज के दौर में मानव अस्थिर जीवन जी रहा है। उसे अपने आप पर भरोसा नहीं कि हम कुछ कर पाएंगे या नहीं। व्यक्ति एक जानवर पर विश्वास करके वफादारी पा जाता है पर मानव में नहीं। इसमें कब किसका खूंटा गड़ जाए। जिसकी पीड़ा से अपना मार्ग बदल ले इसका कोई पता नहीं।

कब किसकी फसल लहराने लगे जो उसके इरादे बदल दे। इसका भी कोई पता नहीं। जन्मभूमि पर दूसरों को कब्जा हो जाने के कारण आज मानव की परिभाषा बदल चुकी है, उसे अपनी नजरों पर विश्वास नहीं है। दूसरे के कहने से अपना इरादा बदल देता है, अपनी ही किया वादा तोड़ देता है। मानव की प्रवृत्ति परिवर्तनशील हो गई है जो दूसरे के इशारे से और परिस्थिति से बदल जाती है। जबकि मानव के अतिरिक्त अन्य जीव हर परिस्थिति से टकराकर भी अपने प्रवृति नहीं बदलते जिस कार्य के लिए पैदा होते हैं वही पूरा करके जाते हैं। मानव के अंदर यह परिवर्तन अपनी जन्मभूमि पर दूसरों का कब्जा हो जाने के कारण ही होता है। मानव के अतिरिक्त अन्य जीव की जन्मभूमि सिर्फ एक ही फसल उगाने की होती है पर मानव की जन्मभूमि पर किसी भी गुण की फसल उगाई जा सकती है। मानव आत्मिक बीज रचना का परिणाम है। आत्मिक बीज के अंदर जीव प्रकाश होता है। जिसको ब्रह्मांड के सभी गुणों की ऊर्जा आकृति में घेरा बनाकर रोक लेती है। जिसे आत्मा कहते हैं। जीव प्रकाश इसके घेरे से तब तक नहीं जाता है जब तक कि उसका विकास करके उनके गुणों की सुगंध प्रकृति में फैला नहीं देता है। इसकी दो क्रिया होती है एक गुणात्मक सुगंध बनाकर प्रकृति में छोड़ना जो प्रकृति में रहती है, दूसरा सुगंध के निर्माण के लिए नकारात्मक ऊर्जा को अपना आहार बनाकर प्रकृति में फैलने वाले प्रदूषण को खत्म करने की क्रिया करता है। जो शरीर रूप में अपनी जन्मभूमि बनाकर पदार्थ का निर्माण करता है। जो शरीर छूटने के बाद मिट्टी व अन्य पदार्थ का निर्माण करता है जिससे प्रकृति का विस्तार होता है। जो जमीन बनकर अपने गुणों के विकास के लिए भोजन तैयार करता है। अपने इसी जन्मभूमि में व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति की फसल उगा कर प्रकृति में सुगंध छोड़ता रहता है। दूसरे का कब्जा हो जाने के कारण आज ज्यादातर दूसरे की फसल उगने लगी है। अपने प्रवृत्ति के व्यक्ति से प्रभावित होने पर अपने ही गुण की फसल उगती है। जिसे व्यक्ति स्वयं काटता है। जिसे दूसरे का कब्जा नहीं कहा जा सकता है बल्कि मित्र का मित्र के जन्मभूमि में रुक कर फसल को और ऊर्जावान बनाना कहा जा सकता है। विपरीत प्रवृत्ति से प्रभावित होने पर अपनी जन्मभूमि में दूसरे का कब्जा हो जाता है इसे बचाने के लिए विपरीत प्रवृत्ति से कभी नहीं प्रभावित होना चाहिए।

प्रकृति की धरती पर अनेकों प्रकार की फसल उगती है। कोई फसल देती है, कोई फूल बनाकर सुगंध। तो कोई पत्ते से ही अपना गुण फैलाता है। यह क्रिया अचर जीव से होती है चर जीव अपने प्रवृत्ति के गुणों से सुगंध छोड़ते हैं। मानव अनेकों गुणों की सुगंध की फसल उगा का सुगंध छोड़ सकता है। मानव जैसा सोचता है जो इच्छा पैदा होती है उसी

गुण की फसल उग जाती है। जिसमें उस गुण के जीवाणु पैदा हो जाते हैं और उसी तरह की कोशिकाएं अपनी जन्मभूमि पर बन जाती हैं। जो खाए गए पदार्थ से उसी गुण की सुगंध पैदा करती है वह अपनी जन्मभूमि से बनकर प्रकृति में निकल जाती है। जिसका विस्तार प्रकृति में फेलकर अपने गुण का सहयोग करते हुए उस गुण की उत्पत्ति करता है। जन्मभूमि का पदार्थ उस गुण का हो जाता है जो शरीर छूटने के बाद प्रकृति की जमीन बनकर उसी गुणों का जीव पैदा करता है। इस प्रकार अपनी प्रवृत्ति का विस्तार निरंतर होता रहता है। इसके साथ-साथ मानव की जन्मभूमि धर्म अधर्म के युद्ध में भी भाग लेती है। यह युद्ध व्यवहारी रूप में दिखाई नहीं पड़ता है। जो दिखाई पड़ता है वह जमीन, संपत्ति और सत्ता के लिए होता है पर धर्म अधर्म का युद्ध हमेशा चलता रहता है। जो मानव की जन्मभूमि से लड़ा जाता है, वह नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जा का। जब व्यक्ति अपराधिक प्रवृत्ति का होता है तो उसकी जन्मभूमि पर नकारात्मक ऊर्जा आने लगती है। जो उसे प्रोत्साहित और संरक्षित करने लगती है। यह ऊर्जा पूर्व में मानव प्रवृत्ति से छूटी हुई ऊर्जा होती है जो ऐसी प्रवृत्ति की जन्मभूमि को अधर्म की युद्धभूमि बना लेती है। जिसकी विचारधारा प्रदूषित हो जाती है, जो न्याय में बाधा पहुंचाने लगती है और अपराध कराने लगती है। प्रदूषित विचारधारा हो जाने के कारण उसके अंदर से जो ऊर्जा बनती है वह आकृति में बदलकर अस्त्र बन जाती है। जो बाहर निकलकर धर्म पर चलने वाले व्यक्ति पर प्रहार करती है। उसकी प्रवृत्ति को बदलती है। उसके कार्यों में रुकावट पैदा करती है और उसमें बीमारी पैदा करती है। जो व्यक्ति सच्चाई के मार्ग पर चलता है उसकी जन्म भूमि धर्म की युद्धभूमि बन जाती है। उसकी जन्म भूमि पर ईश्वरीय प्रवृत्ति की ओर जाने लगती है। उसकी सोच सकारात्मक बन जाती है। उसके अंदर विचार और इच्छा के अनुसार अस्त्र-शस्त्र का निर्माण होने लगता है। जो अपना स्वरूप बनाकर ऊर्जा रूप में निकलकर अधर्म की प्रवृत्ति पर प्रहार करता है। इस प्रकार मानव की जन्मभूमि पर अस्त्र-शस्त्र का निर्माण भी होता रहता है। जो एक दूसरे की प्रवृत्ति खत्म करने के लिए प्रहार करता रहता है। इस प्रकार नकारात्मक और सकारात्मक ऊर्जा का युद्ध निरंतर चलता रहता है, जिसकी युद्धभूमि मानव की जन्मभूमि होती है। यह आपके सोचने का विषय है कि आप अपनी जन्मभूमि को धर्म युद्ध की भूमि बनाना चाहते हैं या अधर्म की, मेरी सलाह है कि जब लड़ना ही है तो धर्म के लिए लड़े तभी अधर्म खत्म होगा और न्याय स्थापित होगा। ऐसा होने पर ही मानव समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार और अपराध मिट जाएगा। जो संत महात्मा और ईश्वर आए हैं वह भी इसी प्रकार से धर्म की विजय करके गए हैं। आज भी उनकी ऊर्जा मानव की जन्मभूमि के माध्यम से ही धर्म का युद्ध लड़ रही है। वैज्ञानिक यंत्र तो व्यवहारिक लड़ाई लड़ रहे हैं पर आंतरिक ऊर्जा आज भी धर्म अधर्म का युद्ध लड़ रही है।

इस प्रकृति में हर समस्या का समाधान है। उसे देखने की दृष्टि और अपनाने का जज्बा होना चाहिए। इसी प्रकार अपनी जन्मभूमि पर

" हर जीव पदार्थ अपने मृदा की प्रवृति के गंधीय विज्ञान के दुर्ग में यात्रा करता है जो हर कोई हर किसी से भिन्न होता है इसलिए हर कोई अपने स्वाभाविक गंधीय तरंग मिलान से अपना मार्ग स्वयं बनाते हुए अपनी यात्रा पूर्ण करता है इसी विज्ञान के कारण हर किसी का मार्ग अलग-अलग होता है।"

दूसरे का कब्जा ना हो पाए उसे रोकने का वैज्ञानिक मार्ग है, जो दृढ़ इच्छाशक्ति से पैदा होता है। जिसका वैज्ञानिक सूत्र है "अपने जीवन का एक उद्देश्य बनाकर संकल्प की बूंद से संचित कर लें और स्वतंत्रता की मेड़बंदी कर दें कि जब जैसी परिस्थिति होगी उसमें अपने संकल्प के अनुरूप जो मार्ग मिलेगा उसी पर चलेंगे। ऐसा करने से अपनी जन्म भूमि पर अपनी ही फसल होती है। दूसरे का कब्जा नहीं हो पाता है। "

जब व्यक्ति अपनी प्रवृत्ति के अनुसार उद्देश्य बनाकर संकल्प की बूंद से सिंचित कर देता है तो अपनी जन्मभूमि पर दूसरे की प्रवृत्ति की फसल नहीं हो पाती है। उसके लिए वह भूमि उसर की तरह हो जाती है। वह अपनी ही प्रवृत्ति की फसल के लिए उपजाऊ जमीन होती है। स्वतंत्रता की मेड़बंदी उसकी सुरक्षा करती है। ऐसा करने से व्यक्ति बाध्य नहीं होता है। परिस्थिति के अनुसार अपने प्रवृत्ति रक्षा करने का निर्णय ले सकता है। स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए कभी किसी से प्रतिज्ञाबद्ध नहीं होना चाहिए। प्रतिज्ञाबद्ध होने से व्यक्ति की स्वतंत्रता खत्म हो जाती है इसमें कई ऐसे कार्य करने पड़ते हैं जो अपनी प्रवृत्ति के विरोधी होते हैं। जो अधर्म और अन्याय की तरफ ले जाते हैं जिससे अपनी जन्मभूमि पर जिससे प्रतिज्ञाबद्ध होते हैं उसका कब्जा हो जाता है। स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए लालच और चाहत का भी त्याग कर देना चाहिए। यह दोनों गुण भी स्वतंत्र नहीं रहने देते हैं। अपनी पूर्ती के लिए दूसरे से समझौता कर लेते हैं जिससे समझौता किया जाता है उसका कब्जा जन्मभूमि पर हो जाता है। आवश्यकता पड़ने पर प्रकृति साधन उपलब्ध करा देती है, उसी साधन में अपने व्यक्तित्व का विकास हो पाता है। साधन ज्यादा हो जाने से भी जन्मभूमि कम उपजाऊ हो जाती है। प्रवृत्ति का विकास बीजीय रचना का गुण है जो स्वतः होता है। इस विकास के लिए जिस चीज की आवश्यकता पड़ती है उसे प्राप्त कर लेता है। अपने उद्देश्य की रेखा के बाहर नहीं जाना चाहिए। उद्देश्य का निर्धारण करते समय अपनी प्रवृत्ति का ध्यान रखना चाहिए और उसका आदर्श धर्म की तरफ होना चाहिए, इससे अच्छी फसल का उत्पादन होता है। जो सुगंध बनकर प्रकृति को सुगंधित करती है और धर्म युद्ध की युद्धभूमि बनकर अधर्म को खत्म करने का अस्त्र बनाती है।

अपने उद्देश्य के विपरीत विचार ना आने दें और उसके प्रति सकारात्मक सोच रखें। सांस लेते समय भी अपने उद्देश्य को याद रखें ऐसा करने से सांस के माध्यम से ऑक्सीजन के रूप में विपरीत ऊर्जा अंदर नहीं आ पाएगी। इस वैज्ञानिक मार्ग पर चलने से कभी कोई अपनी जन्म भूमि पर कब्जा नहीं कर सकता। वैज्ञानिक मार्ग पर चलकर अपनी जन्मभूमि संभालें, उसे सुगंधित फसल उगाने और धर्म युद्ध में भाग लेने योग्य बनाए इसी शुभकामना के साथ।

प्रश्न हमारे
उत्तर श्री अशोक मानव जी के

प्रश्न :-जीव अपने गंतव्य तक किस प्रकार से पहुंच सकता है ?

उत्तर :-जीव अपनी मृदा के प्रवृत्तीय गुण को सिद्धांत करने के लिए शरीर रुपी भूगोल बनाकर उसमे स्वरसायन लोक से नियत स्वाभाविक पदार्थीय तत्व गंधीय मिलान कर बनने वाली ऊर्जा से गुब्बारे की तरह स्वतः अपने गंतव्य तक पहुंच जाता है।

प्रश्न :- जीवन को किस प्रकार से ससरल बनाया जा सकता है ?

उत्तर :- सम्यांकित रसायन का लंकरी मिलान हर जीवन को उसके कर्मानुसार 'सरल' करता रहता है जो अवस्था रूप में हर किसी को प्राप्त होता है। यही कर्म का परतीय विज्ञान होता है जिस पर गुजरते जाने से जीवनसरल हो कर भारमुक्त होता जाता है।

प्रश्न :- मानव अपनी समस्याओं और परेशानियों से किस तरह बच सकता है ?

उत्तर :-जिस प्रकार शांत जल अपने अंदर फैली गंदगी नीचे दबा देता है ठीक उसी प्रकार मानव चित्त(मन) को शांत करके नकारात्मक ऊर्जा खत्म करके अपनी हर परेशानी से बच सकता है।

यदि किसी पाठक के मन में कोई भी सामाजिक या प्राकृतिक प्रश्न उठ रहा है वह उस प्रश्न का निदान चाहते हैं तो पाठक हमें अपना प्रश्न निम्न पते पर भेज सकते हैं। निदान प्रश्न के अगले अंक में दिया जाएगा।
आप अपना प्रश्न डाक द्वारा या ईमेल पर भेज सकते हैं
डाक पता : प्रकृति मेल, सर्या आश्रम, मानव नगर (निकट आई.आई. एस.ई),
कल्याणपुर, लखनऊ-226022, उ० प्र०
ईमेल - info@parkritimail.com, editor.prakritimail@gmail.com

आमी से गोमती तक : अंश 9

उस पार न जाने क्या होगा ?

प्रफुल्ल कुमार त्रिपाठी
आकाशवाणी से सेवानिवृत्त अधिकारी

पाठकों को मैं पहले ही यह बता चुका हूँ कि 'बच्चन' जी मेरे प्रिय लेखक-कवि बन चुके थे। उनसे अपनी अंतरंगता बढ़ती चली गई थी । उनसे जुड़ने पर मुझे आनन्द आया और दुःख भी । आनन्द इसलिए कि उनसे पत्राचार करते हुए मानो मैंने साहित्य संसार का आसमान छू लिया हो और दुःख इसलिए कि उनके देहावसान के बाद उनके कुछ अन्तरंग लोगों ने मुझे छला, निराश भी किया । ..... लेकिन उसकी चर्चा आगे करूंगा । अभी तो कुछ अपनी और बहुत कुछ अपने जीवन की राम कहानी !

वर्ष 1972 में जब मैं ग्रेजुएट में था उस समय मेरी बड़ी बहन विजया (जिन्होंने हिन्दी में पी.एच.डी.भी कर लिया था) का विवाह गोंडा में श्री सुरेश चन्द्र उपाध्याय, प्रसिद्ध वकील, के लड़के डा.तारकेश्वर उपाध्याय जियालाजिस्ट से तय हो गया । वैसे इसके पहले और भी ढेर सारे कुलीन परिवार के लडकों की कुंडलियाँ खंगाली गईं लेकिन असीमित दान- दहेज के नाम पर बात बन नहीं रही थी । मेरे पितामह इस सम्बन्ध से थोड़ा नाराज़ भी हुए क्योंकि वे बस्ती या उसके आसपास के जिलों में अपने घर की कन्या नहीं देना चाहते थे और उपाध्याय परिवार में तो कतई नहीं । उनकी बस्ती जिले में ब्याही गई बेटियाँ बीमारी की हालत में ससुराल वालों की बदहाल परवरिश के चलते कम उम्र में चल बसी थीं । लेकिन ऐसे सम्बन्ध तो पहले से तय हुआ करते हैं और 22 मई 1972 को विजया-तारकेश्वर का विवाह गोरखपुर में धूमधाम से सम्पन्न हुआ । तीन दिन की बरात रुकी थी । मेरे पितामह पंडित भानुप्रताप राम त्रिपाठी और दादी श्रीमती पार्वती देवी ने कन्यादान किया क्योंकि दहेज़ के लेन -देन वाली यह शादी पिताजी के उसूलों के खिलाफ थी । घर की पहली शादी थी और परिजनों का उत्साह देखते बन रहा था । पिताजी बहुत मुदित थे क्योंकि पढ़े लिखे परिवार में शादी हो रही थी । मुझे याद है कि पिताजी ने लगभग एक शोधपत्र की तरह बारातियों के लिए अभिनन्दन पत्र छपवाया था जिसमें दोनों परिवारों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारियाँ भी दी गई थीं । कुछ मोहक शब्द आज भी याद हैं – जैसे, हे आत्मीय समधी जी , अतिथि देवोभव की वैदिकी अनुगूँज से अनुप्राणित आज अपनी लघुता में सम्पूर्ण शहर के स्नेह के साथ आपके पावन निर्देशन में अपने प्राणों के सरगम आत्मजा को अशेष विश्वास के साथ समर्पित करते हुए हम आनन्द विह्वल हैं । आदरणीय अभ्यागत ! आपने पधार कर हमारे तंडूल को स्वीकार कर हमें गौरव दिया है ..अवश्य ही हमारी अभ्यर्थना में कुछ अभाव रहे होंगे पर पुजारी की श्रद्धा का प्रयास उसका विभावपूर्ण थाल नहीं अंतस की अमित पुजापा है...आदि ।

इसी तरह जब मैं विधि स्नातक का कोर्स कर रहा था और आपातकाल के दौरान वर्ष 1975 में पिताजी की गिरफ्तारी सहित तमाम नाटकीय घटनाओं के बाद मेरे बड़े भाई डा.सतीश चन्द्र त्रिपाठी का विवाह 6 जुलाई 1975 को विन्ध्याचल मंदिर के मुख्य पुरोहित मिश्र परिवार के विजय शंकर मिश्र की कन्या वीना से विध्याचल में सम्पन्न हुआ था । इन दोनों विवाहों का दान- दहेज़ के लेन - देन के कारण पिताजी ने लगभग बायकाट किया था और पितामह और दादी जी की अगुआई में ये सम्पन्न हुए थे । भाई साहब के विवाह के कुछ महीने पहले ही पितामह और दादी ने हम दोनों भाइयों का जनेऊ संस्कार विन्ध्याचल में ही सम्पन्न कराया था,उसमें भी पिताजी ने हिस्सा नहीं लिया था ।

वर्ष 1973 में जब मैं बी.ए.कर चुका

था तब मुझे सेवा में जाने के दो-तीन अवसर मिले थे । एक "दैनिक जागरण" गोरखपुर के सम्पादकीय में काम करने का और दूसरा उ.प्र. सरकार के सूचना विभाग में अनुवादक कम सहायक सूचना अधिकारी बनने का और तीसरा भारतीय खाद्य निगम में जन सम्पर्क अधिकारी बनने का । उन दिनों के सर्वाधिक सर्कुलेशन वाले वाराणसी से छपकर आनेवाले अखबार "आज" के बाज़ार को गोरखपुर से "दैनिक जागरण" प्रकाशित करके हथियाने के लिए पूर्णचन्द्र गुप्त डेरा डाले हुए थे । गोरखपुर से छपने वाला "हिन्दी दैनिक" अच्छी सम्पादन टीम के अभाव में अपने अंतिम दिन गिन रहा था । उसकी सर्कुलेशन निल थी और सिर्फ सरकारी गजेट और विज्ञापन ही उसमें छपते थे । तदर्थ तौर पर ह्रदय विकास पाण्डेय ने "दैनिक जागरण" गोरखपुर के डमी अंकों के सम्पादन का काम शुरू कर दिया था और वे और पूर्णचंद्र गुप्त,योगेश गुप्त,मुन्नालाल पत्रकार आदि मिलकर अपनी सम्पादकीय टीम बनाने के लिए प्रयासरत थे। याद नहीं है कि किसने मुझे भी प्रयास करने को कहा था और मैं बेतियाहाता स्थित उसके प्रेस में जाने लगा था । मुझे एक टेबिल कुर्सी दे दी गई थी और टेलीप्रिंटर से निकले समाचार को काट-छांट कर प्रेस लायक बनाने का काम मैंने शुरू भी कर दिया था । दो या तीन दिन बाद मुझे मालिकान ने बुलाया और नरेंद्र मोहन के नाम एक सीलबंद लिफाफा देते हुए कहा गया कि फाइनल एप्वाइन्टमेंट के लिए मुझे अपने खर्च पर उसके मुख्यालय कानपुर जाकर एक हफ्ते तक वहां ट्रेनिंग लेनी है । पत्रकार बनने का इतना उत्साह और उमंग था कि मैं कानपुर चला गया और वहां किसी परिचित के घर अतिथि बनकर पूरे हफ्ते सर्वोदय नगर जाता रहा । सुबह नाश्ते के बाद मैं दफ्तर चला जाता था और शाम तक थका हारा लौटता था। वहां प्रेस की ओर से दो तीन चाय अवश्य मिल जाती थी । वहां पता चला कि जागरण संस्थान ट्रेनी जर्नलिस्ट के रूप में तीन सौ रूपये महीने पर आफर देती है और एक साल बाद नियमित वेतन स्केल में रख लेती है । चलते समय एडिटोरियल इंचार्ज किन्हीं सत्यदेव शर्मा जी ने मुझे पास कर दिया और मालिक नरेंद्र मोहन से मिलकर एक संस्तुति पत्र ले लेने को कहा । मैंने वैसा ही किया और वापस गोरखपुर आ गया । यहाँ एक बार फिर जब मैं पूर्ण चन्द्र गुप्त की टीम (उनके साथ मुन्ना लाल थे) के सामने हाज़िर हुआ तो उन्होंने विशुद्ध बनिया के रूप में मुझे दो सौ पचास रूपये महीने पर काम करने का आफर दिया । मैंने उनसे तीन सौ रूपये की मांग की जिसे उन्होंने लगभग ठुकरा दिया । मुन्नालाल जी ने बीच बचाव की मुद्रा में मुझे ऑफर स्वीकार लेने को कहा तो मैं भड़क उठा । इस एक हफ्ते पन्द्रह दिन में "हिन्दी दैनिक" बंद हो गया था और उसके सम्पादकीय टीम के कुछ नाकारा लोग मात्र एक सौ रूपये महीने की नौकरी पर "दैनिक जागरण" में आ गए थे । पूर्णचन्द्र गुप्त उसी का फायदा उठा रहे थे । मुझे नौकरी की शौकिया आवश्यकता थी न कि मैं भूखा मर रहा था । मुझे इस बात का दुःख था कि जब मैंने हफ्तों कानपुर रहकर इनकी इच्छा पूरी करके नौकरी की मांग की है तो ये क्यों सौदेबाजी कर रहे हैं । कानपुर में ये लोग तीन सौ दे रहे हैं तो गोरखपुर में क्यों नही ? मैंने उनकी इस बनियागीरी पर फटकार भी लगाईं थी और कमरे से निकलते समय उनका यह व्यंग भी सुना था कि "लगता है कि तुम परिवार के बिगड़े लडके हो !" उन्हीं के पुत्र योगेन्द्र मोहन ने भी मुझे मेरी क्षमताओं से पहचान लिया था और वे चाहते थे कि मैं जागरण से जुड़ जाऊं । लेकिन उनकी चलती नहीं थी । चल कर "दैनिक जागरण" गोरखपुर प्रबन्धन को ऐसी ही परिस्थितियों के झंझावात से गुजरना पड़ा , महीनों तालाबंदी रही लेकिन वे अपने छल -बल से सर्वाइव कर गए और आज गोरखपुर ही क्या लगभग पूरे उ.प्र.में उनका डंका बज रहा है । आज न तो पूर्णचन्द्र हैं,न धीरेन्द्र मोहन लेकिन उनकी पत्रकारिता की बनियागीरी की परम्परा शाश्वत चली आ रही है ।

अब इसी क्रम में अपनी दूसरी और तीसरी नौकरी के ऑफर के बारे में भी बताता चलूं । हुआ यह कि 1974-75 में ही उ.प्र. सूचना विभाग में सूचना अधिकारियों के लिए सीधी नियुक्ति का विज्ञापन निकला । उस समय गोरखपुर में जिला सूचना अधिकारी के रूप में त्रिपुरारी भास्कर नियुक्त थे और मेरी साहित्यिक और पत्रकारिता सम्बन्धी उपलब्धियों को ध्यान में रखते हुए उन्होंने मुझे भी सुझाव दिया था कि मैं आवेदन करू। मैंने आवेदन कर दिया था । कुछ सोर्स भी लगा दिए। सूचना निदेशालय लखनऊ में साक्षात्कार तो अच्छा हुआ लेकिन मेरी नियुक्ति नहीं हो सकी । जिस सोर्स का सन्दर्भ मैं दे रहा हूँ वह इतना प्रभावकारी था कि कुछ ही महीनों में मेरे पास उ.प्र.सरकार के राजचिन्ह मछली बना हुआ नियुक्ति पत्र हाथ आया जिसमें मुझे बरेली के जिला सूचना अधिकारी कार्यालय में सहायक जिला सूचना अधिकारी/अनुवादक के पद पर कार्यभार ग्रहण करने का आदेश था । मन ललचा उठा लेकिन एक तो कम उम्र थी दूसरे वेतन बहुत कम था। इसलिए मैंने ज्वाइन नहीं किया । इन्हीं कालखंड में गोरखपुर में 1968 में इंदिरा गांधी द्वारा स्थापित फर्टिलाइजर फैक्ट्री ने अपने लिए पी.आर.ओ.की वेकेंसी निकाली थी । मैंने भी अप्लाई कर दिया था । उन दिनों गोरखपुर की यह अकेली औद्योगिक विशाल भूखंड में स्थापित इकाई थी । सिर्फ इंटरव्यू पर चुनाव होना था और लगभग दो दर्जन मुझ जैसे नौजवान अपनी सुपात्रता का दावा लेकर इंटरव्यू में पहुंचे। बढ़िया आवभगत हुई और भव्य जलपान मिला ।मेरा इंटरव्यू भी ठीक ही हुआ था लेकिन वहीं इस बात की अफवाह उड़ चुकी थी कि पेट्रोलियम मिनिस्ट्री से किसी के लिए सिफारिश आ चुकी है। फलस्वरूप सबके दावे सबके पास धरे रह गए। लेकिन जैसा 'बच्चन' जी कहते हैं-" मन का हो तो अच्छा, ना हो तो और भी अच्छा क्योंकि वो रब की मर्जी है !" इसलिए जो हुआ अच्छा ही हुआ क्योंकि बाद में 10 जून वर्ष 1990 से इस फैक्ट्री पर काल मंडराने लगा,उस दिन अमोनिया गैस रिसाव के चलते एक इंजीनियर की मृत्यु हो गई और फैक्ट्री से उत्पादन बंद कर

दिया गया। वर्ष 2002 में सभी को वी.आर. एस.दे दिया गया।

अब उस नौकरी की बात जो मेरे संग - साथ 36 वर्षों तक बनी रही । वर्ष 1977 के अप्रैल महीने की 29 वीं तारीख ...मुझे अच्छी तरह याद है कि मैं उस दिन लगभग 11 बजे अपने गाँव से गोरखपुर आ रहा था । घर की गली में ही मेरी मुच्छड़ पोस्टमैन राय साहब से मुलाक़ात हो गई और उसने बड़े तपाक से कहा –'अरे साहब आपकी एक रजिस्ट्री आई है । 'मैं हतप्रभ ! मैंने उत्सुकता से डाक ली , लिफ़ाफ़े पर एक नज़र डाला तो पाया कि ख़ाकी रंग के मीडियम साइज़ के उस लिफ़ाफ़े पर भारत सरकार की मुहर On India Govt. Service लगी है और भेजने वाले स्टेशन डाईरेक्टर,आल इंडिया रेडियो, इलाहाबाद थे। मन खुशी से बल्लियों उछलने लगा लेकिन इसे जाहिर नहीं होने दिया। घर पहुंचा तो पिताजी कचहरी जा चुके थे । अम्मा को इस खुशखबरी को बताया और नहा- धोकर लगभग एक तीस बजे कचहरी पहुँच गया । मैंने पिताजी से कहा कि बस अब मुझे मेरी मनचाही नौकरी मिल गई है। आप मेरा मेडिकल आदि करवा दीजिए, किसी राजपत्रित अधिकारी से चरित्र प्रमाणपत्र दिलवा दीजिए और मुझे रवाना होने की आज्ञा दीजिए । संयोग देखिए , पिताजी के चेंबर में उसी समय उन दिनों अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के युवा नेता (और अब माननीय राज्यपाल,हिमांचल प्रदेश)श्री शिव प्रताप शुक्ला का आगमन होता है और पिताजी उन्हें सी.एम.ओ. के यहाँ जाने और मेरा मेडिकल सर्टिफिकेट बनवाने का परामर्श देते हैं। उन दिनों छात्र नेताओं का बड़ा दबदबा था। हम दोनों रिक्शे से जिला अस्पताल पहुँचते हैं और सी. एम. ओ.साहब चायपान कराने के साथ मेरे मेडिकल की औपचारिकता आनन फानन में पूरी कर देते हैं। ....अब वापस कचहरी। इस बीच मुंशी श्रीनिवास सिंह को भेजकर पिताजी ने इलाहाबाद (अब प्रयागराज) के लिए त्रिवेणी एक्सप्रेस में मेरा श्री टायर में रिजर्वेशन भी करा दिया था। अब पिताजी एक सत्र न्यायाधीश श्री उमेश चन्द्र मिश्र के चेंबर में मुझे लेकर जाते हैं और मुझे उनका दिया चरित्र प्रमाण पत्र मिल जाता है। औपचारिकताएं पूरी.... अब अपनी ज़िंदगी के एक नए अध्याय की शुरुआत तीर्थराज प्रयाग से होनी है । रात की ट्रेन है और इलाहाबाद अकेले जाना है । मन में धुकधुकी ..गोरखपुर छोड़ने की पीड़ा अलग से ...।

परिवार में सभी इस समाचार से प्रसन्न थे । छोटे भाई दिनेश चन्द्र त्रिपाठी उन दिनों सेंटएंड्रयूज कालेज से बी.एस.सी.कर रहे थे। गोरखपुर विश्वविद्यालय में बाटनी में रिसर्च कर रहे बड़े भाई साहब प्रोफ़ेसर एस. सी. त्रिपाठी ने रिक्शे से रेलवे स्टेशन ले जाकर तमाम हिदायतों के साथ मुझे ट्रेन में बिठाया। पिताजी ने मेरे रहने और खाने- पीने के लिए अपने श्वसुर (मेरे नाना जी) जस्टिस हरिश्चन्द्र पति त्रिपाठी,गंगा आश्रम,15 कमला नेहरू मार्ग,इलाहाबाद के लिए पत्र दे दिया था। रात ट्रेन में लगभग बेचैनी में बीती ....और, अब मैं रामबाग रेलवे स्टेशन पर उतरकर रिक्शेवाले को हाथी पार्क / हिन्दू हास्टल चलने को बोला। अब मै उनके सम्मुख उपस्थित था। ...हाथ में पिताजी का पत्र, एक अटैची और एक छोटा होल्डाल ।

जज साहब (नाना जी) उन दिनों हाईकोर्ट इलाहाबाद के न्यायाधीश पद से तुरंत तुरंत रिटायर हुए थे। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी के भवन के सामने , हिन्दू हास्टल से लगा लगभग दस एकड़ में फैला उनका भव्य मकान, बहुत बड़ा लान और कई नौकर चाकर। वर्ष 1977 का कुम्भ मेला सकुशल सम्पन्न कराने की ज़िम्मेदारी कुम्भ मेला अधिकारी के रूप में निभा रहे मेरे आई.ए.एस. मामा जी श्री सुशील चन्द्र त्रिपाठी भी उन दिनों वहीं थे। सबसे छोटे मामा सुधीर चन्द्र त्रिपाठी आई.ए.एस.की तैयारी कर रहे थे और एक और मामा श्री प्रकाश चन्द्र त्रिपाठी उच्च न्यायालय में वकालत कर रहे थे । जज साहब बाहर ही बरामदे में बैठे सुबह की चाय पी रहे थे। प्रणाम - आशीर्वाद के बाद उन्होंने आने का कारण पूछा । मैंने पिताजी का पत्र झट से आगे बढा दिया । इस बीच मेरे लिए भी चाय आ चुकी थी।

"अच्छा! तो तुमको नौकरी मिल गई है ! "...थोड़ी देर के मौन के बाद वे आगे बोले –"देखें तो तुम्हारा एपाइन्टमेन्ट लेटर ! " मैंने झट से अटैची खोली और पेपर्स आगे बढ़ा दिए । वे उसे पढ़ने लगे ...इसके बाद फिर मौन । "क्लास श्री ..नान गजेटेड ?....अच्छा ?" वे हलके स्वर में बोल रहे थे । मैंने समझ लिया कि मेरी इस नौकरी से वे बहुत प्रसन्न नहीं हुए जबकि मेरे लिए कचहरी के नरक में डूबने उतराने से लाख गुना अच्छा यह आफर था । नौकरी चाहे वह क्लास श्री की हो या नान गजेटेड !कम से कम मनचाही है , सरकारी तो है ? थोड़ी देर में नौकरी सम्बन्धी पेपर मेरे हाथ में वापस आ गए । मुझे उन्होंने अपने ऑफिस कम लाइब्रेरी में डेरा डालने का आदेश सुना दिया था । नौकर ने उसी में एक चारपाई डाल दी ,एक स्टूल रख दिया । सुबह के लगभग दस बज चुके थे और मैंने नहा धोकर नाश्ता करके नाना-नानी आदि का पैर छूकर प्रस्थान कर दिया । मुझे नहीं पता था कि वहां का आकाशवाणी केंद्र किधर है और उनसे पूछने में डर लग रहा था । किसी ने बता रखा था कि हाथी पार्क से यू.पी.एस.सी.वाली सड़क पर नाक की सीधाई में चलते जाना,चलते ही जाना । मैंने रिक्शा लेना मुनासिब समझा और अब मैं दयानन्द मार्ग के आखिरी छोर पर स्थित आकाशवाणी इलाहाबाद के गेट पर हाज़िर था । दो हिस्सों में बंटी हुई यह बहुत पुरानी बिल्डिंग थी । गार्ड को अपने आने का कारण बताया तो उसने अन्दर जाने दिया । मैं अब अपने जीवन के एक नये अध्याय में प्रवेश कर रहा था जिसके साथ मेरे ढेर सारे आत्मगन्धी संस्मरण जुड़ने वाले थे । ढेर सारे लोग जीवन में प्रवेश करने वाले थे । परिवार और घर- द्वार से निकल कर मैं अब एक अनजानी, अचीन्हीं दुनिया में प्रवेश कर रहा था यह उत्कंठा लिए कि उस पार ना जाने क्या होगा ? ◆◇◆

(क्रमशः...अगले अंक में)

22 मई - राजा राममोहन राय की जयन्ती

साँच को कभी भी आँच नहीं

गोवर्धन दास बिन्नाणी
'राजा बाबू'
बीकानेर, राजस्थान

राजा राममोहन रॉय को भारतीय पुनर्जागरण का अग्रदूत और आधुनिक भारत का जनक कहा जाता है। भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के अलावा वे दोहरी लड़ाई लड़ रहे थे। दूसरी लड़ाई उनकी अपने ही देश के नागरिकों से थी। जो अंधविश्वास और कुरीतियों में जकड़े थे। राजा राममोहन राय ने उन्हें झकझोरने का काम किया।

हम सभी को हमेशा सत्य ही बोलना चाहिये क्योंकि सत्य वचन का वजन स्वतः ही बढ़ जाता है। आपको अपने वचन को सिद्ध करने के लिये किसी भी प्रकार की कसम खाने की आवश्यकता ही नहीं।और याद रखें सत्य बोलने वाले की कभी भी हार नहीं होती।हाँ,कुछ समय के लिये परेशानी हो सकती है। लेकिन लाख मुसीबत आने पर भी सच्चा आदमी घबडाता नहीं है बल्कि ड़टा रहता है और अन्त में उन मुसीबतों से छूटकारा मिलना तय है क्योंकि साँच को कभी भी आँच नहीं।

अब उपरोक्त से सम्बन्धित एक ऐतिहासिक घटना आप सभी के ध्याननार्थ यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ-

गत बार बीते 22 मई को हम सभी ने भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रणेता

राजा राममोहन राय का 250वाँ जन्मदिन मनाया था।उन्हीं के जीवन से सम्बन्धित यह सच्ची घटना अनेक मायनों में प्रेरणादायक है जो उनको राजा की उपाधि मिलने के पहले घटित हुयी थी।

हुआ यों कि 1808 व 10809 के बीच राममोहन रॉयजी की जब भागलपुर में तैनाती थी तब वे एक बार पालकी में सवार होकर गंगाघाट से भागलपुर शहर की ओर जा रहे थे, तो घोड़े पर सैर के लिए निकले कलेक्टर सामने आ गये । पालकी में लगे परदे के कारण राममोहन रायजी उनको देख नहीं सके और यथोचित शिष्टाचार से चूक गये । आप सभी के लिये यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि उन दिनों किसी भी भारतीय को किसी अंग्रेज अधिकारी के आगे घोड़े या वाहन पर सवार होकर गुजरने की इजाजत नहीं थी। इस 'गुस्ताखी' पर कलेक्टर आग बबूला हो उठे।राममोहन रायजी ने उन्हें सच्ची बात बता दी अर्थात अपनी तरफ से उन्हें यथासंभव सफाई दी लेकिन वह कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हुए तब वे उस समय वहाँ से वापस अपनी पालकी में बैठ निकल लिये। लेकिन उसके बाद 12 अप्रैल,1809 को उन्होनें गवर्नर जनरल लार्ड मिंटो को उस पूरे घटनाक्रम को विस्तार से लिख भेजा जिसके परिणाम स्वरूप गवर्नर जनरल ने उस कलेक्टर से उस घटना का पूरा विवरण मंगाया। जैसा हम सभी जानते हैं कलेक्टर ने अपनी रिपोर्ट में राममोहनजी की शिकायत को झूठी बताया । लेकिन जैसा मैंने ऊपर व्यक्त किया सत्य वचन का वजन स्वतः ही बढ़ जाता है इसलिये गवर्नर जनरल ने स्वतः अलग से जांच कराई और राममोहन जी की बात सही पायी तब फिर अपने न्यायिक सचिव की मार्फत कलेक्टर को फटकार लगाकर आगाह कर दिया कि वे भविष्य में देशी लोगों से बेवजह के वाद-विवाद में न फंसें। इस तरह राममोहन जी सत्य वचन के चलते मुसीबत से बचे ही नहीं बल्कि अन्य भारतीयों के लिये भी रक्षा कवच निर्माण कर पाये।

अन्त में निष्कर्ष में मैं सुप्रसिद्ध कवि शिरोमणि कबीर दास जी ने सत्य की शक्ति का वर्णन करते हुये जो निम्न दोहा गढ़ा वह यहाँ भावार्थ सहित आप सभी के लिये प्रस्तुत कर रहा हूँ -

साँच शाप न लागे, साँच काल न खाय।

साँचहि साँचा जो चले, ताको कहत न शाय।।

उपरोक्त दोहे से कबीर दासजी हम सभी को बता दिया कि सत्य अथाह शक्ति है, यही यथार्थ है। सच बोलने वाले को तीनों लोकों का भी भय नहीं होता, क्योंकि सत्यवादी से तो स्वयं यमराज भी डरते हैं।सत्य को दबा पाने की अथवा छुपा पाने की क्षमता संसार में किसी भी वस्तु में नहीं है। और कहा है कि सांच, अर्थात सत्य बोलने वाले को कोई श्राप नहीं लगता, किसी की बद्दुआ का उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। साथ ही सत्य को न ही काल खा सकता है, न ही यह कभी मरता है अर्थात सत्य अमर एवं अजेय है। जो भी सत्य के सांचे में ढल जाता है , अर्थात जो मन-कर्म एवं वचन से सत्य का साथ देता है , उसका भला कौन नाश कर सकता है ?

i5, i7 और i9 में अंतर

अजय मिश्रा

Intel कंपनी द्वारा विकसित i5, i7 और i9 तीनों प्रोसेसर्स कंप्यूटर सिस्टम्स में प्रयुक्त होने वाले तीनों बहुत ही लोकप्रिय प्रोसेसर्स हैं। ये सभी प्रोसेसर्स उन लोगों के लिए अनुकूल होते हैं जो अपने कंप्यूटर का उपयोग भारी विषयों जैसे कि गेमिंग, वीडियो एडिटिंग, वेब डिजाइन और विकास आदि के लिए करते हैं।

चलिए, जानते हैं कि i5, i7 और i9 में क्या अंतर होता है।

कोरः i5 प्रोसेसर में आमतौर पर 4 तक के कोर होते हैं। जबकि i7 प्रोसेसर में 4 से 8 तक के कोर होते हैं। i9 प्रोसेसर में भी 4 से 8 तक के कोर होते हैं लेकिन ये कोर अधिक शक्तिशाली और त्वरित होते हैं।

2.क्लॉक स्पीडः i5 प्रोसेसर का क्लॉक स्पीड आमतौर पर 2.5 जीगाहर्ट्ज (GHz) से 3.5 GHz तक होता है। जबकि i7 प्रोसेसर का क्लॉक स्पीड 2.8 GHz से 4.0 GHz तक होता है। i9 प्रोसेसर का क्लॉक स्पीड 3.0 GHz से 5.0 GHz तक होता है। ये स्पीड सभी तीनों प्रोसेसर्स में कार्य करने की गति पर निर्भर करते हैं।

हारडिस्कः i5 प्रोसेसर आमतौर पर SATA डिस्क इंटरफेस के साथ आता है जो एक पुरानी तकनीक होती है। i7 और i9 प्रोसेसर आमतौर पर NVMe (Non-Volatile Memory Express) डिस्क इंटरफेस के साथ आते हैं जो अधिक त्वरित डेटा पहुंच और अधिक संभवता देते हैं।

4. हाइपर थ्रेडिंगः i5 प्रोसेसर में हाइपर थ्रेडिंग फीचर उपलब्ध नहीं होता है जो कि i7 और i9 प्रोसेसर में उपलब्ध होता है। हाइपर थ्रेडिंग का मतलब होता है कि प्रोसेसर एक समय में एक से अधिक कार्य कर सकता है। इससे प्रोसेसिंग की गति बढ़ती है और एप्लीकेशन्स जल्दी से चलते हैं।

5. की एच जीयूः i5 प्रोसेसर का की एच जीयू 6 से 9 में रहता है। जबकि i7 प्रोसेसर का की एच जीयू 8 से 12 में रहता है और i9 प्रोसेसर का की एच जीयू 10 से 18 में रहता है। की एच जीयू की अधिकता से प्रोसेसर की क्षमता बढ़ती है।

6. मूल्यः i5 प्रोसेसर अधिकतर मध्यम बजट वालों के लिए होता है जो अपने कंप्यूटर को सामान्य उपयोग के लिए करते हैं। i7 प्रोसेसर एकदम ऊपरी वर्ग के उपयोगकर्ताओं के लिए होते हैं जो भारी गति वाले और बड़े डेटा के लिए एक्सेस करने की आवश्यकता रखते हैं। इनकी कीमतें भी इसी अनुसार ऊपरी होती हैं। i9 प्रोसेसर एक बारे में ही सबसे ऊपरी कीमतों में से एक होते हैं।

8. इन सब फीचर्स को मध्यम से ऊपरी रेंज में संयोजित करने से उपयोगकर्ताओं को इससे भी बेहतर कुछ चाहिए तो i5 प्रोसेसर

उनके लिए सबसे अच्छा हो सकता है। जबकि उन उपयोगकर्ताओं के लिए जो कम्प्यूटर संबंधित कामों में भारी उपयोग करते हैं और ऊपरी त्वरित की आवश्यकता रखते हैं, i7 या i9 प्रोसेसर सबसे अच्छे हो सकते हैं।

9. अंत में, i5, i7 और i9 प्रोसेसर तीनों ही काफी बढ़िया प्रोसेसर होते हैं। जैसा कि हमने देखा है, इन्हें उन उपयोगकर्ताओं के लिए अलग-अलग डिज़ाइन किया गया है जो इन्हें उनकी आवश्यकताओं के अनुसार चुन सकते हैं। यदि आप गेमिंग, वीडियो एडिटिंग, या कम्प्यूटर साइंस जैसे कामों के लिए अपने कंप्यूटर का उपयोग करते हैं, तो आपको i7 या i9 प्रोसेसर चाहिए होंगे। इनमें से कोई भी प्रोसेसर आपको त्वरित और सुगम कंप्यूटिंग का अनुभव देगा।

11. हालांकि, यदि आप एक सामान्य उपयोगकर्ता हैं जो इंटरनेट सर्फिंग, ईमेल, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस, या अन्य सामान्य कामों के लिए कंप्यूटर का उपयोग करते हैं, तो आपको i5 प्रोसेसर चाहिए होगा। इससे आपको अच्छा प्रदर्शन और उत्कृष्ट बैटरी लाइफ मिलेगा।

12. एक अन्य महत्वपूर्ण फैक्टर है कि i7 और i9 प्रोसेसर उच्च श्रृंखला के होते हैं, जो उन्हें i5 से थोड़ा अधिक ऊँचा बनाता है। इसलिए, इन प्रोसेसरों की कीमत भी थोड़ी महंगी होती है। इन प्रोसेसरों का उपयोग करने से पहले, आपको यह भी ध्यान देना चाहिए कि आपके कंप्यूटर में उच्च श्रृंखला के अन्य कंपोनेंट भी होने चाहिए। अन्यथा, आपके प्रोसेसर के साथ अन्य कंपोनेंट घटकों की उपलब्धता न हो

13. एक अन्य महत्वपूर्ण फैक्टर है कि i7 और i9 प्रोसेसर उच्च श्रृंखला के होते हैं, जो उन्हें i5 से थोड़ा अधिक ऊँचा बनाता है। इसलिए, इन प्रोसेसरों की कीमत भी थोड़ी महंगी होती है। इन प्रोसेसरों का उपयोग करने से पहले, आपको यह भी ध्यान देना चाहिए कि आपके कंप्यूटर में उच्च श्रृंखला के अन्य कंपोनेंट भी होने चाहिए। अन्यथा, आपके प्रोसेसर के साथ अन्य कंपोनेंट घटकों की उपलब्धता न होने से आपको फायदा नहीं होगा।

14. i5, i7 और i9 प्रोसेसरों की मुख्य तुलनाओं में एक और महत्वपूर्ण फैक्टर है उनकी तकनीकी विशेषताएं। i9 प्रोसेसरों में i7 से अधिक कोर और थ्रेड्स होते हैं। इसका मतलब है कि i9 प्रोसेसरों में अधिक समय तक काम करने वाले बड़े कामों के लिए सबसे उन्नत कंप्यूटिंग प्रदर्शन मिलता है। इसके अलावा, i9 प्रोसेसरों में i7 से अधिक कैश होता है, जो उन्हें और अधिक त्वरित बनाता है।

इसके बाद आता है i7 प्रोसेसर। यह उच्च श्रृंखला के प्रोसेसरों में सबसे ज्यादा उपयोग किए जाने वाले प्रोसेसर हैं। i7 प्रोसेसरों में i5 से अधिक कोर और थ्रेड्स होते हैं जो उन्हें उन्नत कंप्यूटिंग के लिए अधिक सक्षम बनाते हैं। i7 प्रोसेसरों में i5 की तुलना में अधिक कैश भी होता है जो उन्हें और त्वरित बनाता है।

i5 प्रोसेसर सबसे कम श्रृंखला के प्रोसेसर होते हैं और यह दरअसल i7 और i9 के लिए एक प्रथम आरंभिक स्तर होते हैं। i5 प्रोसेसरों में कम कोर और थ्रेड्स होते हैं, इसलिए ये प्रोसेसर ज्यादा काम करने वाले कंप्यूटर उपयोगकर्ताओं के लिए अधिक उपयुक्त नहीं होते हैं। यहां यह भी बताया जाना चाहिए कि i5 प्रोसेसरों की कीमत कम होती है जो इन्हें सामान्य उपयोगकर्ताओं के लिए उपलब्ध बनाती है।

इन प्रोसेसरों की एक अन्य महत्वपूर्ण तुलना उनकी शक्ति उपयोग होने पर बिल्कुल स्पष्ट कर देती है। i9 प्रोसेसरों की शक्ति i7 से अधिक होती है जो कि i5 की तुलना में अधिक होती है। i7 प्रोसेसरोमें भी इसकी तुलना में अधिक शक्ति होती है लेकिन यह i9 की तुलना में कम होती है। i9 प्रोसेसरों में सबसे अधिक कोर और थ्रेड्स होते हैं जो इन्हें एक शक्तिशाली कंप्यूटिंग और ग्राफिक्स प्रोसेसिंग के लिए अधिक सक्षम बनाता है। i9 प्रोसेसरों में अधिक शक्ति के कारण इनकी कीमत भी i5 और i7 से अधिक होती है।

इसके अलावा, i9 प्रोसेसरों में i7 और i5 की तुलना में अधिक कैश भी होता है जो इन्हें त्वरित बनाता है। इन प्रोसेसरों का उपयोग अधिकतर गेमिंग या वीडियो एडिटिंग के लिए किया जाता है जहां उच्च गति और सक्रियता की आवश्यकता होती है।

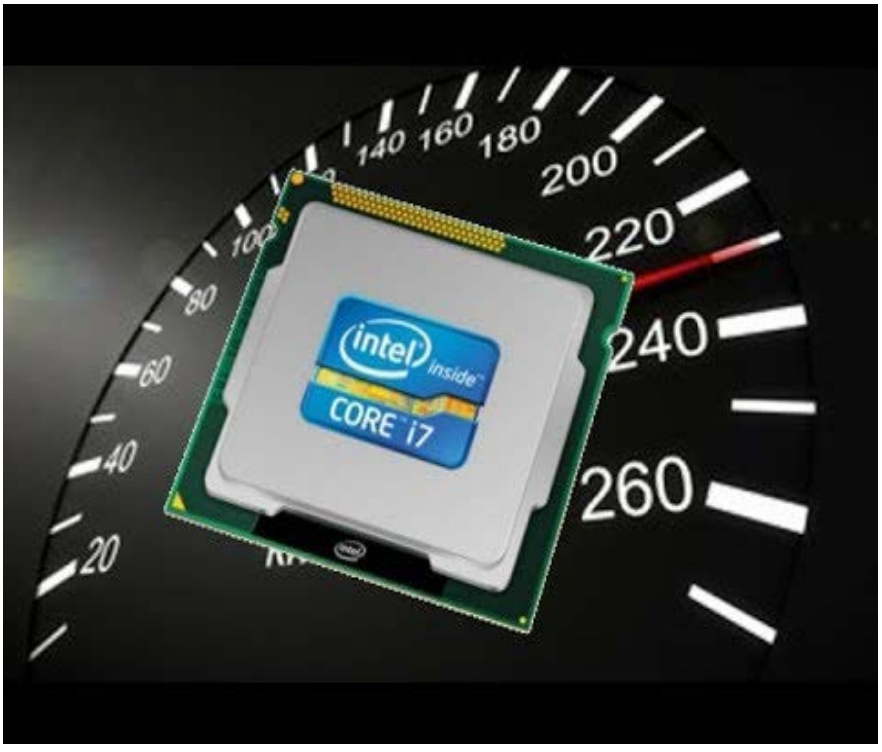

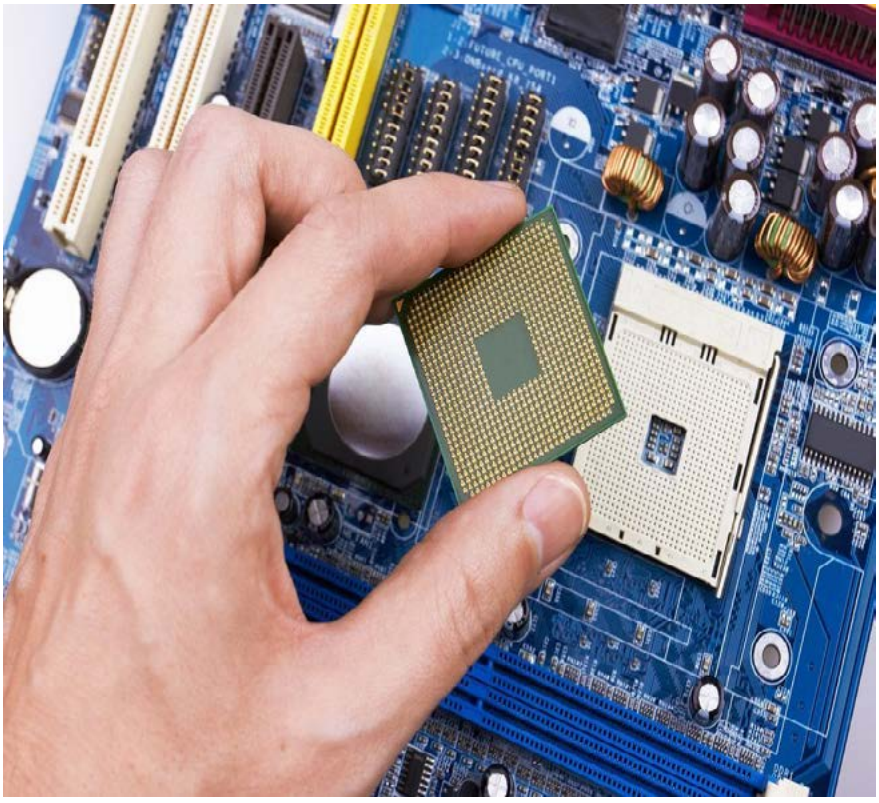

i5, i7 और i9 प्रोसेसरों में आपके उपयोग के आधार पर अंततः फैसला लेना होगा। i5 प्रोसेसर बेहतरीन होते हैं जो छोटे स्तर के कंप्यूटर या उपयोगकर्ताओं के लिए होते हैं। i7 प्रोसेसर अधिक शक्तिशाली होते हैं जो अधिक सक्षमता और उन्नत कंप्यूटिंग के लिए उपयुक्त होते हैं। i9 प्रोसेसर इन ससभी में सबसे शक्तिशाली होते हैं और उन्हें उच्च स्तर की कंप्यूटिंग और ग्राफिक्स प्रोसेसिंग के लिए उपयुक्त माना जाता है। यदि आपको गेमिंग या वीडियो एडिटिंग जैसे शक्तिशाली उपयोग के लिए उच्च गति की आवश्यकता है, तो i9 प्रोसेसर सबसे अधिक उपयुक्त होंगे। लेकिन यदि आपके लिए सामान्य उपयोग जैसे इंटरनेट सर्फिंग, ऑफिस वर्क और बेसिक कंप्यूटिंग से संबंधित काम हैं, तो i5 या i7 प्रोसेसर भी काफी उपयुक्त होंगे।

i5, i7 और i9 प्रोसेसर तीनों ही काफी शक्तिशाली होते हैं और आपके उपयोग के आधार पर उपयोगकर्ता को उनमें से कौन सा प्रोसेसर उपयुक्त होगा, यह निर्णय लेना होगा। यदि आपके लिए केवल बेसिक कंप्यूटिंग के लिए प्रोसेसर की आवश्यकता है, तो i5 प्रोसेसर काफी होगा। यदि आपके लिए उच्च स्तर की कंप्यूटिंग और ग्राफिक्स प्रोसेसिंग की आवश्यकता है, तो i7 प्रोसेसर सबसे अधिक उपयुक्त होंगे

और यदि आपके लिए सबसे शक्तिशाली प्रोसेसर की आवश्यकता होती है, तो i9 प्रोसेसर सबसे अधिक उपयुक्त होगा। इसलिए, अपनी आवश्यकताओं के आधार पर अपना निर्णय लें।

एक और बात यह है कि जब आप इन प्रोसेसरों को खरीदते हैं, तो यह महत्वपूर्ण है कि आप उचित मद से खरीदें। i9 प्रोसेसर सबसे महंगे होते हैं और i7 प्रोसेसरों का भी दाम कुछ अधिक होता है। यदि आप इन प्रोसेसरों को खरीदने का विचार कर रहे हैं, तो आपको इनकी कीमतों और आपकी आवश्यकताओं के आधार पर उन्हें खरीदना चाहिए।

अंत में, i5, i7 और i9 प्रोसेसर सभी में सबसे शक्तिशाली होते हैं और इन प्रोसेसरों को आपके उपयोग के आधार पर खरीदा जाना चाहिए। यदि आपकी आवश्यकताएं बेसिक हैं, तो i5 प्रोसेसर काफी होगा। यदि आपकी आवश्यकताएं उच्च हैं, तो i7 प्रोसेसर सबसे अधिक उपयुक्त होगा। और यदि आपकी आवश्यकताएं सबसे शक्तिशाली प्रोसेसर की हैं, तो i9 प्रोसेसर सबसे अधिक उपयुक्त होगा। इन प्रोसेसरों को खरीदने से पहले, आपको इनकी विशेषताओं, लाभों, दुष्प्रभावों, आवश्यकताओं, उपयोगिता और बजट के आधार पर ध्यान से विचार करना चाहिए।

अगर आप एक गेमर हैं, तो i5 प्रोसेसर आपके लिए काफी हो सकता है लेकिन उच्च ग्राफिक्स के साथ गेमिंग के लिए i7 प्रोसेसर सबसे अधिक उपयुक्त हो सकता है। i9 प्रोसेसर सबसे शक्तिशाली होता है और विशेषताओं और उपयोगिता के लिए कई बढ़िया विकल्प प्रदान करता है।

इसलिए, आपको उपयोग के आधार पर अपने बजट और आवश्यकताओं के आधार पर निर्णय लेना चाहिए कि आपको कौन सा प्रोसेसर खरीदना चाहिए। i5, i7 और i9 प्रोसेसरों में से हर एक में अलग-अलग विशेषताएं होती हैं और इन प्रोसेसरों की आवश्यकता भी अलग-अलग होती है। इसलिए, आपको अपने उपयोग के लिए सबसे उपयुक्त प्रोसेसर का चयन करना चाहिए।

उम्मीद है कि यह लेख i5, i7 और i9 प्रोसेसर के बीच मुकाबले को समझने में आपाया। इन प्रोसेसरों के बीच चयन करने से पहले आपको अपने उपयोग के आधार पर अपनी आवश्यकताओं और बजट के आधार पर निर्णय लेना चाहिए।

अगर आपका बजट कम है और आपको सामान्य उपयोग के लिए प्रोसेसर की आवश्यकता है, तो i5 प्रोसेसर उपयुक्त हो सकता है। अगर आपका बजट बड़ा है और आप अधिक शक्ति की आवश्यकता है, तो i7 प्रोसेसर सही विकल्प हो सकता है। अगर आप एक बहुत बड़े बजट के साथ काम कर रहे हैं और सबसे अधिक शक्ति की आवश्यकता है,

तो i9 प्रोसेसर सबसे उच्च विकल्प होगा।

इन प्रोसेसरों की तुलना करते समय, i5 प्रोसेसर में 4 से 6 कोर और 4 से 12 स्थानों तक के थ्रेड होते हैं। i7 प्रोसेसर में 6 से 8 कोर और 8 से 16 स्थानों तक के थ्रेड होते हैं। i9 प्रोसेसर में 8 से 18 कोर और 16 से 36 स्थानों तक के थ्रेड होते हैं। इसके अलावा, i5 प्रोसेसर 9MB से 12MB की कैश मेमोरी के साथ आता है, i7 प्रोसेसर 12MB से 16MB की कैश मेमोरी के साथ आता है और i9 प्रोसेसर 16MB से 20MBकी कैश मेमोरी के साथ आता है।

जब हम i5, i7 और i9 प्रोसेसरों के क्लॉक स्पीड की बात करते हैं, तो i5 की क्लॉक स्पीड 1.7GHz से 4.6GHz तक हो सकती है, i7 की क्लॉक स्पीड 2.9GHz से 5.3GHz तक हो सकती है और i9 की क्लॉक स्पीड 3.1GHz से 5.3GHz तक हो सकती है।

जब हम इन प्रोसेसरों की ग्राफिक्स कार्ड की बात करते हैं, तो i5 प्रोसेसर अपने इंटेल इंटीग्रेटेड ग्राफिक्स कार्ड के साथ आता है। इसके विपरीत, i7 और i9 प्रोसेसर एक दूसरे से अलग होते हैं। i7 प्रोसेसर एक इंटेल इंटीग्रेटेड ग्राफिक्स कार्ड या इंटेल इरिस ग्राफिक्स कार्ड के साथ आता है। इसके अलावा, i7 प्रोसेसर में एक अलग से ग्राफिक्स कार्ड भी हो सकता है। वहीं, i9 प्रोसेसर एक अलग से ग्राफिक्स कार्ड के साथ आता है।

जब हम इन प्रोसेसरों की व्यवस्था संरचना की बात करते हैं, तो i5 प्रोसेसर अपने लेवल-2 कैश और लेवल-3 कैश के साथ आता है। i7 प्रोसेसर लेवल-2, लेवल-3 और लेवल-4 कैश के साथ आता है। i9 प्रोसेसर लेवल-2, लेवल-3, लेवल-4 और लेवल-5 कैश के साथ आता है।

जब हम इन प्रोसेसरों की बैटरी लाइफ की बात करते हैं, तो i5 प्रोसेसर के साथ आने वाले लैपटॉप्स की बैटरी लाइफ अधिक होती है। वहीं, i7 और i9 प्रोसेसरों के साथ आने वाले लैपटॉप्स की बैटरी लाइफ कम होती है।

जब हम इन प्रोसेसरों की मूल्यांकन करते हैं, तो i5 प्रोसेसर सबसे कम कीमत में उपलब्ध होता है। i7 प्रोसेसर मध्यम रेंज में आता है और i9 प्रोसेसर सबसे महंगा होता है।

इसके अलावा, i9 प्रोसेसर एक स्पेशल एडिशन भी है जो कि सबसे ज्यादा शक्तिशाली होता है। इसमें 18 कोर और 36 थ्रेड होते हैं, जो कि बहुत ही शक्तिशाली होता है। यह उन लोगों के लिए अच्छा होता है जो वीडियो एडिटिंग, ग्राफिक्स डिजाइनिंग, गेमिंग और अन्य उच्च-स्तरीय काम करते हैं।

कुल मिलाकर, i5, i7 और i9 प्रोसेसरों में विभिन्न विशेषताएं होती हैं जो उन्हें उनके विभिन्न उपयोगों के लिए उपयोगी बनाती हैं। i5 प्रोसेसर को सामान्य उपयोगों के लिए बनाया गया है, जैसे इंटरनेट सर्फिंग, माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस उपयोग और मल्टीमीडिया देखना। i7 प्रोसेसर उन लोगों के लिए होता है जो उच्च-स्तरीय काम करते हैं, जैसे कि वीडियो एडिटिंग, ग्राफिक्स डिजाइनिंग और गेमिंग। i9 प्रोसेसर सबसे शक्तिशाली होता है और उन लोगों के लिए अधिक उपयोगी होता है जो उन्नत उद्योगों में काम करते हैं।

अब आपको i5, i7 और i9 प्रोसेसर के बीच मुख्य अंतर और उनके विभिन्न उपयोगों के बारे में समझ आ गया होगा। आपको अपने उपयोग के आधार पर उन्हें चुनना चाहिए।

परंतु, कोई भी प्रोसेसर अकेले ही काफी नहीं होता। एक लैपटॉप में एक शक्तिशाली प्रोसेसर के साथ-साथ अन्य विशेषताओं की भी आवश्यकता होती है, जैसे कि ग्राफिक्स कार्ड, रैम, स्टोरेज आदि। इन सभी तत्वों को मिलाकर ही एक शक्तिशाली लैपटॉप बनता है।

इसलिए, जब आप एक नया लैपटॉप खरीदने काफैसला करते हैं, तो सिर्फ प्रोसेसर को देखकर ही अपना फैसला नहीं लेना चाहिए। अन्य विशेषताओं को भी विचार में रखना आवश्यक होता है।

साथ ही, आपको ब्रांड के बारे में भी सोचना चाहिए। अपने लैपटॉप को एक दिन से कम समय के लिए नहीं इस्तेमाल किया जा सकता है। इसलिए, आपको ऐसे ब्रांड का चयन करना चाहिए जो आपको उन विशेषताओं के साथ अच्छी गारंटी और बैकअप के साथ पेश कर सकता है जो आपको चाहिए।

इसलिए, अब आपको i5, i7 और i9 प्रोसेसर के बारे में पूर्ण जानकारी हो गई है और आप अपनी आवश्यकताओं और बजट के अनुसार उपयुक्त लैपटॉप चुन सकते हैं। यदि आपके पास अधिक बजट है, तो आप i7 या i9 लैपटॉप की ओर जा सकते हैं, जो अधिक शक्तिशाली होते हैं और जो आपको बेहतरीन प्रदर्शन और अनुभव प्रदान कर सकते हैं।

आखिरी टिप्सः

* एक अच्छा प्रोसेसर चुनते समय, ध्यान रखें कि वह आपकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए।

* अपनी बजट केअनुसार लैपटॉप खरीदें।

* ब्रांड की गारंटी और बैकअप को भी ध्यान में रखें।

* एक लैपटॉप खरीदते समय, अन्य विशेषताओं को भी ध्यान में रखें, जैसे कि स्टोरेज, रैम, ग्राफिक्स और बैटरी लाइफ।

इसलिए, यदि आप एक नया लैपटॉप खरीदने की सोच रहे हैं, तो i5, i7 और i9 प्रोसेसर के बीच में अंतर जानते हुए उपयुक्त लैपटॉप चुनें। यदि आपके पास अधिक बजट है, तो i7 या i9 प्रोसेसर वाला लैपटॉप चुन सकते हैं और यदि आपका बजट कम है, तो i5 प्रोसेसर वाले लैपटॉप के लिए जा सकते हैं। उम्मीद है कि यह आपके लिए उपयोगी साबित होगा।

झीलः जहां मन्नत पूरी होने पर फेंका जाता है सोना-चांदी

पवन चौहान

मण्डी (हि०प्र०)

लोक मान्यताएं हैं जो किसी को भी हैरत में डाल देती हैं। इसी श्रृंखला में एक नाम आता है उस झील का जहां मनोकामना पूर्ण होने पर सोना, चांदी, नोट और सिक्के चढ़ाए जाते है। यह झील है 'कमरुनाग झील' जो हिमाचल प्रदेश के मण्डी जिला के अंतर्गत रोहाण्डा नामक स्थान से 6 कि०मी० की पैदल व बेहद थका देने वाली चढ़ाई चढ़ने के उपरांत समुद्रतल से 10938 फुट की ऊंचाई पर सरनाहुली में स्थित है। झील के बिल्कुल साथ ही है देव कमरुनाग का प्राचीन मंदिर। इस मंदिर की उपस्थिति के कारण इस झील को 'कमरुझील' की संज्ञा से भी नवाजा जाता है। झील की परिधि लगभग 400 मीटर है। देव कमरुनाग पांडवों के आराध्य देव हैं। यह स्थल अब जहां दुनिया की नजरों में एक धार्मिक पर्यटन के रुप में उभरा है वहीं यह ट्रैकर्स की भी पसंदीदा जगहों में शुमार हो गया है।

रोचक कथा

कहा जाता है जब द्वापर युग में महाभारत का युद्ध चला हुआ था तो इस पहाड़ी प्रदेश के राजा रत्नयक्ष (जो त्रेतायुग में कमरुनाग के रुप में अवतरित हुए थे) ने हारने वाली सेना की तरफ से युद्ध लड़ने की घोषणा की। कौरवों की सेना उस समय हार रही थी। राजा रत्नयक्ष बहुत ही बलशाली और प्रतापी राजा थे। श्रीकृष्ण जानते थे कि यदि राजा रत्नयक्ष ने कौरवों की तरफ से युद्ध किया तो पांडवों की हार निश्चित है। अतः धर्म की रक्षा हेतु श्रीकृष्ण ने राजा रत्नयक्ष की परीक्षा लेकर उनका सर मांग लिया। रत्नयक्ष ने सिर तो काट कर दे दिया लेकिन उसके साथ-साथ उन्होंने महाभारत का युद्ध देखने की इच्छा भी जाहिर की। श्रीकृष्ण मान गए। रत्नयक्ष का कटा हुआ सर एक बांस के डंडे पर टांग दिया गया। यक्ष ने कटे हुए सर से युद्ध देखना शुरु किया। लेकिन जिस सेना की तरफ वह क्रोध से देखते वह सेना हारने लगती और जिस सेना की तरफ प्यार भरी निगाह डालते वह जीतने लगती थी। श्रीकृष्ण ने देखा कि यदि यही सिलसिला चलता रहा तो युद्ध बिना हार-जीत के ही समाप्त हो जाएगा। अतः उन्होंने रत्नयक्ष से निष्पक्ष भाव से युद्ध देखने की प्रार्थना की और यक्ष को पांडवों का ठाकुर (आराध्य देव) बनाने का वचन दिया। यक्ष मान गए और अंत में पांडवों की जीत हुई। वचनानुसार, हिमाचल में सरनाहुली नामक स्थान पर इस झील के किनारे राजा रत्नयक्ष की इच्छानुसार इनकी स्थापना का कार्य पूर्ण हुआ।

अनोखी परंपरा

कमरुनाग के मंदिर की यहां उपस्थिति के कारण झील को अब 'कमरुनाग झील' के नाम से जाना जाता है। पूरा मंदिर लकड़ी से तैयार किया गया है। मंदिर में कमरुनाग की पत्थर की प्राचीन मूर्ति विद्यमान है। मूर्ति के ऊपर भक्तगण श्रद्धानुसार फूल के साथ चावल चढ़ाते हैं। सदियों से यहां एक विशिष्ट परंपरा है। लोग मनोकामना पूर्ण होने पर

भेंट मूर्ति पर न चढ़ाकर झील में फेंक देते हैं। इसी के चलते इस झील में सोने-चांदी के गहने, रुपये, सिक्कों आदि का अथाह भंडार है। इसको चढ़ाने का भी एक शुभ समय है। जब देवता को 'कलेया' लगेगी अर्थात भोग लगेगा तब ही।

मझाड़ा-मझाड़ी मंदिर

कमरुनाग से शिकारी देवी मंदिर को ओर जब हम थोड़ा चलते हैं तो हमें रास्ते के साथ एक बड़ी शिला नजर आती है। इसमें और साथ ही के पेड़ पर लोहे के रिंग, त्रिशुल, आदमी और पशुओं की आकृति में कटे लोहे के पत्तरे सजे रहते हैं जो श्रद्धालुओं ने अपनी मन्नत पूरी होने पर यहां चढ़ाए हैं। कहते हैं कि मझाड़ा-मझाड़िन को कमरुनाग का मजाक बनाने के चलते कमरुनाग ने श्राप देकर पत्थर में बदल दिया था। लेकिन अपनी भूल का अहसास होते ही कमरुनाग ने उन्हें कहा था कि जब भी लोग मेरी पूजा करने आएंगे तो तुम्हारी भी पूजा की जाएगी। तभी उनकी पूजा पूर्ण मानी जाएगी।

शानदार ट्रैकिंग रुट

कमरुनाग झील तक की यात्रा ट्रैकिंग का एक बहुत ही शानदार विकल्प है। सुंदरनगर-करसोग मार्ग पर रोहाण्डा से लगभग 6 कि०मी० का यह ट्रैकिंग रुट बहुत ही दिलचस्प है। कच्चे, पथरीले, बड़ी-छोटी चट्टानों से होता हुआ हमें यह रास्ता 10938 फुट की उस ऊंचाई तक ले जाता है जो हमें जरा-सा मौसम खराब होते ही जेठ के महीने में भी दिसंबर की कंपकंपाती सर्दी का अहसास करवा देती है। बेहद थका देने वाले इस रुट से हमें कमरुनाग झील तक पहुंचने में साधारणतः दो से अढ़ाई घंटे तक का समय लग जाता है। यही नहीं, इस झील

स्थानीय लोगों का मानना है कि देव कमरुनाग हर साल अपने भक्तों को फूलों, सिक्कों या कागजी मुद्रा के प्रसाद के बदले में आशीर्वाद देने के लिए प्रकट होते हैं, जिसे वे कमरुनाग झील में फेंक देते हैं। झील के पास देव कमरुनाग की एक प्राचीन पत्थर की मूर्ति है, इसलिए झील का नाम पड़ा। प्रत्येक वर्ष जून के महीने में देव कमरुनाग के प्रकट होने की उम्मीद की जाती है, इस दौरान एक बड़ा मेला लगता है, जहाँ विभिन्न स्थानों से हजारों लोग देव कमरुनाग के दर्शन और पूजा करने और उनका आशीर्वाद लेने के लिए आते हैं।

तक पहुंचने के लिए और भी ट्रैंकिंग रुट आप अख्तियार कर सकते हैं। जिनमें चौकी, झुंगी, चैलचौक-सरोआ, जंजैहली वाया शिकारी या बूढ़ा केदार, ज्यूणी घाटी के जहल, शाला, देवीदहड़ और वाया मंडोगलु रुट प्रमुख हैं। ये सारे रास्ते जहां ट्रैंकिंग का अपना रोमांच रचते हैं वहीं इन इलाकों में बिखरा प्राकृतिक सौंदर्य अपने सम्मोहन से यात्रिओं की सारी थकान को छुमंतर कर देता है। ट्रैंकिंग के शौकीनों को एक बार यहां अवश्य ही जाना चाहिए। यह ताउम्र की उनकी निश्चय ही बेहद स्मरणीय, आनंददायी, रोमांचक और खूबसूरत यात्रा होगी।

कमरुनाग से शिकारी देवी को भी ट्रैकर लगभग 7 घंटे की पैदल यात्रा कर ट्रैकिंग का लुत्फ उठा सकते हैं। बस, शर्त इतनी भर है कि अपने खाने-पीने का सामान साथ लेकर चलें क्योंकि यहां पूरे रास्ते में कोई भी बाजार या दुकान आपको नहीं मिलेगी। हां, मेले के दौरान कुछ अस्थाई दुकानें जरुर लग जाती हैं।

वर्षा के देवता के रुप में मान्यता

कमरुनाग को 'बड़ा देव' भी कहा जाता है तथा इनकी मान्यता 'वर्षा के देवता' के रुप में भी है। सूखे की स्थिति में लोग कुल्लू, चच्योट, सुंदरनगर, मण्डी, बल्ह, करसोग आदि स्थानों से यहां आकर वर्षा हेतु पूजा-अर्चना करते हैं। कई लोग देव कमरुनाग को घटोत्कच के पुत्र बरबरीक का रुप भी मानते हैं। इसके पीछे उनका तर्क है कि बरबरीक भी एक शक्तिशाली राजा थे और उनका भी सर काट दिया गया था। कुरुक्षेत्र, जहां महाभारत का युद्ध लड़ा गया था में आज भी कमरुनाग की वीरता के किस्से सुनाए जाते हैं।

जड़ी-बूटियों की घाटी

कमरुघाटी में बर्फ पिघलने के उपरांत ढेरों जड़ी-बूटियां निकल आती हैं। बस, बात इतनी-सी है कि इनकी पहचान करने वाला कोई होना चाहिए। इस इलाके में सांप के फन की तरह की बूटी सभी यात्रियों को अपने

आकर्षण में बांध देती है। इसे 'नागफनी' के नाम से जाना जाता है। इसकी संरचना देखने वालों को हैरत में डाल देती है। यही नहीं, ज्येष्ठ-आषाढ़ माह में पूरी घाटी में उग आए छोटे-बड़े आकार के फूल पूरी घाटी को अपने सौंदर्य से लबरेज कर देते हैं। इस दौरान 'लिंगड़' भी घाटी में बहुतायत मात्रा में उगता है जिसका स्वाद आपको अपना दिवाना बना देता है।

मेला

हर वर्ष आषाढ़ मास के प्रथम प्रविष्टे को यहां मेले का आयोजन किया जाता है जिसमें हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचकर देव कमरुनाग की महिमा का गुणगान करके उनका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसी दिन झील में फेंका जाता है ढेर सारा सोना-चांदी, रुपये तथा सिक्के। इसी दिन यहां सैकड़ों बकरों की बलि भी दी जाती थी जिस पर अब कोर्ट के आदेशों के चलते कमी अवश्य आई है। लेकिन छुपकर यह काम अभी भी जारी है।

यात्रा का समय

कमरुघाटी में बरसात में घास के बढ़ जाने और नवंबर के अंत तक बर्फ गिर जाने के कारण या पूरा रास्ता खतरनाक हो जाता है। इन मौसमों में यहां जाना अपनी जान को जोखिम में डालने वाली बात हो जाती है। यहां जाने का सही समय बसंत के बाद बर्फ पिघलने और बरसात से पहले का सबसे सही है। इस दौरान यहां हिमाचल के आस-पास के प्रदेशों के श्रद्धालु तथा इस रुट को जानने वाले देशभर के ट्रैकर यहां दस्तक देते हैं।

कहां ठहरें

आषाढ़ मेले के अलावा लगभग पूरे वर्ष यह स्थान बिल्कुल सुनसान व निर्जन रहता है। कमरुनाग मंदिर के नजदीक कोई घर नहीं है। लेकिन यदि मेले के आसपास जाएं तो यहां पर बनी सरायों में आप ठहर सकते हैं। शर्त यही है कि मंदिर का कोई कर्मचारी मौजूद होना चाहिए। यदि आप यहां नहीं रहना चाहते तो आप रोहाण्डा में बने वन विभाग के रेस्ट हाउस या फिर यहां के गेस्ट हाउस में भी ठहर सकते हैं। दूसरी तरफ से जाने वाले चैलचौक में ठहर सकते हैं।

कैसे पहुंचें

यहां आप बस या फिर अपने निजी वाहन या टैक्सी के द्वारा पहुंच सकते हैं। सुंदरनगर-करसोग मार्ग पर 36 कि०मी० रोहाण्डा नामक स्थान तथा वाया चैलचौक-सरोआ, शाला या वाया मंडोगलु होकर आप गाड़ी में कमरुनाग के बेहद करीब पहुंच जाते हैं। शाला से कमरुनाग लगभग 19 कि०मी० की दूरी पर है। यह सड़क आधी पक्की और आधी कच्ची है। यह रास्ता इसलिए बढ़िया है क्योंकि यहां बिल्कुल खड़ी चढ़ाई नहीं चढ़नी होती। यहीं नहीं, यहां हैलीपैड का निर्माण भी किया गया है लेकिन अभी यहां हैलीकॉपटर की सुविधा शुरु नहीं हुई है। निकटतम हवाई अड्डा भुंतर (104 कि०मी०), रेलवे स्टेशन, जोगिन्द्र नगर (100 कि०मी०) है।

तो फिर देर किस बात की है। आइए, रुख करते हैं कमरुनाग घाटी की ओर श्रद्धा की डूबकी लगाने तथा प्रकृति को अपने भीतर जीने के लिए।

होम्योपैथी दिवस विशेष:

हैनीमैन ने दी विश्व को एक नई चिकित्सा पद्धति

डॉ0 अमलेन्दु त्रिपाठी
9795513223

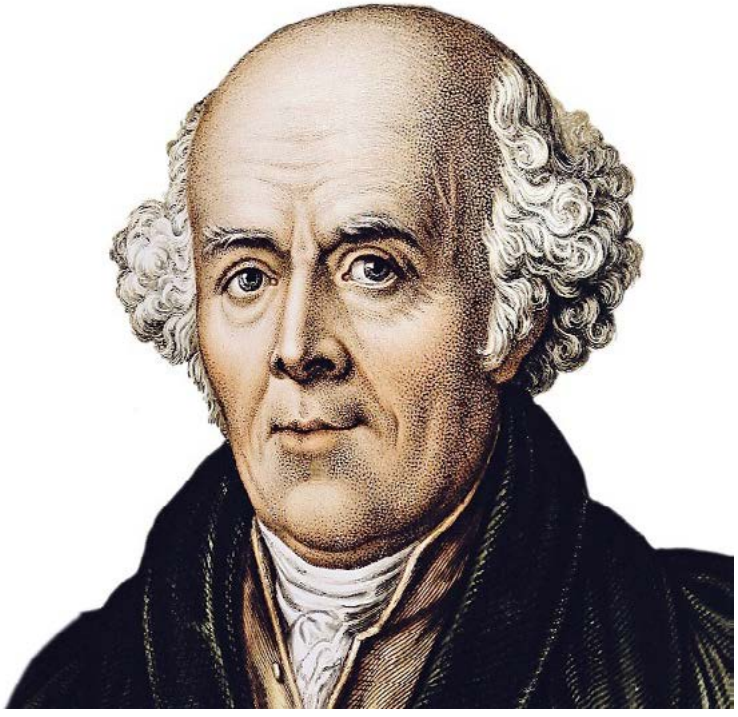

फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन की जयंती पर हर साल 10 अप्रैल को वर्ल्ड होम्योपैथी डे मनाया जाता है। भारत सहित कई देशों में यह चिकित्सा पद्धति काफी लोकप्रिय है।

भारत सहित कई देशों में ऐलापैथ जैसी चिकित्सा पद्धति का विकल्प देने वाले चिकित्सक डॉ. क्रिश्चियन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन की जयंती पर हर साल 10 अप्रैल को 'वर्ल्ड होम्योपैथी डे' मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवा में होम्योपैथी के योगदान के बारे में जागरूकता पैदा करना है। यह चिकित्सा के क्षेत्र में डॉ. सैमुअल हैनीमैन के योगदान का सम्मान करने का भी दिन है।

यद्यपि हैनीमैन की इस पद्धति की कारगरता और आरोग्यता के बारे में विभिन्न पद्धतियों के चिकित्सकों में मतभेद अवश्य रहे फिर भी विश्व में इसकी लोकप्रियता बढ़ती गई, खासकर भारत में जहां ऐलापैथी का सशक्त विकल्प आयुर्वेद मौजूद है, यहां अन्य देशों की तुलना में यह सर्वाधिक प्रचलित हुई। यह वैकल्पिक चिकित्सा प्रणाली शरीर की अपनी उपचार प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के लिए प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करती है।

18वीं सदी से चली आ रही होम्योपैथी

होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति शरीर की अपनी हीलिंग प्रक्रिया को जागृत करने के लिए प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करती है। जिसके सिद्धान्तों को जर्मन चिकित्सक डॉ. सैमुअल हैनीमैन ने 18वीं शताब्दी के अंत में विकसित किया था। यह "लाइक क्योर लाइक" के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि एक पदार्थ जो एक स्वस्थ व्यक्ति में लक्षण पैदा कर सकता है, वह एक बीमार व्यक्ति में समान लक्षणों को ठीक कर सकता है।

विश्व होम्योपैथी दिवस पर, लोगों को होम्योपैथी के लाभ के बारे में शिक्षित करने के लिए विभिन्न सेमिनार, कार्यशालाएं और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। होम्योपैथी ने चिकित्सा के वैकल्पिक रूप में वर्षों से लोकप्रियता हासिल की है और इसकी प्रभावशीलता कई अध्ययनों द्वारा साबित हुई है।

डॉ. सैमुअल हैनीमैन (1755-1843) एक जर्मन चिकित्सक और होम्योपैथी के संस्थापक थे। हैनीमैन ने 1779 में एर्लांगेन विश्वविद्यालय से चिकित्सा की डिग्री प्राप्त की और जर्मनी के विभिन्न हिस्सों में चिकित्सा का अभ्यास किया। हैनीमैन का अपने समय के कठोर चिकित्सा उपचारों से मोहभंग हो गया था। जिसमें अक्सर रक्तस्राव, शुद्धिकरण

और पारा जैसे विषाक्त पदार्थों का उपयोग शामिल था।

उन्होंने शरीर की अपनी हीलिंग प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने के तरीके के रूप में पौधों और खनिजों जैसे प्राकृतिक पदार्थों के उपयोग के साथ प्रयोग करना शुरू किया। 'ऑर्गन ऑफ द मेडिकल आर्ट' यह हैनीमैन की सबसे प्रसिद्ध उपलब्धि है और होम्योपैथी के सिद्धांतों और प्रथाओं को रेखांकित करती है। ऑर्गनॉन ग्रन्थ पहली बार 1810 में प्रकाशित हुआ था और इसे कई बार संशोधित किया गया।

दो यूनानी शब्दों से बना है होम्योपैथी

होम्योपैथी दो यूनानी शब्दों, होमियोस और पथोस का मिश्रण है। होमियोस का अर्थ है समान और पथोस का अर्थ है दुख। दूसरे शब्दों में, होम्योपैथी उपचार के साथ रोगों के इलाज की एक प्रणाली है। होम्योपैथिक उत्पाद पहाड़ की जड़ी-बूटियों, सफेद आर्सेनिक जैसे खनिजों, जहर आइवी, और कुचल मधुमक्खियों जैसे जीव जन्तुओं से बनाए जाते हैं। ये होम्योपैथिक उत्पाद चीनी छर्रों, मलहम, गोलियों, जैल, क्रीम और बूंदों के रूप में होते हैं। उपचार प्रत्येक व्यक्ति की जरूरतों के अनुसार तैयार किया जाता है।

रोगों में काफी कारगर है होम्योपैथी

होम्योपैथी चिकित्सकों का मत है कि इस पद्धति का उपयोग अक्सर एक व्यापक श्रेणी की बीमारियों के इलाज के लिए दवा के पूरक या वैकल्पिक रूप में किया जाता है। फिर भी कुछ बीमारियों में इसे ज्यादा कारगर माना जाता है। इन बीमारियों में एलर्जी, दमा, वात रोग, चिंता और अवसाद, क्रोनिक फटीग सिंड्रोम, माइग्रेन और सिरदर्द, पाचन विकार, इरिटेबल बाउल सिंड्रोम (आईबीएस), त्वचा की स्थिति (जैसे एक्जिमा और सोरायसिस), मासिक धर्म संबंधी विकार, जैसे मासिक धर्म में ऐंठन और अनियमित अवधि, श्वसन संक्रमण, जैसे सर्दी और फ्लू आदि।

लेकिन अपनी विशिष्ट स्थिति के लिए उपचार का सर्वोत्तम तरीका निर्धारित करने के लिए एक योग्य स्वास्थ्य सेवा प्रदाता से परामर्श करना जरूरी है। गौरतलब है कि होम्योपैथी की स्वीकृति और लोकप्रियता देश और क्षेत्र के आधार पर काफी भिन्न होती है, और स्वास्थ्य देखभाल के वैध रूप के रूप में इसका उपयोग और मान्यता अभी भी दुनिया के कुछ हिस्सों में बहस और विवाद का विषय है।

कई देशों में प्रचलित है होम्योपैथी

होम्योपैथी दो शताब्दियों से चल रही है और आज तक मानवता की सेवा करती आ रही है। यह दुनिया के कई देशों में प्रचलित है और इसने भारत में भी सर्वाधिक लोकप्रियता हासिल की है। होम्योपैथी को एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के तौर पर भारत, ब्राजील और जर्मनी जैसे कुछ देशों में व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है ।

जर्मनी में भी होम्योपैथी लोकप्रिय है, यहां 6,000 से अधिक होम्योपैथिक डॉक्टर बताए जाते हैं और वहां वैकल्पिक चिकित्सा के रूप में होम्योपैथी का उपयोग करने की एक लंबी परंपरा है। अन्य देश जहां होम्योपैथी लोकप्रिय है, उनमें फ्रांस, अर्जेंटीना, मैक्सिको, इटली और स्पेन शामिल हैं। जबकि कई अन्य देशों में, होम्योपैथी व्यापक रूप से स्वीकृत या प्रचलित नहीं है। जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में होम्योपैथी को खाद्य एवं औषधि प्रशासन (एफडीए) द्वारा नियंत्रित नहीं किया जाता है और इसे दवा का एक पूरक और वैकल्पिक रूप माना जाता है।

भारत और ब्राजील में है सर्वाधिक लोकप्रिय

भारत में होम्योपैथी के उपयोग का एक लंबा इतिहास रहा है। अनुमान है कि भारत में 10 करोड़ से अधिक लोग होम्योपैथी का उपयोग अपने स्वास्थ्य की रक्षा के लिए करते हैं। उदाहरण के लिए, भारत में 200,000 से अधिक पंजीकृत होम्योपैथिक डॉक्टर और 7,000 से अधिक होम्योपैथिक अस्पताल और औषधालय हैं।

सरकारें स्वयं होम्योपैथिक अस्पताल चलाती हैं। भारत के बाद ब्राजील एक ऐसा देश है जहां होम्योपैथी काफी लोकप्रिय है और व्यापक रूप से प्रचलित है, जिसमें 15,000 से अधिक पंजीकृत होम्योपैथिक डॉक्टर और बड़ी संख्या में होम्योपैथिक फार्मेसी हैं।

राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान देता है डिग्री

भारत में राष्ट्रीय होम्योपैथी संस्थान स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन है। इसकी स्थापना 10 दिसंबर 1975 को कोलकाता में हुई थी और अब यह आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन है। यह संस्थान 2003-04 तक कलकत्ता विश्वविद्यालय से संबद्ध था और 2004-05 के सत्र से पश्चिम बंगाल स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय से संबद्ध है और होम्योपैथी में डिग्री पाठ्यक्रम संचालित करता है।

बैचलर ऑफ होम्योपैथिक मेडिसिन एंड सर्जरी इस संस्थान द्वारा प्रस्तावित डिग्री पाठ्यक्रमों में से एक है। यह पाठ्यक्रम 1987 से शुरू किया गया है और इसकी अवधि साढ़े पांच साल है, जिसमें एक साल की इंटर्नशिप भी शामिल है।

नोट- होम्योपैथी में रोग के कारण को दूर कर के रोगी को ठीक किया जाता है। प्रत्येक रोगी की दवा उसकी शारीरिक और मानसिक अवस्था के अनुसार अलग-अलग होती है। अतः बिना चिकित्सकीय परामर्श यहां दी हुई किसी भी दवा का उपयोग न करें।

रोग और होम्योपैथी दवा के बारे में और अधिक जानकारी के लिए

स्वस्थ जीवन के मूल सिद्धांत

मुकेश कुमार सिंह
योगगुरु

मानव शरीर भगवान की अमूल्य देन है। एक सुखी एवं सफल जीवन का आधार है स्वस्थ और निरोगी काया । इसलिए कहा जाता है कि स्वास्थ्य से बड़ा कोई धन नहीं है। स्वास्थ्य के अभाव में सब बेकार है।आज आधुनिक जीवनशैली में रोग हर घर में पहले की तुलना में बहुत से बढता जा रहा है शायद कोई ही ऐसा घर हो जिसमें परिवार के सदस्य को बिमारियां न हो जैसे-जैसे हम विकास की तरफ तेजी से बढ रहे है उसी तरह से रोग भी बहुत तेजी से बढ रहे है पहले से ज्यादा अस्पताल खुलते जा रहे है और दिन व दिन मरीजों की संख्या भी बढती जा रही है और कई नये -नये रोग होते जा रहे है अब तो बच्चों को बचपन से ही चश्मा लगने लगा है साथ ही ह्रदय रोग की बिमारियां और मोटापा भी तेजी से बढाने लगा है जिसके कारण भी कई सारे अन्य रोग और होने लगे है जैसे कमर दर्द, थायरायड, एसिडिटी, डायबिटीज, और मानसिक रोग बहुत तेजी से बढ रहे है। इस रोगों के शिकार सभी आयु वर्ग के लोग हो रहे है । साथ में बढते प्रदूषण के कारण भी कई सारे रोगों को जन्म दे रहे है और सबसे बढा कारण खान-पान में बढता फास्ट फूड जिसके कारण बच्चे और महिलायें और पुरूषों मे भी बिमारियों बहुत तेजी से बढ रही है। इसके साथ ही बिगडती दिनचर्या के कारण न सोने का सही समय है न ही जगने के इस कारण रोग बढते जा रहे है। स्वस्थ एवं निरोगी जीवन के मूल सिद्धान्त है।

आहार, श्रम, विश्राम, मानसिक संतुलन, प्रकृति का साथ

आहार

आहार संयम स्वस्थ जीवन का पहला सूत्र है। आधुनिक जीवनशैली में आहार स्वास्थ्य के लिए कम स्वाद के लिए ज्यादा खाया जा रहा है। पेट भर जाने के बाद भी स्वाद के लिए भोजन करते रहते है। जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होता है हम कभी यह भी नहीं सोचते है कि जो आहार हम खा रहे है क्या

वह स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है या नहीं कुछ भी ध्यान नहीं देते है। भोजन की मात्रा कार्यशैली पर भी निर्भर करती है। जैसा कार्य उसी अनुरूप भोजन भी करना चाहिए। भोजन भूख से थोडा कम करना चाहिए, स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता हैं। शाकाहारी भोजन एवं मौसमी साग सब्जी अपने भोजन में जरूर शामिल करें , भोजन का छोटा ग्रास लेकर शांत चित्त से अच्छी तरह से खूब चबा-चबाकर करना चाहिए। जल्दबाजी में भोजन करने से दॉत का काम भी आंत को करना पड़ता है जिससे पाचन तंत्र पर अधिक जोर पड़ता है दीर्घकालीन दुर्बलता से पाचन तंत्र के कई रोग होने लगते है। इसलिए दूध और फल का सेवन प्रायः में खाये जिससे शरीर और मन दोनों ही स्वस्थ रहते है मिताहार स्वस्थ जीवन का सबसे बड़ा अंग है।

श्रम

जीवन में भोजन तथा श्रम दोनों का बहुत ही महत्व है यह हम सभी लोग जानते है आज आधुनिक जीवनशैली में हम सब स्वाद के चक्कर में भोजन खूब करते है परन्तु शारीरिक श्रम नहीं करते है जिसके कारण आज मधुमेह, मोटापा, थाइराइड, हृदयघात जैसे रोग ज्यादा

हो रहे है, आज हम सभी जैसे ही मौसम परिवर्तन होता है या बरसात में भीग जाते है वैसे ही हम बीमार हो जाते है,और डॉक्टर के पास जाते है डॉक्टर दवा देता है और हम यह भी पुछते है कि डॉक्टर साहब क्या आहार लें जिससे हम स्वस्थ और ताकतवर बने रहें। डॉक्टर द्वारा पौष्टिक भोजन दूध,घी, फल,और मेवे का सेवन बताता है। लेकिन आज डॉक्टर और रोगी दोनों इस बात को भूल जाते है कि उपयुक्त श्रम के अभाव के बिना अच्छे से अच्छा पौष्टिक आहार का काई उपयोग नहीं है उल्टे वह शरीर के लिए भार बनकर रोग उत्पन्न करता है। स्वस्थ रहने के लिए नित्य योग,व्यायाम,के साथ को स्थान देते हुए शारीरिक श्रम की आवश्यकता पूरी की जा सकती है, सुबह का नियमिति टहलना स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक होता है सुबह की ताजी और शुद्व प्राणवायु में गहरी सॉस लेते हुए टहले वह शरीर को बाहर से ही नहीं अन्दर से भी एक नयी ऊर्जा उत्पन्न होती है जिससे शरीर तो स्वस्थ होता है अन्दर से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता रहता है। जिस दिन शारीरिक श्रम न हो उस दिन भोजन कम ही लें।

विश्राम

भोजन और श्रम के साथ विश्राम के पश्चात नवजीवन का संचार होता है हम सभी लोग प्रतिदिन शारीरिक व मन से दिनभर श्रम करते है थककर चूर हो जाते है लेकिन रात में गहरी नींद शरीर में पुनः शक्ति तथा मन में नयी उमंग उठने लगती है । विश्राम के बाद श्रम तथा श्रम के बाद आराम दोनों एक-दूसरे के पूरक है। थके हुए व्यक्ति को पेटभर भोजन कराने से उसमें शक्ति नहीं आयेगी । शक्ति विश्राम से आती हैं। निद्रा विश्राम का सर्वोत्तम साधन है। निद्रा 6-7 घंटे लें निद्रा कम लेने से शरीर में थकान सी बनी रहती है। सभी अवयव थके एंव सुस्त रहते है । जिसके कारण किसी कार्य को करने में मन नहीं लगता है।

मानसिक संतुलन

शरीर हमेशा मन का अनुगामी है मन में संकल्प उठता है उस पर विवके निर्णय देता है

फिर उस संकल्प को काल्पनिक चित्र खीचता है और इसके बाद ही शरीर द्वारा क्रिया प्रारम्भ की जाती है। मन के स्वस्थ रहने पर शरीर सहज रूप से स्वस्थ रहेगा। इसके विपरीत अस्वस्थ चित्त से शरीर में रोग उत्पन्न होना स्वाभाविक है ऐसा कई बार देखा जाता है कि बाह्य परिस्थितियों के कारण शरीर रोगी बन जाता है लेकिन अगर मन स्वस्थ रहे और रोग का असर मन पर बिल्कुल न होने दिया जाय, जोकि पूर्णतः सम्भव है , तो शरीर अनुकूलता प्राप्त होने पर बड़ी आसानी से स्वास्थ्य लाभ कर सकता है। मन शांत और प्रसन्न रहने पर समान्तयः शरीर स्वस्थ रहेगा । मन में अशांति ,क्रोध ,ईर्ष्या ,राग-द्वेष से शरीर को रोगी बनने से रोका नहीं जा सकता है। मानसिक स्वस्थता ही आरोग्य की कुंजी है। मन और शरीर दोनों शुद्ध और स्वस्थ रहने पर ही आरोग्य सुरक्षित रह सकता है। मानसिक संतुलन बनाये रखने के लिए अपने ईश्वर की प्रार्थना करना। स्वस्थ रहने का अर्थ है खुद में खुश रहना ।

प्रकृति के साथ

आज की बदलती जीवनशैली में देर से सोना देर से जागने को भी आधुनिक जीवनशैली का हिस्सा मानने लगे है अच्छी सेहत के लिए जल्दी सोना और जल्दी उठने की बात कही गयी है परन्तु आज देर से सोना और देर से उठाना ही हमारे स्वास्थ्य के लिए बहुत हानिकारक हो सकता है। कभी किसी कारण वश जगना और देर से उठाना नुकसान देह नहीं है लेकिन जो इस अपनी जीवनशैली में नियमित अपनाते है । उनके लिए हानिकारक होता है। शास्त्रों में भी कहा गया है कि सुबह सूर्योदय से एक घंटा पहले उठना किसी दवा से कम नहीं है सुबह जल्दी उठे और टहले सुबह की शुद्ध ताजी हवा हमारे शरीर में तेज , बल,शक्ति ,स्फूर्ति एवं मेधा का संचार होता है जिससे मन प्रसन्न और शांत हो जाता है। सुबह उठे जितना हो सके प्रकृति के साथ रहे क्योकि सुबह का वायुमंडल प्रदूषणरहित होता है इस समय पूरे दिन के मुकाबले वातावरण में आक्सीजन की मात्रा सबसे ज्यादा होती है सुबह की शुद्ध हवा हमारे तन और को स्फूर्ति देती है जिससे हमारे फेफडों को शक्ति मिलती है जितना ही सुबह प्रकृति से साथ रहेगे उतनी ही ज्यादा शुद्ध आक्सीजन मिलेगी। इसी लिए कहा जाता है कि प्रातकालः योग और प्राणायम करे और टहले जिससे हम स्वस्थ और निरोगी रहे। नियमित करें बहुत ही लाभ मिलता है । बहुत ही पुरानी कहावत है कि सुबह शाम की हवा लाख रूपये की दवा के बराबर है। इसलिए प्रकृति के साथ जुडे शुद्ध सुबह उगते सूर्य को दर्शन करें जो सबको ऊर्जा देता है । और जितना हो सके पेड पौधे लगाये जिससे ज्यादा से ज्यादा शुद्ध आक्सीजन हम सभी को मिल सके । जिससे हम सभी स्वस्थ और निरोगी रहें।

बंधक

श्यामल बिहारी महतो
बोकारो, झारखंड

पोखरणपुर गांव में। एक मदारी सा मेरा स्वागत हुआ था इसके साथ ही सबकी नजरें मुझपर आ टिकी थीं, मानो कोई अजूबा प्राणी हूँ और भूले-भटके उस गांव में पहुंच गया हूँ मेरी बाईक के दोनो छोर पर टंगे दो बडे बडे झोले और पीछे कैरियर में बंधा बोरी ने एक समा सा बांध दिया था। यह देख लोगों के बीच फुसफुसाहटें शुरू हो गयी थीं। मुझे अच्छी तरह याद है, उबड खाबड रास्तों पे चलते दो दो नालें और एक बहती नदी को पार करने में कितनी मस्सकत करनी पडी थी तब मुझे।

पोखरणपुर गांव के उतर दक्षिण आधा किलो मीटर पर बहती थी खरखरी नदी! सर्पाकार! और नदी के उस पार था घना जंगल! गांव के मुहाने से साफ दिखता था। नदी के दोनों किनारे सखुआ शीशम के जंगल दूर तक चला गया थाा पहले लोग दिन में भी इस जंगल में घूसने से डरते थे। खास कर औरतें! यदा-कदा नक्सली नजर आ जाते थे। अगर मैंखरखरी नदी की बात करूं तो यह नदी पोखरणपुर गांव के लोगो के लिए वरदान और अभिशाप दोनों थी। बारह माह पोखरणपुर की प्यास बुझाती थी परन्तु बरसात मे कभी कभी अपनी तेज बहाव में लोगो को बहा भी ले जाती थी। डर से हित कुटूम्ब लोग बरसात में पोखरणपुर आना जाना बंद कर देते थे।

उस दिन मैं घने जंगल की राह चल पडा था , उसी पोखरणपुर गांव की ओर! विकास की राह जोहते, उबड खाबड मुंह चिढाती कच्ची सडकें। बाइक की गति कभी कम तो कभी बढा देना पडता था। मन में एक डर भी लगा हुआ था और पेशाब भी लेकिन डर था कि बाइक रोक नहीं पाता फिर कहीं किसी जंगली जानवर भेंटा न जाए। पहले एक सियार फिर एक हुंडार ने अभी तक अपना दर्षन दे चुके थे। मुश्किल से अभी आधा किलोमीटर आगे बढा था कि सामने एक जंगली सूअर पष्चिम दिशा से भागता हुआ सडक पर निकला और पूरब की झाडियों में छंलाग लगा दी। इसके साथ "मारो.. मारो.. मारो का एक डरावना ष्षोर पीछे से आता सुनाई पडा। मेरे शरीर के सारे बाल सिहर उठे, लगा जान संकट में आन पडी है कि तभी हाथ में कुल्हाडी पकडे डाकू अंगुलीमाल की तरह एक

शिकारी
अचानक मेरे सामने आ गया ...

मैं गिरते गिरते किसी तरह बचा। लेकिन डर ने अपना काम कर दिया। झट से पेषाब निकल गया और पेन्ट गिली हो गयी। मैं समझ गया आगे और भी बहुत कुछ होने वाला है सूअर तो शिकारी के हाथ से बच निकला परन्तु मेरे पास अब कुछ नहीं बचेगा। वह खडा हो गया था बिल्कूल मेरे सामने, गज भर की दूरी पर, काला भूजंग सा वह मनुस्य कम आदिम मानव ज्यादा लग रहा था। पहनावे में टेहूना से उपर धोती बांधे और माथे पर एक लाल रंग का गमछा लपेटे हुए था। कसा हुआ भारी शरीर। मुझे लगा , एक हाथ मारेगा और सारा कुछ ले जंगल में समा जायेगा तभी सुना " खैनी....।" डरते डरते मैंने ना में सिर हिलाया। उसकी आंखो में अजीब सी बैचेनी थी

"ब बीडी ...." फिर मैंने वही किया। इस बार देखा नहीं । आगे निश्चित तौर पर पैसे की ही मांग करेगा। मैं अनुमान लगा रहा था।

फिर सुना "कहां जाहिं..!"

"प पोखरणपुर..." बडी मुश्किल से डरते डरते मुंह से निकला था , मन को ढाढस मिला तो मैंने झट दरिया दिली दिखायी और बाइक की डिकी से पानी का बोतल निकाल उसकी तरफ बढा दिया। उसने लपकते हुए बोतल पकडा और हाथ से इशारा करते कहा " जा " मेरी जान मे जान आई। मैंने देखा वह तेजी से उसी दिशा में आगे बढ गया था जिधर सूअर ने अभी अभी छंलाग लगाई थी।

डेढ दसक पहले पोखरणपुर नक्सलीयों का मांद के रूप में जाना जाता था। दिन को भी लोग उधर जाने से कतराते-डरते थे। कभी कभी दिन में ही अचानक जंगल से गोलियों की आवाज इस कदर आने लगती थी जैसे दीपावली में पटाखे फुटने की आवाज आती हो। डर और खौफ के साये में जीने को अभिशप्त थे पोखरणपुर वासी। अभी मैं उसी पोखरणपुर गांव में कदम रखने जा रहा था कि पूछ ताछ के क्रम में एक युवक बातों बातों में मेरी बाइक पर ऐसे सवार हो गया जैसे खेलते खेलते कोई बच्चा कंधे पर सवार हो जाता है ....।

"सर, आप कहां से आ रहे है? पोखरणपुर गांव में आप किससे मिलने जा रहे है ? बताइए मैं आपको उसके घर तक सीधे सीधे पहुंचा दूंगा।"

"कहीं यह लडका नक्सलीयों का मुखबिर

तो नहीं है " मन में एक ख्याल आ गया था। कई साथियों ने सावधान किया था और कहा था कि भेद जानने अजनबियों पर नजर रखने के वास्ते आज भी नक्सली हर गांव टोलों में अपना गुप्तचर छोडे रखता है। धत ! मन में क्या विचार लेकर बैठ गया।

यह सब पहले हुआ करता था। अब नक्सली भी चुनाव लडने लगे हैं। अब गुप्तचर रखने का क्या औचित्य!

लगा लडका कान खायेगा!

"नाम क्या है तुम्हारा"मैंने पूछा था

"सोहन "लडके ने बताया

"सुगिया को जानते हो?"

"कौन वो सुगिया जो अपने काका घर में नौकरानी बनी हुई है?"

" नौकरानी! तुम कैसे जानते हो वह नौकरानी है ?"

"सारा गांव जानता है सर! बेचारी!" लडका ने मुंह बनाया। स्वर भी बेचारगी से भर गया था।

"और क्या जानते हो सुगिया के बारे में? "अब मैं लडके के दिमाग में सवार होना चाहा था।

" सर सब बताउंगा, वह उस टोले में रहती है " कह लडके ने दूर के एक टीले पर ले गया, कहा टोले पर और ले आया टीले पर। मैंने लडके की ओर देखा तो वह दूसरी ओर देखने लगा। मैं समझ गया आज जिंदगी की कठिन इम्तिहान है। टीले पर आठ दस लोग पहले से मौजूद थे। बीच में एक चटान थी जिस पर मलखान सिंह जैसा एक आदमी बैठा हुआ था, कंधे पर उसने लाल रंग का गमछा डाल रखा था। उनकी बडी बडी आंखों में मैं सवाल की तरह टंग गया था। बाकी नजरें घूरने में लग गयी थीं। मेरा गला सूखने लगा था। पास में पानी भी नहीं था। पानी बोतल शिकारी को दे आया था। मैं किसी को याद भी नहीं कर सकता था क्योंकि संसार की काल्पनिक चीजों पर न भरोसा था न विश्वासा ही। बस मां को याद कर लिया। दिल को राहत महसूस हुआ।

"कौन है कहां से है कुछ बताया!'

"नहीं कामरेड दा, पूछा नहीं सीधे इधर ले आया " उसी लडके का जवाब था।

"स्याला ....." मैं मन ही मन उस लडके गाली देने लगा था।

"आप कहां से है किस मकसद से पोखरणपुर आना हुआ ..!"

"अखबार में सुगिया के बारे पढा था उसी की आर्थिक सहयोग के लिए आया हूँ। और दूसरा कोई मकसद नहीं है " मुंह से साफ निकल गया

" समाजसेवी हो !"

"छोटा मोटा " मेरा छोटा सा जवाब था।

इस बीच मेरे समानों की अच्छी तरह जांच पडताल हो चुकी थी। दो आदमीयों ने मेरे शरीर की भी जांच कर ली। तब हुक्म सा हुआ -" सुगिया से मिला दो "

हम अब टीले से टोला की ओर लौट पडे थो मैं उस लडके सोहन से बात नहीं करना चाहता था। पर वह तो खुद ब खुद बकने लगा-

"उसके बारे कोई एक बात हो तो बताउं.." मैं चुप रहा। उसने बकना जारी रखा-" उसके जैसा अभागन मैंने आज तक नहीं देखा। उसकी तकदीर में तो जैसे दुखों ने डेरा ही डाल रखा है। इतनी सी उम्र में ही उसने जीवन के कई उतार चढाव देख लिया है "लडका कहता चला गया और मैं केवल सुनता चला गया " कहते है अभाव के घाव कभी भरते नहीं, और सुगिया के जीवन में तो अभाव ही अभाव है। उसके जीवन की बडी अजीब कहानी है। जिसे सुनकर पत्थर दिल इंसान भी सुसक पडे। कुपोषण से उपजी जानलेवा बीमारी टीबी ने उसके परिवार वालों को एक एक कर लीलता गया। कुपोषण के कोख से किसी तरह बच निकला छोटा भाई खेदना के साथ जीवन के लिए संघर्स कर रही है सुगिया। टीबी से ग्रसित मां इलाज के अभाव में दो वर्स पूर्व पहले चल बसी थी। एक वर्ष पूर्व बड़ा भाई भी टी. बी. और पीलिया से लडते लडते इलाज के अभाव में अंततः दम तोड दिया था। आखिरी सहारा पिता भी दो माह पूर्व टीबी से जंग लडते लडते हार गया। उसके बाप के हिस्से की जो थोडी बहुत जमीन जायदाद थी इलाज में सब बिक गयी...। " एक पल के लिए वह लडका रूका था फिर चालू हो गया -" एक आखरी झोपडी थी जो बरसात में गिर कर ढह गई है। चाचा के घर शरण लेकर जीवन की जंग लड रही है सुगिया! बदले में चाची के सारे कामों को अपने सर ले रखी है पर अभी तक इसकी मदद को कोई आगे नहीं आया था , आप पहले मददगार के रूप में....। "

" फिर किसी दूसरे टीले पर ले जा रहे हो क्या" बीच में ही मैंने टोका था

" नहीं.."

अब हम सुगिया के झोपडी के सामने खडे थे।

एक अजनबी जब किसी अंजान जगह पर पहुंचता है तो अकस्मात कईयों के निगाहों में आ जाता है। यहां भी मुझपर ढेर सारी नजरें उग आयी थीं ।

कहा तो यह भी जाता है कि एक दौर था जब सरकारी योजनाओं को भी पोखरणपुर की जमीन पर जन्म लेने से पहले सौ बार सोचना पडता था। लेवी का लेबल हर योजना में चिपका होता था। सडक का अलग पुल-पुलिया का अलग और तो और इंदिरा आवास भी अछुता नहीं था लेवी से। पेड पौधे पर भी नक्सली डर चिपका हुआ होता था।

एक Wकहावत और चल पडी थी कि पोखरणपुर की माताएं भले बेटा बेटी पैदा करती थी लेकिन भूख और बेरोजगारी की कोख से पोखरणपुर के हर घर से नक्सली पैदा हो रहे थे। **क्रमशः**

जिज्ञासा और लालसा

तारादत्त भट्ट

मनुष्य के भीतर जो इच्छा रहती है उसके तीन भेद है कामना, जिज्ञासा और लालसा संसारिक भोग और संग्रह की कामना होती है स्वरूप ;निगुर्ण तत्वद्ध की जिज्ञासा होती है और भगवान ;सगुण तत्वद्ध की लालसा होती है।

संसार जो कि कामना है वह मूल से पैदा हुई है। कारण कि हमारे अन्दर एक तो परमात्मा का अंश है और एक प्रकृति का अंश है। परमात्मा का अंश जीवात्मा है- 'ममौवांशो जीवलोके' और प्रकृति का अंश शरीर है- 'मनः षष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृति स्थानि मै क्या हूँ?- इस प्रकार स्वरूप (जीवात्मा) को जानने की इच्छा जिज्ञासा है और भगवान कैसे मिलें? उनमें प्रेम कैसे हो? इस प्रकार भगवान को पाने की इच्छा लालसा है। जिज्ञासा और लालसा ये दोनों इच्छाऐं अपनी है, पर कामना अपनी नही है।, क्यों कि जिज्ञासा और लालसा सत्-तत्वकी होती हैं। पर कामना असत् की होती है।

कामनाऐं शरीर को लेकर होती है। बहुत से भाई-बहन शरीर को मुख्य मानते हैं। पर वास्तव में शरीर मुख्य है। जो शरीर में अपना रहना मानता है वह शरीर मुख्य है। शरीर तो कपड़ों की तरह है।

"वासांसि जीर्वानि यथा विहाय नवानि गृहाति नरोडपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।"

जैसे मनुष्य पुराने कपड़ों को छोड़कर नये कपड़ों को छोड़कर नये कपड़े पहन लेता है, ऐसे ही वह ;शरीरद्ध पुरानें शरीरों को छोड़कर नये शरीर को धारण कारता है। शरीर हर दम बदलता है। इसलिए शरीर को जो कामनाऐं होती है, वे अपनी नहीं है। शरीर संसार की ईच्छा के कई नाम हैं, जैसे कामना, आशा, वासना तृष्ण आदि अमुख वस्तु मिल जाय, धन मिल जाय भोग मिल जाय कुटम्ब मिल जाय घर मिल जाय- ये इच्छाएँ सच्ची नहीं है। ये इच्छाऐं सभी योनियों में होती है। मनुष्य की इच्छाऐं कुछ और होती है, कुत्ते की इच्दाऐं और होती है, सिंह की इच्छाऐं और है। ऐसे ही

गाय-भैंस भेड़ बकरी आदि की अलग-अलग इच्छाऐं होती हैं। तात्पर्य है कि शरीर बदलते रहते हैं और इच्छाऐ भी बदलती रहती है वृक्षों को खाद तथा पानी की इच्छा होती है। ये मिले तो वृक्ष हरे हो जाते है ये न मिले तो तो वो सूख जाते है परन्तु जिज्ञासा और लालसा ये सिर्फ मनुष्य के अन्दर होती है। अन्य शरीरों की इच्छा है जिज्ञासा और लालसा असुरों व राक्षसों में नहीं होती है भूत प्रेत पिचास में नहीं होती यह देवताओं में हो सकती है पर उनमें भी योग भोगने कि इच्छा मुख्य रहती है जैसे मनुष्य लोक में ज्यादा धनी लोगों योग भोगने कि और धन संग्रह करने कि एक महात्मा ने पुछा हमारे पास इतने रूपये हैं कि कई पीढियों तक जीवन निर्वाह हो जाये फिर और रूपये कमा के क्या करोगे। उस धनी व्यक्ति ने बडी संज्नता से उत्तर दिया कि स्वामी जी इसका उत्तर हमारे पास नहीं है केवल एक ही धुन है धन कमाओ धन कमाओ उस धन का क्या करोगे इस तरफ ख्याल नहीं है पूरा धन भोग तो सकते नहीं अतः छोड कर मरना पडेगा। केवल भोगों की इच्छा रखने वाले मनुष्य कहलाने योग्य नहीं है मनुष्य कहलाने योग्य वहीं है जिसमें अपने स्वरूप की जिज्ञासा और परमात्मा की लालसा है। अपने स्वरूप को जानने की और परमात्मा को प्राप्त करने की इच्छा मनुष्य में ही हो सकती है यह सामर्थ्य मनुष्य में ही है परन्तु इसको छोड कर जो भोग और संग्रह में लगे हुए है उनमें मनुष्यपना नही है परन्तु पशुपना है भगवान ने इनको पशुबुद्धि कहा गया है।

पशुबुद्धिमियां जहि,

मैं कौन हू? मेरा मालिक कौन है? यह जानने की इच्छा मनुष्यबुद्धि है

इस दुनिया में एक अंधेरा सबकी आखों में जो छाया
जिसके कारण सूक्त पडे नहीं, कौन हूँ मैं कहा से आया।।
कौन दिशा को जाना मुक्त को किसको देख में ललचाया,
कौन है मालिक इस दुनिया का, किसने रची है यह माया।।

जिज्ञासा मनुष्य में हो सकती है पशुओ में गाय बडी पवित्र है मल और मूत्र किसी का भी पवित्र नहीं होता पर गाय का गोबर एंव गोमूत्र पवित्र होता है पवित्रता के लिए गोमूत्र छिडका जाता है , गोबर का चौका लगाया जाता है। ऐसी पवित्र होने पर भी गाय में भी यह जानने कि शक्ति नहीं है कि मेरा स्वरूप क्या है?

परमात्मा क्या है इसको मनुष्य ही जान सकता है मनुष्य जन्म के सिवाय और कोई जानने की जगह नहीं है यह मौका मनुष्य जन्म में ही है। इस जन्म में ही अपने आप को जान सकते हैं। भगवान को प्राप्त कर सकते हैं, भगवान में प्रेम कर सकते हैं अगर मनुष्य शरीर में आकर यह काम नहीं किया तो मनुष्य शरीर निरर्थक गया। कामनाऐं सदा बदलती रही हैं पर जिज्ञासा और लालसा सदा एक रहती हैं, कभी बदलती नहीं, कारण कि ये दोनों खुद कि हैं खुद कमी बदलता नहीं, शरीर बदलता रहता है। ऐसे ही इच्छाऐं बदलती हैं। भाव बदलते हैं रहन सहन बदलता है जो बदलता है वह हमारा स्वरूप नहीं है इसलिए शुखदेव जी ने राजा परीक्षित् को कहा-

त्वं तु राजन् मरिष्येति पशुबुद्धिमियां जहि।

राजन अब तुम यह पशुबुद्धि छोड दो कि मै मरूगा।

अगर स्वयं मर जाय तो दूसरी योनि में कौन जायेग? स्वर्ग नरक में कौन जायेगा? चौरासी लाख योनि में कौन भोगेगा? परन्तु स्वयं कमी मरता नहीं, क्यों कि वह परमात्मा का अंश है-

राम मरे तो मैं मारूॅ नहीं तो मरे बलाय।
अविनाशीका बालका, मरे न मरा जाय।।

जब राम जी नहीं मरते तो मैं क्यों मरू? हम राम जी के अंश है। हमारा विनाश कभी होता ही नहीं। हम कैसे हैं यह तो हम नहीं जानते, पर हम अनेक योनियों में गये, कभी जलचर बने, कभी नभ चर बने, कभी थलचर बने, कभी अण्डज, जरापुज, स्वेदज अथवा उम्दिज बने तो शारीर बदल गये, पर हम नहीं बदले। वे शरीर तो नहीं रहे पर हम रहें।

अतः हमारा स्वरूप हरदम बदलने वाली सत्ता है। जिसका कभी विनाश नहीं होता। यह सत्ता परमात्मा का अंश है। समुद्र से जल उठता है तो बादल बनता है बादल बनकर बरसता है। जानकार लोग बता देते हैं कि अमुख जगह से बादल उठा है तो वह अमुख जगह बरसेगा। वर्षा का जल नाले मे जाता है, नाला नदी में जाता हैं नदी समुद्र में जाती है इसका तात्पर्य है कि समुद्र से उठने के बाद जल कहीं भी ठहरता नहीं चलता ही रहता है अन्त में वह समुद्र में मिल जाता है तब उसको शान्ती मिलती है। ऐसे ही परमात्मा का अंश जब तक परमात्मा को प्राप्त नहीं हो जाता तब तक इसकी मुसाफिरी चलती रहती है। परमात्मा से मिलने पर ही इसको शान्ती मिलती है जैसे शरीर पृथ्वी का अंश है जब तक यह पृथ्वी में मिल नहीं जाता तब तक यह चलता फिरता रहता है। अन्त में मर कर यह मिटटी में मिल जाता है। यह पृथ्वी में पैदा होता है पृथ्वी में ही रहता है और पृथ्वी में ही लीन हो जाता है। यह पृथ्वी को छोड कर कही नहीं जा सकता। इसी तरह इस जीव को जब तक परमात्मा की प्राप्ति नहीं होती, तब तक इसकी यात्रा चलती ही रहेगी यह जन्मता मरता ही रहेगा दुःख पाता ही रहेगा-

'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि
जननीजठरे शयनम्।

इसको कही शान्ति नहीं मिलेगी। इसलिए मनुष्य को अपनी जो असली जिज्ञासा और लालसा है उसको जाग्रत करना चाहिए। मनुष्य शरीर में आकर भौग और संग्रह में लग गये तो लाभ कुछ भी नहीं व वहीं के वहीं रहे कोल्हु को बैल उम्र भर चलता है पर वही का वहीं रहता है। ऐसे ही बार बार जन्म लेते रहते हैं। और मरते भी रहते हैं। तो वहीं के वहीं रहे कुछ फायदा नहीं हुआ फायदा तभी होगा जब हमारा भटकना मिट जायेगा इसलिए विचार करना चाहिए कि हम किसके अंश हैं हम जिसके अंश हैं उस को प्राप्त करने पर ही हमारा भटकना मिटेगा। मनुष्य शरीर मिल गया तो परमात्मा कि प्राप्ति का अपना कल्याण करने का अधिकार मिल गया। कल्याण की सच्ची लालसावान साधक विना कल्याण हुए टिक नही सकेगा। गुरू मिल गया पर कल्याण नहीं हुआ। तो वहां नहीं मिटेगा साधु बनेगा तो वहां नहीं टिकेगा। गृहस्थ बनेगा तो वहां नहीं किसी संप्रदाय में गया तो वहां नहीं टिकेगा। भुखे आदमी को जब तक अन्न नहीं मिलेगा तब तक वह कैसे टिकेगा? जिसके कल्याण की अभीलाशा है वह कही भी ठहरेगा नहीं ठहरना उसके हाथ की बात नहीं है जहां उसकी लालसा पुरी होगी। वहीं ठहरेगा।

सत्संग बडे भाग्य से मिलता है- बडे भाग पाइब सतसंगा परन्तु जिस ग्रन्थ में भाग्य की बात लिखी है उस ग्रन्थ में यह लिखा है-

जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि
मिलहि न कहुं संदेहू।।

सच्ची लालसा वाले को सच्चा संत्सग अवश्य मिलेगा। जिसके भीतर कल्याण कि सच्ची लालसा है उसको कल्याण का मौका मिलेगा। इसमें कोई सन्देश नहीं है इस भाग्य का काम है ही नहीं संसारीक धन की प्राप्ति के लिए तीन बातों को होना जुरूरी है धन की इच्छा हो उसके लिए उद्योग किया जाय और भाग्य साथ दे परन्तु परमात्मा इच्छा मात्र से मिलते हैं कारण कि मनुष्य शरीर मिला ही परमात्मा की प्राप्ति के लिए है। अगर परमात्मा नहीं मिले तो मनुष्य जीवन सार्थक ही क्या हुआ इसलिए संशारीर कामनाओं का त्याग करके केवल स्वरूप की जिज्ञासा अथवा परमात्मा की लालसा जाग्रत करो इस में मनुष्य जन्म की सार्थकता हैं।जब तक कामना योग संग्रह कि इच्छा रहती है तब तक जीव संसारी रहता है कामना मिटने पर जब जिज्ञासा पूर्ण हो जाती है। तब जीव को अपने अन्य स्वरूप में स्थित हो जाती है। फिर वह स्वरूप जिसका अंश है उस के प्रेम की लालसा जाग्रित हो जाती है स्यवं व्यक्त होते हुए भी ज्ञान में केवल अद्वैत रहता है और भक्ति में कमी द्वैव होता है कमी अद्वैव होता है। भक्ति में भक्त अपने तरफ देखता है तो द्वैव होता है और भगवान की तरफ देखता है अर्थात अपने तरफ देखने से मैं भगवान का हु तथा भगवान मेरे हैं यह अनुभव होता है। और भगवान की तरफ देखने से सब कुछ केवल भगवान ही है। यह अनुभव होता है। इस प्रकार द्वैत और अद्वैत दोनों होने से प्रेम प्रतिक्षण वर्धमान होता है।

टूटा हुआ रिश्ता जुड़ता है पर धीरे-धीरे

सुषमा त्रिपाठी

सामाजिक बदलाव के रिश्तो का जोड़ना जितना मुश्किल होता है उन्हें सहेजना उससे भी ज्यादा कठिन होता है इसके विपरीत तोड़ने के लिए तो एक झटका है काफी है यह झटका कुछ भी हो सकता है, जैसे कोई कड़वी बात किसी मामले पर किसी की उपेक्षा कोई भी मामूली गलती गलतफहमियां या कुछ और भी मुश्किल तो यह है कि ऐसा जब भी होता है, तो इसका पहले से कोई एहसास भी नहीं होता और पता भी तब चलता है जब घटना घट चुकी होती है अगर समय से पता चल जाए कि जो हम कहने जा रहे वह हमारे संबंधों पर गहरा असर डालेगा तो अधिकतर संबंध बिगड़ने ही ना पाए।

कई बार तो ऐसा भी होता है कि गलती के बाद तुरंत एहसास हो जाता है। ऐसी स्थिति में समझदार लोग बात को संभालने की कोशिश भी करते हैं और कई बार बात बन भी जाती है परंतु कई बार तो यह कोशिश बेकार भी हो जाती है।

अक्सर देखा जाता है कि ऐसे रास्तों में जुड़ने के बाद भी कुछ कसक सी रह जाती है क्योंकि आधुनिक मनोविज्ञान का मानना है कि यह मुश्किल ही है। असंभव नहीं अगर इस टाइम में अभी दरार की वजह को समझते हुए ठीक प्रकार से प्रयास किया जाए तो उस कसक काम इतना भी आसान और नहीं है इसके पहले ही टूटे हुए रिश्ते को नए तरीके से जोड़ने की कोशिश शुरू की जाए सबसे जरूरी है कि उसका कारण तलाश लिया जाए।

जारी रहे संवाद - बेशक कई बार गलती हमारी नहीं होती दूसरा पक्ष ही गलत होता है और यह बात जाहिर होती है यह एक बात बार-बार की होती है, तो क्षमा कर देना बेहतर होता है ध्यान रहे ऐसी स्थिति में संवाद नहीं टूटना चाहिए, क्योंकि कोई भी रिश्ते को बनाए रखने के लिए सबसे जरूरी होता है आपसे बातचीत जिस जगह पर बातचीत नहीं होती। उस जगह पर बने हुए रिश्ते भी बेजान होने लगते हैं और टूटे हुए रिश्ते फिर जोड़ने में तो सबसे महत्वपूर्ण भूमिका बातचीत से ही संभव हो सकती है इसलिए बातचीत को हर हाल में जारी रखना चाहिए।

दूसरों को स्वीकार करें - दूसरों में ही गलती ढूंढने का एक कारण यह भी है कि अधिकतर लोग दूसरों के व्यक्तित्व को स्वीकार नहीं कर पाते हर व्यक्ति दूसरों से अपनी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की उम्मीद करता है लेकिन दुनिया में सब कुछ किसी के अपेक्षा के अनुरूप ही हो लेकिन यह ऐसा संभव नहीं हो सकता है। हमें यह बात समझनी चाहिए कि हर किसी का अपना व्यक्तित्व है किसी को अपने जैसा बनने की अपेक्षा या उसे अपने जैसा डालने की कोशिश खतरनाक हो सकती है बेहतर होगा कि जो व्यक्ति जैसा है वैसा ही उसे स्वीकार करना चाहिए।

व्यक्ति का सम्मान - रिश्ता कोई भी हो टूटने का कारण अधिकतर अहम का टकराव होता है क्या आपने कभी सोचा है

कि यह होता ही क्यों है इसकी एक वजह तो यही होती है कि हम दूसरे के व्यक्तित्व को कहे वैसे ही स्वीकार नहीं कर पाते हैं जैसा वह दूसरी बात यह है कि किसी पर अपने व्यक्तित्व और अपनी अपेक्षाओं के थोपने की कोशिश करने लगते हैं इसीलिए हमें अपने व्यवहार से उसे भरोसा दिलाना चाहिए कि हम में से जो भी गलती हुई होगी हम भविष्य में कोई ऐसी गलती नहीं करेंगे और हम मिलजुल रहेंग इस प्रकार संबंधित टूटे टूटे बस जाते हैं और हम ईमानदारी से अपना संबंध जीवन भर निभा पाते हैं।

स्वतंत्रता का सम्मान - शादी ही नहीं बल्कि हर रिश्ते में हमें एक दूसरे की निजी सुंदरता का सम्मान करना चाहिए पति पत्नी हमेशा एक ही छत के नीचे रहते हैं इसलिए दांपत्य जीवन को तनाव मुक्त बनाए रखने के लिए अपने पार्टनर की पसंद नापसंद शौक और उसकी निजता का सम्मान बेहतर जरूरी है जहां तक निजी अनुभवों का प्रश्न है तो मेरे पति मुझे पूरा पर्सनल स्पेस देते हैं और पूरा साथ भी दिया और आज जो मैं यह आर्टिकल लिख रही हूं इसमें भी उन्हीं का सहयोग है जो हमें प्राप्त हुआ है गुरु जी का सानिध्य और सहयोग के कारण आज पिछले 13 वर्ष से लगातार स्वतंत्र रूप से लेख लिख रही हूं।

देखें अपनी तरफ - संबंधों की बात करें तो यह जरूरी नहीं कि संबंध टूटने के मामले में गलती हर बार दूसरों की ही हो पर ऐसे मामले में सबसे पहले अपनी तरफ ही देखना होता है और जरूरी भी होता है क्योंकि अधिकतर तो यह होता है कि हम स्थितियों को बिना सोचे समझे ही दूसरे पक्ष को जिम्मेदार मान बैठते हैं बल्कि गौर करना चाहिए कि अगले व्यक्ति ने जो भी किया है उस पर हमारी क्या प्रतिक्रिया थी हमने जो किया क्या वह सही था ऐसा तो हो नहीं सकता कि हमारी तरफ से ही गलती थी मैंने उसे जबरदस्ती घसीटा यह सब बातें सोच समझकर ही सही कदम उठाना चाहिए।

समझे यह संकेत - जिस प्रकार कोई भी रिश्ता अचानक जुड़ता नहीं ऐसे ही एकाएक टूटता भी नहीं है संबंधों को टूटने में समय लगता है और इसके पहले कि टूट ही जाए संकेत भी देता है इसका संकेत अगर आपको साथी जिससे आपकी खूब बातचीत होती रहती है जो यह अचानक आपके साथ होते हुए भी चुप्पी साध लें तो फिर यह समझना चाहिए कि स्थितियां सामान्य नहीं है इसी प्रकार से बहुत कुछ संगीत के माध्यम से भी संबंध समझा जा सकता है।

आभार माने - जिस प्रकार अपेक्षाएं स्वभाविक है वैसे ही उनके पूरे होने पर आभार भी मानना चाहिए कई बार तो रिश्ते इसीलिए टूट जाते हैं कि हम अपना काम हो जाने के बाद संबंधित व्यक्ति को धन्यवाद तक भी नहीं बोलते हां अगर कोई कसर रह गई हो तो शिकायत जरूर कर लेते हैं आजकल तो लोग कोई भी भूल जाते हैं कम से कम भगवान को तो आभार जता ही देना चाहिए क्योंकि भगवान ने जन्म दिया है तो खाना जरूर देगा इसका तो आभार प्रकट करना चाहिए इसी प्रकार रिश्ते को सहित सके इसलिए मानसिकता से उबर ना जरूरी है जो इंसान जिस जगह काम आए उसे तुरंत वहीं पर आभार प्रकट कर देना चाहिए इससे दोनों तरफ रिश्तो में मजबूती और ठहराव और दोनों तरफ जीवन पर्यंत बातचीत चलती रहती है कुल मिलाकर मनुष्य नातेदार सभी मनुष्य को आभार जताना कभी भूलना नहीं चाहिए।

रिश्तो को कैसे निभाए - पत्ते का मामला बहुत ही नाजुक होता है मामूली सी बात भी किसी के दिल को ठेस पहुंचा सकती है भले ही उसमें कुछ गलत ना हो पर संबंध टूटने का कारण बन सकती है हालांकि रिश्ते केवल टूटते ही नहीं है टूटे हुए रिश्ते जुड़ भी जाते हैं रिश्ते चलाने के लिए ईमानदारी कोशिश और धैर्य होना स्वाभाविक है लेकिन हमें भी आपसी समझ होना बहुत जरूरी।

प्रशंसा है जरूरी - रिश्ते तो पौधों की तरह होते हैं फूल फल दे रहे हैं इसके लिए सूचना आवश्यक है और इसी प्रकार रिश्तो की सिंचाई के लिए अच्छे कार्यों की प्रशंसा से बेहतर जल नहीं हो सकता जब कोई व्यक्ति अच्छा कार्य करता है तो वह प्रशंसा चाहता है जबकि हमेशा इसका उल्टा ही होता है जैसे किसी से कोई गलती हो जाने पर हम उसे 10 बातें सुना देते हैं लेकिन अच्छे कामों पर उसका कर्तव्य है कह कर टाल देते हैं परंतु यह बातों से व्यक्ति को कुंठित करती हैं और जब किसी भी गलती पर उसकी आलोचना की जाती है तो उसका गुस्सा फूट पड़ना स्वाभाविक है परंतु अगर किसी के अच्छे काम की सराहना किया जाए तो फिर गलती करने पर तो के जाने से बुरा नहीं लगता अच्छे काम की प्रशंसा उसे और अच्छे काम के लिए प्रेरित भी करती है अगर किसी की प्रशंसा करना मुश्किल लगता है तो वसुधा यह उसके व्यक्तित्व की कमजोरी है इससे उबरने की कोशिश करनी चाहिए।

दांपत्य का मामला बहुत ही नाजुक होता है मामूली सी बात भी किसी के दिल को ठेस पहुंचा सकती हैं भले उसने कुछ गलत ना किया हालांकि रिश्ते के टूटते ही नहीं टूटे हुए रिश्ते जुड़ जाता है इसके लिए चाहिए मंदार कोशिश और धैर्य कुल मिलाकर बदलते हुए लोग चाहे जितनी गलती करें सिर्फ उनकी तारीफ होनी चाहिए गलती बताने से तो आप को खा जाएंगे जबकि ऐसा नहीं होना चाहिए सभी को आपसी समझ और सूझबूझ से चलना चाहिए।

तुम युग पुरुष हो

तुम युग पुरुष हो, हां तुम्ही हो।
खुद को तुम पहचान लो, हां तुम्ही हो।।
तुम राम हो तुम कृष्ण हो तुम बुद्ध नानक हो तुम्ही हो।
तुम अलौकिक शक्ति से भरपूर पूरित शक्ति हो।
हो तुम्ही अंतरजागत के एक निश्चित अटल पौरुष।
हो तुम ही बहती हवा में, सिंधु की गहराइयां हो,हां तुम ही हो।।
यह जगत दुनिया ये सारी सृष्टि के नायक तुम ही हो।
इस सृष्टि का हर गुण तुम ही में गंध रश्मि सब तुम ही में,
हो रही हर हरकतें सारी क्रिया परिणाम तुम हो। हां तुम ही हो।।
दस शीश तुम हो कंस तुम हो देव दानव मनुज तुम हो।
है हर कला तुझ में समाहित तू ही श्रष्टा और दृष्टा,,
तुम युधिष्ठिर तुम दुशासन कर्ण दुर्योधन तुम ही हो। हां तुम ही हो।।
थे कभी यह पात्र सारे पर विचारों से तुम ही हो।
तुम ही पूजित तुम कलंकित सब तुम्हारे कर्म है।
निज कर्म के परिणाम पोषक भोग करते बस तुम ही हो। हां तुम ही हो।।
देव दानव सब तुम्हारे भाव की परिकल्पना है,
चाह लो तुम देव हो तुम चाह लो दानव तुम ही हो,
हर गुण तुम्हारे खुद सभी गुण के स्वयं धारक तुम ही हो। हां तुम ही हो।।
कल तुम्हारा था नहीं ना कल तुम्हारा फिर रहेगा,
आज हो तुम आज अपना आज कुछ ऐसा सवारों,
कल कहे दुनिया तुम्हें तुम युगपुरुष हो।हां तुम ही हो।।

(कामेश)

भारत - दर्शन

धरती पर है स्वर्ग सरीखा,
आओ! करें हम भारत - दर्शन ।
न्यारी संस्कृति में हर प्राणी, बदल रहा है निज परिवेश
भिन्न - भिन्न लोगों से मिलकर, देखे नित नव भारत देश,
पावन तीर्थाटन के द्वारा, मिलता हमको नूतन ज्ञान
अनुपम जीवन दिखे निकट से, अच्छी हो जाती पहिचान

माता भूमि हमें दुलराती
करती सब पर स्नेह सुवर्षण।
चारों धामों की यात्रा कर लें , मिल जाएगा पुण्य अगाध
आध्यात्मिक मान्यताओं से, जीवन की गति रहे अबाध
व्यवधानों में जीत - मुक्ति से, कदम बढ़ें उन्नति की ओर
पग - पग पर कष्टों को सहकर, नापें हँसकर चारों छोर

संस्कृति के प्रति दृढ़निष्ठा से,
करें सहर्ष सुहृदय अर्पण।
देवी - देवों के जन्मस्थल, दिखेंगे लाकर शुचिता भाव
पूर्वजों की तपस्थली भी, मन पर डाले धवल प्रभाव
सांस्कृतिक मूल्यों पर बल दें, परंपराएँ छुएँ शिखर
मिल जाएगा लाभ अपरिमित, सोच अनूठा जाए निखर

आस्था अनुदिन जमे सुदृढ़तर,
बढ़े तीर्थ के प्रति आकर्षण।
दुर्गम यात्रा करने जाते, आस्थावान नहीं रुकते
ऊँचे - ऊँचे पर्वत चढ़कर, बाधा सम्मुख कब झुकते
यात्री गंदे करें न स्थल, समुचित रखें साफ-सफाई
भीड़भाड़ से बचना होगा, सतर्कता में भली - भलाई

कलुष - कुटिलता अवगुण छोड़ें
स्वच्छ रखें हम मन का दर्पण।
आओ! करें हम भारत - दर्शन ।

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र

माँ सदा पास रही

दुध पीते-पीते तेरी गोद में
जाने कब मैं चलने लगा,
तेरी सुखद छाँव तले माँ
निश्चिंत मैं पलने लगा ।
कभी गर्मी, बरसात या फिर
कड़ी सर्दी का होने नहीं दिया बोध,
हर मुसीबत, हर विपदा में
माँ ने किया उनका प्रतिरोध ।
अपने बदन का ख्याल न कर
दिया हमको नया परिधान ,
आँखों में तूने छुपाया आँसू
यह कैसा है विधि का विधान ।
तू भरती रही रोज पेट हमारा
जाने कितने रहकर भूखी ,
अपने सुखों को त्याग दी सदा
हमें होने न दिया कभी दुःखी ।
राह दिखलाती रही तूने हमें
हर दिन ,हर पल,हर घड़ी ,
हर कठिनाई , हर मुश्किल में
माँ तू सदा हमारे पास रही खड़ी ।
तू महान नहीं महानतम है माँ
तेरा दुनिया में कोई मेल नहीं ,
पिता होना तो आसान है
पर माँ होना कोई खेल नहीं ।

सुब्रत डे

इस विषमता से भरे

इस विषमता से भरे
संसार में कैसे जियोगे।
छद्म छल के अनवरत
व्यापार में कैसे जियोगे।।

विश्व के इस रूप को
स्वीकार ही करना पड़ेगा।
हर समय अस्तित्व के
इनकार में कैसे जियोगे।।

चित्त में सबके लिए यदि
सिर्फ कुत्साभाव होगा।
तुच्छताओं से भरी
तकरार में कैसे जियोगे।।

जिंदगी की वास्तविक
संपत्ति को जाना नही तो।
वस्तुओं से ही भरे
बाजार में कैसे जियोगे।।

आंतरिक आह्लाद को
जाने बिना जीने चले तो।
कीमती यह जिंदगी
बेकार में कैसे जियोगे।।

जीतने की लालसा में
हो गए पागल अगर तो।
हार जाओगे अगर तो
हार में कैसे जियोगे।।

दर्प से बीमार मन की
हेतुता से ही सुनिश्चित।
हर तरफ होते हुए
धिक्कार में कैसे जियोगे।।

ज्ञान से द्योतित हृदय के
कोण सब होंगे नहीं तो।
मोहभावी कष्ट के
आसार में कैसे जियोगे।।

वेद प्रकाश भट्ट 'सत्यकाम'

स्वक्षता ज्योति जलाते चलो

स्वक्षता ज्योति जलाते चलो,
फैले हुए कूड़े उठाते चलो।

घर में कूड़ा बाहर कूड़ा,
मन के भीतर जमें ले मूरा।
मन की मैल छुड़ाते चलो,
फैले हुए कूड़े उठाते चलो।

कूड़ा तेरा कूड़ा मेरा,
लगता जाये ढेरा-ढेरा।
सब शिक़वे दफनाते चलो,
फैले हुए कूड़े उठाते चलो।

स्वस्थ तन औ सुंदर मन हो,
सुंदर अपना वातावरण हो।
बात यही तुम बताते चलो,
फैले हुए कूड़े उठाते चलो।

अवसर का न देखो अवसर ,
साफ करो तुम रहो जहाँ पर।
खुद समझो समझाते चलो,
फैले हुए कूड़े उठाते चलो।

टिकेश्वर प्रसाद जंघेल

एलोवेरा

प्रकृतिमेल डेस्क

प्रकृति की एक अद्भुत देन है एलोवेरा, जिसे घृतकुमारी जैसे अन्य नामों से भी जाना जाता है। एलोवेरा अपने आप मे ही गुणों का खजाना है। इसके औषधिये गुणों के अपार फायदे है। प्रकृति के इस अजूबे से आप अपनी बागवानी की रौनक बढ़ा सकते है। इसकी कई किस्में है जो कि अपने रंग रूप से आपके घर की शान बढ़ा सकते है। वैसे तो एलोवेरा के औषधिये गुणों पर शोध चल रहे है फिर भी इसका भरपूर इस्तेमाल त्वचा संबंधी चीजों में किया जाता है।

एलोवेरा का इस्तेमाल त्वचा में नमी बनाये रखता है, जिससे रूखी बेजान सी त्वचा में रौनक आती है। एलोवेरा के गुण त्वचा में कसाव लाते है जिससे त्वचा जवान दिखती है। इसमें त्वचा में जलन कम करने के गुण होते है जो कि त्वचा के जिए राहत की बात है और गर्मी में त्वचा की रक्षा के काम आता है। एलोवेरा के तत्व किसी घाव को जल्दी भर देते है। जिस कारण से इसका उपयोग ऐसी क्रीमों में किया जाता है जो कि घाव भरने के काम आती है। एलोवेरा में विटामिन्स ए, सी, ई, मिनरल्स जिंक, कॉपर, कैल्शियम आदि पाये जाते है। अपने गुणों के चलते देखा जा रहा है कि एलोवेरा कसर का राकथाम म, मधुमह का कंट्रोल करने के साथ ही शरीर को विषैले पदार्थो से मुक्त रखने में कितना उपयोगी हो सकता है। मधुमेह को नियंत्रित रखने के लिए इसके जूस का इस्तेमाल किया जाता है। एलोवेरा प्लेटलेट्स को बढ़ाने के काम आता है। डेंगू के मरीजों को इसके सेवन के लिए कहा जाता है। एलोवेरा जूस का सेवन करने वालों ने बताया है कि इससे उन्हें पेट की दिक्कतों में भी राहत मिली है। जिन्हें गैस की समस्या थी उन्हें भी राहत मिली। कब्ज की परेशानी में भी एलोवेरा कारगर है। आज प्रदूषण की वजह से लोगों में गंजापन जैसी समस्या बहुत देखने को मिलती है। बालों की सेहत के लिए भी एलोवेरा बहुत फायदेमंद है। इसका इस्तेमाल बाला म नमा बनाय रखता ह। बाला को मजबूती देता है और झड़ने से बचाता है। पुरूषों के लिए भी यह काफी उपयोगी है। दाड़ी बनाने के लिए शेविंग क्रीम के स्थान पर यदि एलोवेरा का इस्तेमाल करे तो त्वचा लम्बे समय तक सही रहती है। इससे क्रीम में इस्तेमाल किये जाने वाले केमिकल से भी बचा जा सकता है। आफ्टर शेव लोशन भी त्वचा को काफी नुकसान पहुँचाते है। इनकी जगह आप एलोवेरा का इस्तेमाल कर सकते है। तब क्यू न एलोवेरा को घर की शान बनाया जाये। जब यह बागवानी में भी सुन्दरता लाता है और हमें भी सेहतमंद रखता है।

प्रकृति के रंग

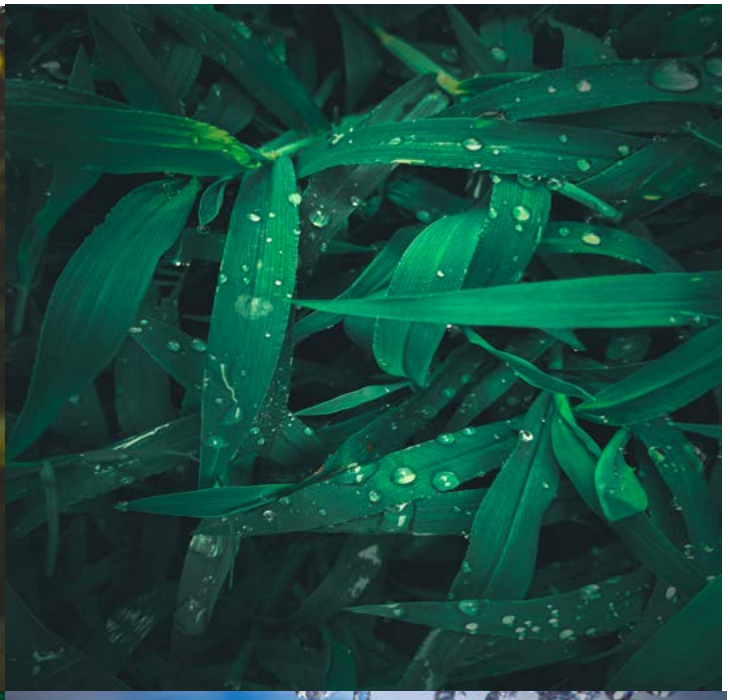

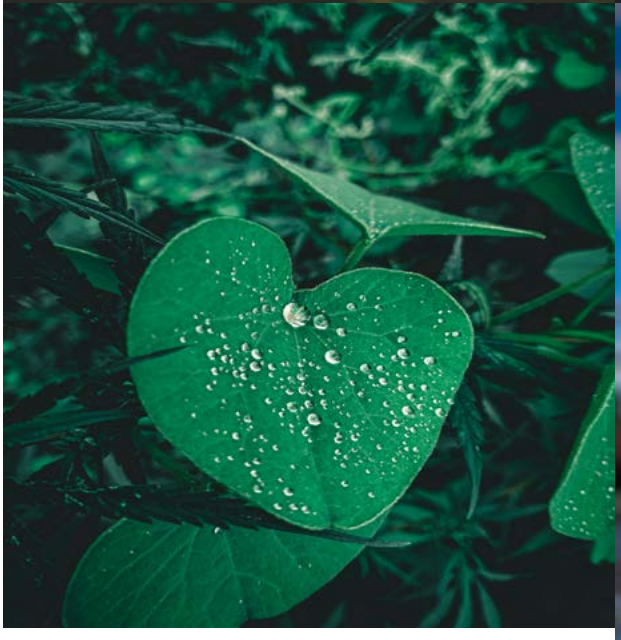

नामः सृजन

पता : नौलखा, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश

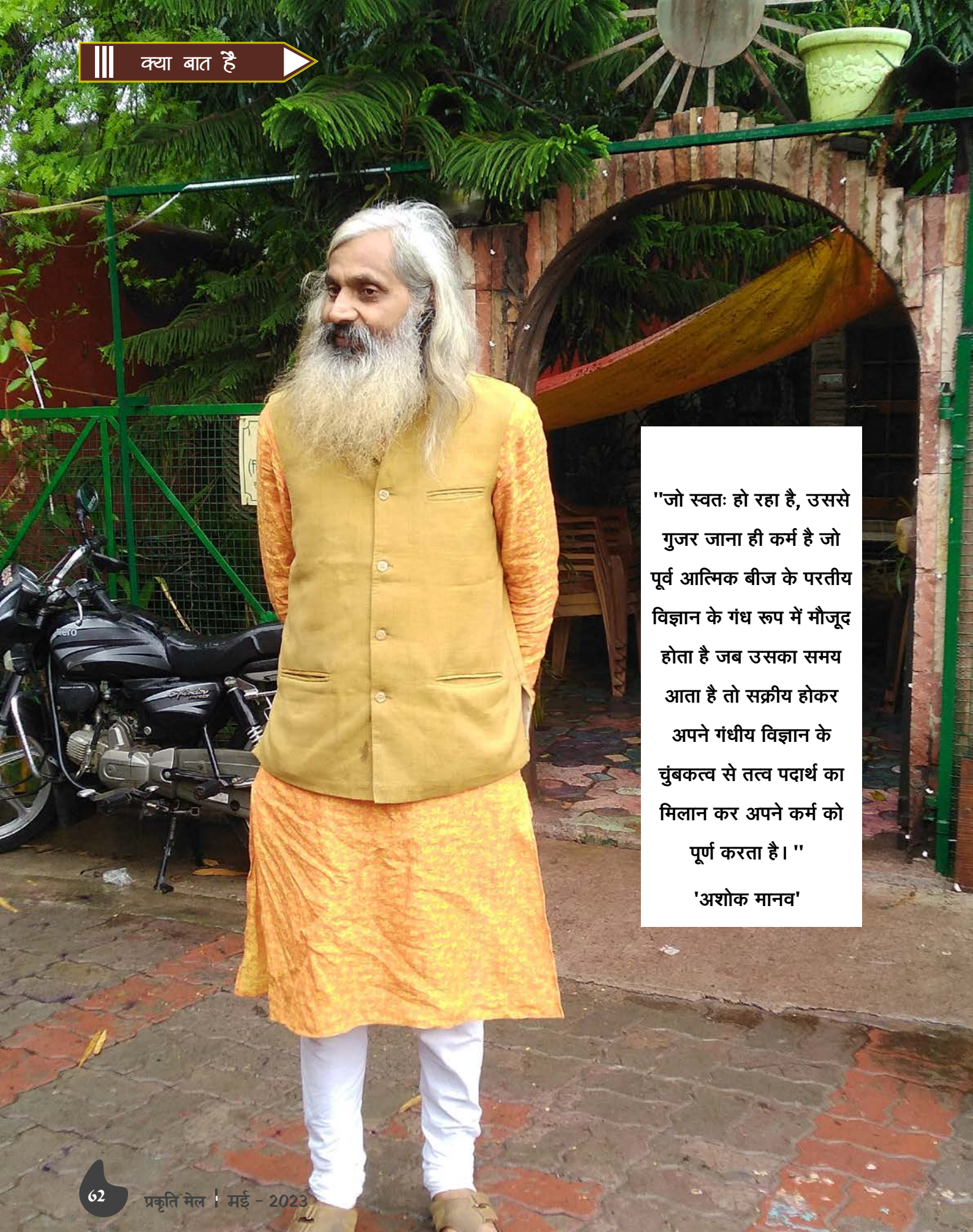

"जो स्वतः हो रहा है, उससे गुजर जाना ही कर्म है जो पूर्व आत्मिक बीज के परतीय विज्ञान के गंध रूप में मौजूद होता है जब उसका समय आता है तो सक्रीय होकर अपने गंधीय विज्ञान के चुंबकत्व से तत्व पदार्थ का मिलान कर अपने कर्म को पूर्ण करता है। "

'अशोक मानव'

स्थापित 1948 74 वर्षों का विश्वास

लाला जुगल किशोर गोटे वाले

परिधान वही जो
व्यक्तित्व को निखार दे

55 अमीनाबाद पार्क, लखनऊ। सम्पर्क: 9935329775

दुर्गा आटो सेल्स

सेवा ऐसी जो पसीना न बहने दें

Aurhorised Dealer for Mahindra Tractors, Farm Equi pments & Spare Parts

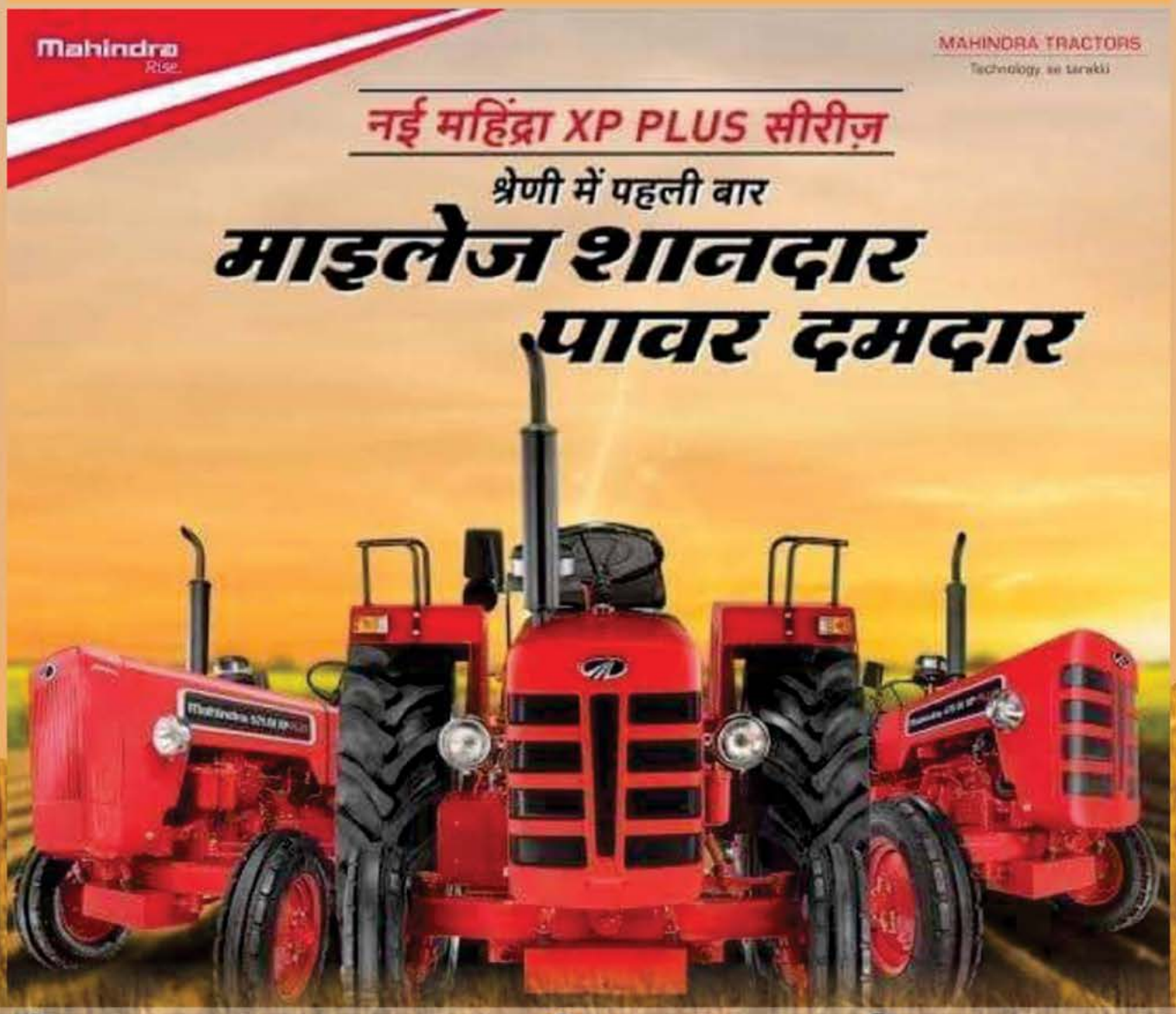

durgaautosale2000@gmail.com 9919528830 0545-4242216

इलाहाबाद-जौनपुर रोड, मद्दली शहर, जौनपुर, उ. प्र. ।